सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

₹40/-

कान्यकुब्ज मंच

इस अंक के अतिथि संपादक: डॉ. जीवन शुक्ल

वर्ष 32, अंक 4, अप्रैल-जून 2019

स्मृति - विशेष

संस्थापक संपादक: कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

600 से अधिक विवाह योग्य युवक-युवतियों का विवरण

Dikshit Diagnostic Centre

CT SCAN	COLOUR DOPPLER	ULTRASONOGRAPHY	ENDOSCOPY	DIGITAL X-RAY
PATHOLOGY LAB	HORMONE LAB	MOLECULAR BIOLOGY LAB	BMO	2-D ECHOCARDIOGRAPHY
TMT	ECG	OPG	PFT	EEG

DR ALOK DIKSHIT
MBBS, MD, FRHS
Pathologist

DR ARCHANA DIKSHIT
MBBS, MD, DMRE
Radiologist-Ultrasonologist

26.888038N, 80.965751E
http://www.visitddc.com
8/5, Vikas Nagar
Lucknow-226 022
(0522) 230036, 4043111, 2335673
Home Collection: 94515-12756, 99354-81325, 9815059779
LINK US ON

Timings: Mon-Sat : 8.30 AM to 8.30 PM **Sun: 8.30 AM to 2.30 PM** **Ambulance Available**

भारतमित्र
BHARATMITRA
Premier Hindi Daily

L.S. Publication Pvt. Ltd.
32, Metcalfe Street, Kolkata-700013
Tel.: 22361572, 2119429, Mob.: 9830012330
Telefax: 033-22151533
Email: bharatmitra1@yahoo.com

tewari brothers
Desi Ghee Sweets & Namkeens

862, Chandni Chowk, Delhi-110006
Tel.: 23918326, 23927690, 23956846
Fax : +91-11-23947743

73, M.M. Market, Connaught Circus, New Delhi-110001
Tel.: 23413313, 23411764, 23411765

Branches :
• KOLKATA • MUMBAI • DELHI • BANGALORE • HYDERABAD • KANPUR
E-mail : ravitewari6@gmail.com visit us at : www.tewaribrother.com

वर्ष 32, अंक 4, अप्रैल-जून 2019 ₹40/-

'आ नो भद्रा क्रत्वो यन्तु विश्वतः' ऋग्वेद 1-89-1

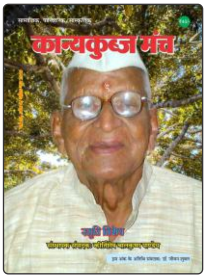

इस अंक के अतिथि संपादक
डॉ. जीवन शुक्ल (कन्नौज)

प्रबंध संपादक
विष्णु कुमार पाण्डेय
3/19 सेक्टर-जे, जानकीपुरम लखनऊ-21
9450362385

संपादक
आशुतोष पाण्डेय
264 सेक्टर 3, फरीदाबाद 121004 हरियाणा
9312020932

प्रतिनिधि
रविकांत तिवारी (97-176-76003)
तिवारी ब्रदर्स, चांदनी चौक दिल्ली-6
प्रताप शुक्ल (लखनऊ) 9335912667
अजय (कानपुर) 8953182491
संदीप (कानपुर) 7054098204
मनीषा (नोएडा) 9310111069

विधि सलाहकार
सांकृत अजीत शुक्ल एडवोकेट
9415474584

संरक्षक......................................	रूपये11000.00
विशिष्ट......................................	रूपये 5100.00
आजीवन.....................................	रूपये 2100.00
पत्रिका प्रसार सहयोग (5 वर्ष हेतु)......	रूपये 500.00

पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है स्पीड पोस्ट/ कोरियर से पत्रिका मंगाने हेतु तथा विदेशों के लिए वास्तविक डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा

पत्रिका में प्रकाशित विचारों से प्रकाशक व संपादक की सहमति आवश्यक नहीं। न्यायायिक मामलों हेतु कानपुर न्यायालय क्षेत्र की मान्य होगा।

सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

कान्यकुब्ज मंच

संस्थापक संपादकः कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

इस अंक में विशेष

संपादकीय	3
अपनी बात	5
मेरी दृष्टि में	6
जानापाव कुटी	7
मातृ दिवस	9
सन्तों की वाणी में योग	10
वट सावित्री	11
संगठन की सार्थकता	12
नेहरू और निराला	13
स्मृति - शेष	15
संस्मरण - डॉ. वरुण तिवारी	17
- डॉ. रमेशमंगल वाजपेयी	18
- प्रमोद नारायण मिश्र	21
- डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी	23
महिला सम्मान	25
परिजनों की स्मृति में	26
श्रद्धा उद्गार	32
पत्रों के आइने में	36
सामाजिक मंच	41
पं. रामेश्वर दयाल दीक्षित	45
वैवाहिक विवरण	47
एवम् अन्य स्थाई स्तम्भ	

पत्रिका मंगाने हेतु तथा समस्त पत्र व्यवहार के लिए
प्रबन्ध संपादक

कान्यकुब्ज मंच कार्यालय

20बी, किदवई नगर, कानपुर-208011
मो. 9450362385 (समयः सायं 7-9 तक)
ईमेलः kkmanch@gmail.com
www.kanyakubjmanch.com

नित्य पढ़ेंः-

दूसरे के छिद्र देखने से पहले अपने छिद्रों को टटोलो। किसी और की बुराई करने से पहले यह देख लो कि हममें तो कोई बुराई नहीं है, यदि हो तो पहले उसे दूर करो। दूसरों की निन्दा करने में जितना समय देते हो उतना समय अपने आत्मोत्कर्ष में लगाओ तब स्वयं इससे सहमत होंगे कि परनिन्दा से बढ़ने वाले द्वेष को त्याग कर परमानन्द प्राप्ति की ओर बढ़ रहे हो।

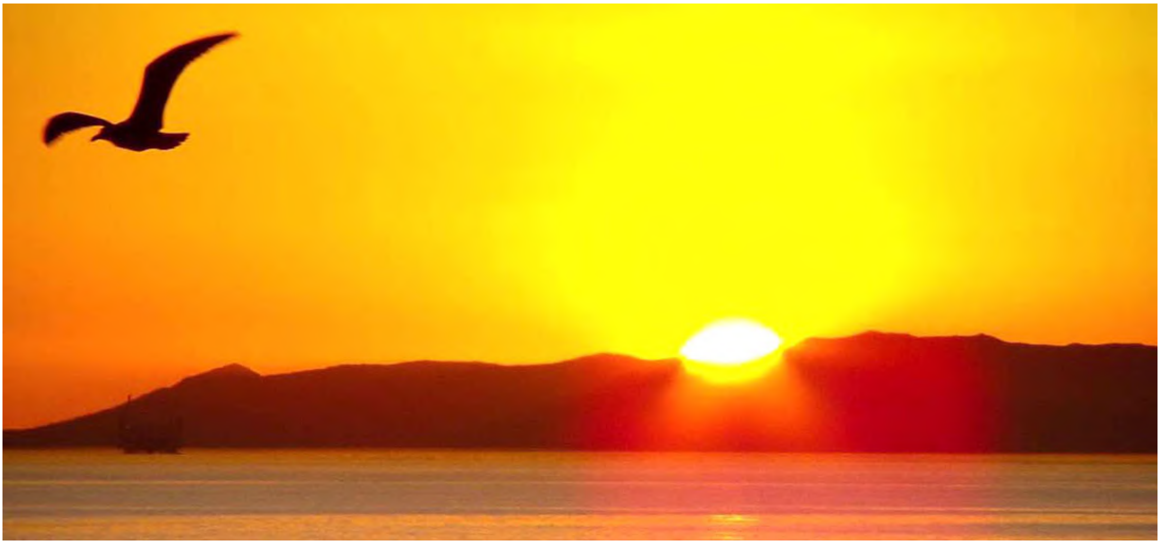

संसार को जीतने की इच्छा करने वाले मनुष्यों! पहले अपने को जीतने की चेष्टा करो। यदि तुम ऐसा कर सके तो एक दिन तुम्हारा विश्व विजेता बनने का स्वप्न पूरा होकर रहेगा। तुम अपने जितेन्द्रिय रूप से संसार के सब प्राणियों को अपने संकेत पर चला सकोगे। संसार का कोई भी जीव तुम्हारा विरोधी नहीं रहेगा।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

शुभकामनाओं सहित

माननीय सरोज मिश्रा

होटल शिवाय

16/97, शिवाय टावर, दि माल, कानपुर
फोनः 0512-2332050-51

सम्पादकीय

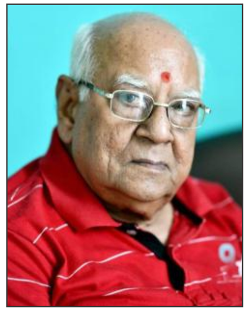

व्यक्ति का जन्म कर्म-भोग तथा कर्मार्जन दोनों के लिए होता है। आत्मा अमर है, यह शास्त्र कहते हैं। व्यक्ति भी अमर होता है यदि उसके कर्म का आयतन, उसका क्षेत्र बड़ा होता है, यह मेरा अनुभव है। कर्म के माध्यम से व्यक्ति की अमरता को निर्धारित उस कर्म की उपादेयता करती है। कर्म शरीर के माध्यम से होते है और शरीर का धारक व्यक्ति होता है। अतः व्यक्ति भी दीर्घकाल तक जीवित रहता है अपने कर्मों की श्रेष्ठता के आधार पर। विश्वपटल पर पौराणिक काल से लेकर आजतक हर क्षेत्र में ऐसे कर्मवीरों की वृहत सूची हमारे सामने है।

सामान्य व्यक्तियों के जीवन में भी अमरत्व के काल का अभ्युदय होता है। जिनके जीवन में यह होता है उन्हें ही शरीर छोड़ने के बाद कीर्तिशेष कहा जाता है। पं. बालकृष्ण पाण्डेय उन्हीं कीर्तिशेषों में से एक हैं। उनका पार्थिव शरीर तो अब हमारे बीच नहीं है, पर उनका कीर्ति-तरु आज भी हमारे बीच है। जन्म लेना, पढ़ना-लिखना, जीविकार्जन करना और कुछ सन्तानों को छोड़कर संसार से विदा हो जाना तो हर प्राणी की जीवन-यात्रा के प्रासंगिक पड़ाव हैं। लेकिन पाण्डेय जी ने इस यात्रा के अतिरिक्त भी कुछ किया, जिससे समाज का भी कुछ लाभ हुआ। आज उसी ऋण को स्मरण करते हुए पूरा समाज उन्हें अपना कहने में गर्व का अनुभव ही नहीं कर रहा है, अपितु उनके कीर्ति की गाथा गाकर अपने को धन्य कर रहा है।

कीर्तिशेष पाण्डेय जी की अन्य कीर्ति गाथाओं का वर्णन तो इस अंक विशेष का उद्देश्य है ही, पर उनके द्वारा स्थापित, लम्बे समय तक सम्पादित 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका ही उनकी कीर्ति का अवशेष-केतु है, जो उनके परिवार के अतिरिक्त हम सब की सहाय शक्ति के आधार पर आज भी पूरे गौरव के साथ फहरा रहा है। समग्र लेखक, पाठक तथा कान्यकुब्ज समाज की ओर से मैं उनके इस कीर्ति-ध्वज को प्रणाम करता हूँ।

मुझे कीर्तिशेष पं. बालकृष्ण पाण्डेय ने पत्रिका के संकल्प काल से जोड़ रखा था। मैं इसके लिए उनके विरोध में भी रहा, पर उनकी संकल्प-दृढ़ता, उनका आक्रोश रहित मृदुल आग्रह मुझे आगे नत करता गया। उन्होंने मुझसे 'खजुहा-विशेषांक' का सम्पादन कराकर यह संकेत देते हुए कि वो मुझे, मेरे गांव को तथा कान्यकुब्ज समाज को यह प्रच्छन्न आश्वासन दिया कि वे षटकुलों के मूल जनपदों का कितना आदर करते हैं। सत्य तो यह है कि लोगों का सहयोग नहीं मिला वरना वो उन गांवों पर 'कान्यकुब्ज मंच' के विशेषांक निकालते जो आज भी षटकुलों की पहचान का केंद्र माने जाते हैं। 'जीवन-स्मृति' स्तम्भ में लिखना शुरू किया उनके आग्रह पर। उसके अंतर्गत 'मनुस्मृति' की व्याख्या करने का सुयोग मिला। कुछ कारणों से वह बीच में ही बन्द करना पड़ा।

आज 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका, सम्भवतः पूरे देश मे, जातीय पत्रिकाओं में अकेली पत्रिका है, जो बुक-स्टालों पर भी बिकती है और खरीद कर पढ़ी जाती है। इसके पीछे कीर्तिशेष पाण्डेय जी का त्याग, तप तथा उनके परिवार का अथक परिश्रम तथा समाज की उदारता की त्रिकुटी का ही सम्बल है।

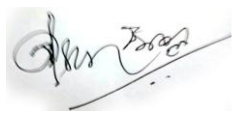

- जीवन शुक्ल, ग्वाल मैदान, कन्नौज

स्मरणीय तिथियां

6 अप्रैल 19: शनिवारः नवरात्रि आरम्भ (परिधावी नाम संवतसर)
7 अप्रैल 19: रविवारः विश्व स्वास्थ्य दिवस
8 अप्रैल 19: सोमवारः मंगल पाण्डेय शहीदी दिवस
13 अप्रैल 19: शनिवारः दुर्गाष्टमी
14 अप्रैल 19: रविवारः रामनवमी/ दुर्गानवमी
19 अप्रैल 19: शुक्र वारः चैत्र पूर्णिमा
22 अप्रैल 19: सोमवारः विश्व पृथ्वी दिवस
1 मई 19: बुधवारः विश्व श्रमिक दिवस
3 मई 19: शुक्रवारः सौरऊर्जा/ प्रेस स्वतंत्रता दिवस
7 मई 19: मंगलवारः परशुराम जयन्ती (अक्षयतृतीया)
9 मई 19: गुरुवारः शंकराचार्य जयंती/ सूरदास जयंती
11 मई 19: शनिवारः गंगा सप्तमी
12 मई 19: रविवारः विश्व मातृ दिवस (मदर्स डे)
20 मई 19: सोमवारः आदि पत्रकार महर्षि नारद जयंती
30 मई 19: गुरुवारः हिन्दी पत्रकारिता दिवस (महावीरप्रसाद द्विवेदी जयंती)
31 मई 19: शुक्रवारः विश्व तम्बाकू निषेध दिवस
3 जून 19: वट सावित्री व्रत, सोमवती अमावस्या
5 जून 19: बुधवारः विश्व पर्यावरण दिवस
12 जून 19: बुधवारः गंगा दशहरा,बालश्रम निषेध दिवस
13 जून 19: गुरुवारः निर्जला एकादशी व्रत
16 जून 19: रविवारः फादर्स डे (पितृ दिवस)
17 जून 19: सोमवारः सन्त कबीरदास जयंती
21 जून 19: शुक्रवारः विश्व योग दिवस

वेद कथन

'अनुवतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।'
पिता के अनुकूल धारण करने वाला पुत्र हो और वह माता के समान मन वाला हो। (अथर्वः 3/30/2)

'जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिताम्।'
स्त्री पति के साथ मधुर और शांत भाषण करे। (अथर्वः 3/30/2)

'मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसार मुत ऽस्वसा।'
भाई - भाई से द्वेष न करे, बहन - बहन से द्वेष न करे। (अथर्वः 3/30/3)

'समयञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।'
मिलजुल कर एक व्रत पालन करने वाले होकर कल्याण करने वाला भाषण करो। (अथर्व : 3/30/3)

'अ - दार - सृद भवतु।'
आपस में फूट करने वाला कोई न हो। (अथर्व :1/20/1)

'अहं गृमणामि मनसा मनांसि।'
मैं अपने मन से तुम्हारे मनों को लेता हूँ। (अथर्व :3/8/6)

'मम चिन्त मनु चिन्तेभिरेत।'
मेरे चित्त के साथ अपने चित्त को चलाओ। (अथर्व : 3/8/6)

'शुनं नो अस्तु चरित मुत्थितम् च।'
हमारा चालचलन और उत्थान हमें लाभदायी होवे। (अथर्व : 3/15/4)

'स्वस्ति पन्था मनु चरेम।'
हम कल्याण मार्ग के पथिक बनें।

उच्च कोटि के किराना, मेवा, खड़े व पिसे मसाले,
जड़ी-बूटी के थोक व फुटकर विक्रेता

लाला राम चन्द्र गुप्ता एण्ड सन्स

दुकान नं. 141-144, कैनाल पटरी, एक्सप्रेस रोड (6 नंबर कार पार्किंग के सामने) कानपुर
पर्चा लिखवाने वास्तेः 7510000300/9621265697
पर्चे की जानकारी वास्ते फोन नंबर 0512-2364444

अपनी बात

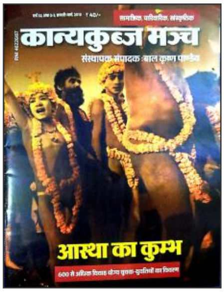

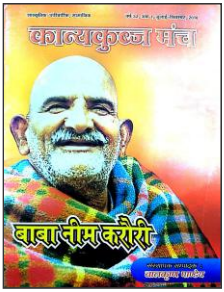

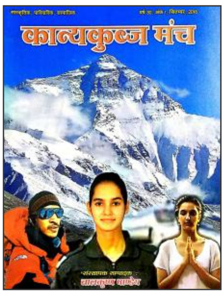

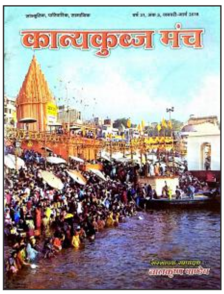

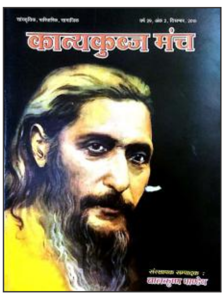

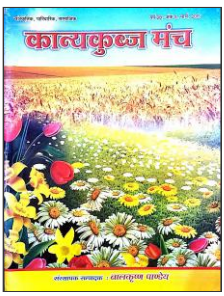

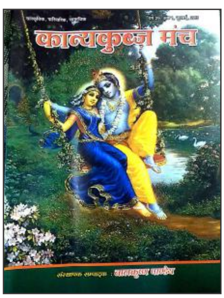

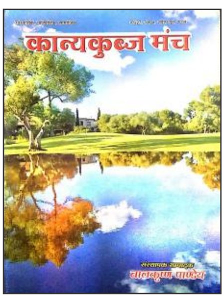

एक कथन है - 'क्या आप उत्तराधिकार में केवल भौतिक धन-संपदा ही छोड़ जाना पसंद करेंगे या ऐसी पारसमणि, जिससे आपके उत्तराधिकारी लाभान्वित हों और समाज, राष्ट्र को लाभान्वित करें'। पूजनीय पिता श्री बालकृष्ण पाण्डेय अपने निजधाम 'बैकुंठलोक' सिधार गए। अपने पारिवारिक दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए आने वाली पीढ़ियों को जो पारसमणि सौंप गए, वही हमारा सम्बल है, प्रेरणा है, शक्ति है। और वही अदृश्य शक्ति, पितृ-शोक के बावजूद, हमें अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने को प्रेरित कर रही है। परिस्थितिजन्य विषमताओं के होते हुए भी हम बगैर किसी व्यवधान के पत्रिका का 32 वें वर्ष का चौथा अंक संस्थापक सम्पादक के 'स्मृति-विशेष' पृष्ठों के साथ अपने पाठकों की सेवा में रखने का प्रयास कर रहे हैं।

हम कृतज्ञ हैं आदरणीय भाई श्री प्रमोदनारायण मिश्र के, जिन्होंने हर स्थिति में अपना हाथ मेरे कंधों से हटने नहीं दिया। अनुग्रहित हैं कन्नौज के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ जीवन शुक्ल के, जिन्होंने इस अंक के अतिथि सम्पादक का उत्तरदायित्व स्वीकार किया। गर्व है मुझे अपने अनुज आशुतोष, अजय व अतुल पर, जो किसी भी अनुष्ठान को सहज सम्पन्न करने की क्षमता रखते हैं। साथ ही पत्रिका के अनन्य सहयोगी दीदी श्रीमती प्रभा पाण्डेय, तिवारी ब्रदर्स के अधिष्ठाता भाई रविकान्त तिवारी, मेघदूत ग्रामोद्योग के भाई विमल शुक्ल, भाई प्रताप शुक्ल, डॉ रमेश मंगल वाजपेयी, श्री राजेश दीक्षित, बड़े भाई श्री देवेंद्र मिश्र, सहृदय अजित शुक्ल, विद्वत लेखकों, विज्ञापन सहयोगियों, विपरण सहयोगियों और विशेषकर अपने सुधी पाठकों का हृदय से आभार प्रदर्शित करते हैं तथा अनजान त्रुटियों के लिए क्षमा चाहते हैं, जिनका स्नेह और संरक्षण पत्रिका के अनवरत प्रकाशन में हमें प्रेरित करता रहा।

तेजी से बदलते पारिवारिक ढांचे और सामाजिक परिदृश्य के बीच 'कान्यकुब्ज मंच' नैतिक मूल्यों के संरक्षण, ब्राह्मण- मूल्यों के संवर्धन में लोकोपयोगी हो सके, इस अनुष्ठान में आपका सतत सहयोग मिलता रहा तो हम अपने पाठकों को नियमित पत्रिका सुलभ कराने की प्रतिबद्धता से पीछे नहीं रहेंगे।

- विष्णु पाण्डेय
प्रबन्ध सम्पादक

पहले हिन्दू तो बनो

– डॉ. जीवन शुक्ल

जन्म से हम सब शूद्र यानि जातिरहित होते हैं। मनुष्य की संतानें जाति उपाधिधारी माता-पिता से भले जन्म लें, पर बिना संस्कार की प्रक्रिया से जुड़े वह सवर्ण नहीं हो सकता। स्पर्श द्वारा दिये गए आकार को संस्कार कहते हैं। संस्कार ही बीज को वृक्ष, अशुद्ध को शुद्ध बनाते हैं। संस्कार ही संस्कृति को जन्म देते हैं। वैदिक सनातन पद्धति में संस्कारों का बड़ा महत्व है। यह समारोहों की संस्कृति है, यहां हर स्पर्श का आकार सुखमय होता है, इसीलिए हिन्दू जीवन पद्धति को वैज्ञानिक, संस्कारित तथा श्रेष्ठ संस्कृति माना गया है। पश्चिम तथा अन्य विजातीय संस्कृतियों के प्रभाव से हम अपनी संस्कार परम्परा को भूलते जा रहे हैं। अपने संस्कारों से दूर, अपनी आस्था से कमजोर हिन्दू ही बड़ी जल्दी दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेता है। किसी अन्य धर्मावलम्बी को अपने जन्मदिन मनाते समय हिन्दू पद्धति को उससे जोड़ते देखा है? पर अधिकांश, अपने को सभ्य कहलाने वाला हिन्दू जन्मदिन पर केक काटता है। अगर हम एक समन्वित संस्कृति जिन चाहते हैं तो फिर हमें धर्म और जाति के आधार पर सोचना बन्द कर देना चाहिए।

हिन्दू धर्म का चक्र ब्राह्मणत्व के आसपास घूमता है। दरअसल यह ब्राह्मण संस्कृति का ही पोषित अंश है। इसलिए अगर आप ब्राह्मण हैं- जन्म से, कर्म से, तो आपको इस धर्म की हर कमी को भी स्वीकार करना पड़ेगा। ब्राह्मणों से ही वेदों के ज्ञान, अर्थात वह शिक्षा, जो हमें अज्ञान के अंधकार से मुक्त कराकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाता है। आज हम इससे बहुत दूर ही नहीं चले गए हैं बल्कि इसे पोंगापंथी ज्ञान मानकर इसकी उपेक्षा भी करते हैं। इसके पीछे हमारा संस्कृत भाषा से टूटा हुआ नाता ही कहा जा सकता है। आज अंग्रेजी का महत्व उस समय से ज्यादा है जब हम उनके अधीन थे।

असली सनातन चिंतन तो पूरी दुनिया को अपने परिवार की तरह मानने की शिक्षा देता है। लेकिन आज की राजनैतिक सोच हमें धर्म की व्याख्या शास्त्र के आधार पर नहीं, कूटनीति के हित को ध्यान में रखकर करना सिखा रही है। यह विनाशकरिणी दिशा की ओर, सत्ता के मोह के कारण, हमें ले जाएगी। ऐसा मैं समझता हूं।

'कान्यकुब्ज द्विजः श्रेष्ठा' की बात हम भले न करें पर यदि हम अपने को ब्राह्मण कहते हैं, मानते हैं, उसका सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक मूल्य भी चाहते हैं तो हमें हिन्दू समाज को अपने स्नेहमय आचरण, त्यागमय परम्परा और ज्ञान से पूरे समाज का नेतृत्व करने का संकल्प लेना ही पड़ेगा।

–9415471813

ब्राह्मण महिमा

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

भारत भूमि में उत्पन्न अग्रजन्मा ब्राह्मणों ने सारी दुनिया को धर्म तथा ब्रह्मज्ञान, मानव सदाचार की शिक्षा दी थी, तब विश्व साक्षर बन सका।

देवाधीनं जगत् सर्वम् मंत्राधीनाश्चदेवताः
मंत्रास्तु ब्राह्मणाधीनाः तस्मात् ब्राह्मण देवता।

सारा संसार समग्र सृष्टि देवताओं के अधीन हैं। देवता भी मंत्रों के अधीन हैं। मंत्र ब्राह्मणों के अधीन हैं, अतः ब्राह्मण को देवता कहा जाता है।

विद्याह वै ब्राह्मणमाजगाम, शेवधिस्तेहमस्मि

विद्या ब्राह्मण के पास जाकर बोली तथा प्रार्थना की कि आप की मैं विरासत हूँ, मेरे आप ही कोष हैं। मेरी रक्षा आपके अधीन हैं।

ॐतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।

ब्रह्मा ने ॐ तत् सत् का उच्चारण किया इससे विश्व कल्याण के लिए ब्राह्मण, वेद तथा यज्ञ का सृजन हुआ।

शमो दमस्तमः शौचं क्षान्तिरार्जवमेवच ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्

शम (शन्ति, तृप्ति, सन्तोष) दम (बुराइंयों का दमन), शौच (पवित्रता, स्वच्छता), शान्ति (क्षम), आर्जव (सादा जीवन उच्च विचार, सरलता) ज्ञान (विद्यार्जन), विज्ञान (ब्रह्मज्ञान), आस्तिक्य (आस्तिकता, श्रद्धा, धर्म निष्ठा) यह ब्राह्मणों के स्वभाविक कर्म हैं। ❐

अक्षय-तृतीया पर विशेष

आइए चलें जानापाव कुटी
जहाँ जन्मे थे विष्णु के छठे अवतार भगवान परशुराम

– कुमार चक्रपाणि मिश्र, इंदौर

इंदौर-मुम्बई मुख्य मार्ग पर इंदौर से 45 किमी दूर मुहू तहसील में समुद्र तल से 881 मीटर विंध्यांचल की पहाड़ियों पर स्थित 'जानापाव कुटी' महर्षि जमदग्नि की तपःस्थली है। विष्णु के छठे अवतार भगवान परशुराम का जन्म इसी कुटी में बैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को जमदग्नि की पत्नी रेणुका, जो राजा प्रसेनजित की कन्या थीं, के पांचवे पुत्र के रूप में हुआ बताते हैं।

लोकमान्यता है कि भार्गव राम का जन्म चर्मण्वती के उद्गम स्थल में हुआ था। चर्मण्वती (चम्बल) नदी का उद्गम क्षेत्र इंदौर की महू तहसील में स्थित जानापाव की पहाड़ियों में है। चम्बल घने जंगलों के बीच पहाड़ों पर बसी जानापाव कुटी के ब्रह्मकुण्ड से निकलकर लगभग 750 किमी की यात्रा करते हुए राजस्थान के चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, धौलपुर होते हुए उप्र में इटावा के पास मुरादगंज में बहती यमुना से जाकर मिलती है। चम्बल के अलावा गम्भीर, अंगरेड, सुमरा, बिरमा, चोरल, कारम तथा नेकेदेश्वरी नदियों का उद्गम भी ब्रह्मकुण्ड से हुआ बताते हैं।

जानापाव मालवा क्षेत्र की दुसरीं सबसे ऊंची पहाड़ी है। वर्षा ऋतु के बाद यहां का मनोरम दृश्य पर्यटकों को आकर्षित करता है। खूंखार जंगली जानवरों को भी इन जंगलों में यदा कदा देखा गया है। कहते हैं - माता रेणुका ने इस पहाड़ी पर अनेकों औषधीय वृक्षों-पौधों का रोपण किया था। आज भी कई आयुर्वेदिक चिकित्सक औषधियों की खोज में यहाँ आते हैं।

भगवान परशुराम द्वारा मातृ-पितृ ऋण से उऋण होने की कथा भी इस स्थान से जुड़ी है। माता रेणुका पानी भरते समय शिकार के उद्देश्य से वन में विचरते राजा चित्ररथ के रूप-सौंदर्य पर मोहित हो गयी थीं। महर्षि जमदग्नि को इसका आभाष होने पर ऋषि ने अपने पुत्रों को मां का सिर काट लेने का आदेश दिया। पिता की आज्ञापालन कर परशुराम ने पिता महर्षि जमदग्नि से अजेय होने का वरदान प्राप्त किया था।

संपादक आशुतोष पाण्डेय के साथ कुमार चक्रपाणि मिश्र

श्रीजमदग्नि आश्रम-जानापाव पीठाधीश्वर श्रीमहंत बद्रीनन्द ब्रह्मचारी महाराज के कृपापात्र शिष्य श्री गोपालानंद ब्रह्मचारी ने बताया कि तपोभूमि में भगवान परशुराम जन्म अक्षय तृतीया व कार्तिक पूर्णिमा के मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालु व पर्यटक आते हैं। आश्रम के गौशाला में 108 गौवें हमेशा रहती हैं। रुकने के लिए कमरों की व्यवस्था है। प्रतिदिन भण्डारे का आयोजन होता है। सर्वपितृ अमावश्या को भूत-मेला लगता है। नकारात्मक ऊर्जा से ग्रसित लोग ब्रह्म सरोवर में स्नान कर मानसिक संतुलन को व्यवस्थित करने का लाभ लेते हैं। महर्षि जमदग्नि द्वारा स्थापित शिवलिंग की पूजा-अर्चन, ब्रह्मसरोवर में स्नान आदि से अजेय होने का आशीर्वाद तथा अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। आप कभी इंदौर आवें तो जानापाव आश्रम की रमणीक तपोभूमि के दर्शन का लाभ अवश्य उठावें। सितम्बर से फरवरी तक का मौसम अधिक अनुकूल है। **– 9826399568**

जानापाव कुटी में महर्षि जमदग्नि द्वारा स्थापित शिवलिंग आज भी विद्यमान है।

दुर्गम पहाड़ी होने व जंगली जानवरों के कारण यहां तक पहुंचना कठिन था। पहाड़ की तलहटी में बसे गांव के सरपंच सुशील पाटीदार ने बताया कि राज्य सरकार के प्रयासों से जानापाव कुटी तक पक्की सड़क का निर्माण 12 करोड़ की लागत से हुआ है। एक पर्यटन स्थल विकसित करने के उद्देश्य से 'जमदग्नि तपोभूमि' को 20 करोड़ की परियोजना की मंजूरी मिल चुकी है। वर्षात के बाद यहां बड़ी संख्या में लोग आते हैं। भगवान परशुराम के एक भव्य मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है। पाटीदार जी का कहना है - जानापाव ट्रस्ट के पास 8 एकड़ भूमि पहाड़ी पर और 24 एकड़ भूमि नीचे तलहटी में है। जिसमें वैदिक शिक्षा के गुरुकुल विद्यालय का प्रस्ताव है। आईआईएम, आईआईटी के साथ वैदिक गुरुकुल विद्यालय होने से इंदौर पश्चिम भारत के एक बड़े शिक्षा केन्द्र के रूप में जाना जाएगा।

समतावादी ब्राह्मण...

–स्मृतिशेष आचार्य प्रभाकर मिश्र

ब्राह्मण महर्षियों ने मानवता के विकास के लिए जितना साहित्य तथा ज्ञान भंडार प्रदान किया उससे भी विश्व परिचित है। ब्राह्मणों के ज्ञान का विश्व ऋणी है। पर क्या अतीत गुणगान से ब्राह्मणों का वर्तमान तथा भविष्य उज्ज्वल होगा, उत्तर है नहीं। यदि हम उस अतीत से प्रेरणा लेकर अपने अस्तित्व को विकसित करें तो विश्व की मानवता को आज भी बहुत कुछ दे सकते हैं। उसके लिए हमें सर्वप्रथम संगठित तथा एकता के सूत्र में विज्ञापित करना होगा। चिरनिद्रा का परित्याग कर जागृत होना होगा। आज सर्वत्र गोत्र, देश, स्थान, भेद से हम बिखरे हुए है, इसलिए ब्राह्मणों की ऊर्जा, शक्ति का परिचय विकसित नहीं हो पा रहा है। छोटे-छोटे वर्गभेद के संगठन तथा सभाएँ तो ब्राह्मण कल्याण की दिशा में कार्यरत हैं। पर ब्राह्मणों के पुनरूत्थान की दिशा में दिशादान करने में असमर्थ हैं। अपने-अपने वर्ग के कल्याण करने की दिशा में प्रयत्नशील रहते हुए, सभी ब्राह्मण व्यवहारिक रूप से एक छत्र के अन्दर समन्वय कर एक हो जाएँ, तो यह और अच्छी बात होगी। उस परिस्थिति में ही हम अपनी भारतीय संस्कृति, आत्मसत्ता तथा ब्राह्मण स्वाभिमान की रक्षा कर ब्राह्मण गौरव स्थापित कर सकेंगे। ब्राह्मण एकता के पक्षधर हैं। यदि एक कोई ब्राह्मण अन्तराष्ट्रीय संगठन स्थापित हो तो ब्राह्मणों में आज भी वह तेज, ऊर्जा, ज्ञान है कि विश्व में अपने ज्ञान की प्रतिभा प्रदर्शित कर सकते हैं, इसी लक्ष्य को समक्ष रखकर (ब्राह्मण इंटरनेशनल) का विश्व की मानवता के हित में निम्नलिखित सनातन घोषणा पत्र निर्धारित हुआ कि

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा काश्चित् दुःखभागभवेत।।

सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी अच्छा देखें। सभी का सर्वविध कल्याण हो। क्योंकि सृष्टि के आदि में ही ब्राह्मणों को यह निर्देश, सन्देश, कर्त्तव्यपालन का उपदेश मिला था कि

''एतद् देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्र्व स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

इस भारत देश में उत्पन्न अग्रजन्मा (सभी के अग्रज) ब्राह्मणों से सारा संसार चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें। ब्राह्मणों को ऋषि कहा जाता है। ऋषि का अर्थ हैं रिसर्च या खोज करने वाला। ब्राह्मणों ने प्रकृति से लेकर ब्रह्म तक स्थूल से अणु तक की खोज की है। जो कुछ खोज की सब कुछ वेदों से लेकर उपनिषद् दर्शन, स्मृति धर्मशास्त्र तथा योतिष आयुर्वेद आदि शास्त्र पुराण, उपपुराण आदि अनन्त शास्त्रों में मानवता के हित और विकास के लिए लिखा।

ब्राह्मण जाति मात्र ही नहीं वह एक दार्शनिक विचारधारा की परम्परा है, यह भविष्य में होने वाली जाति उपजातियों का अग्रज रहा है। समस्त जातियों, विश्ववंशावली की जन्मदाता ब्राह्मण परम्परा, सप्तर्षि परम्परा ही रही है।

मातृत्व एक गौरव है, विवशता नहीं

- वशिष्ठ स्मृति के अनुसार दस उपाध्यायों की अपेक्षा आचार्य, सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता और हजार पिताओं की अपेक्षा माँ का गौरव अधिक है।
- संसार में जितने विद्वान, कलाकार, प्रसिद्ध चित्रकार, साहित्यकार, वैज्ञानिक तथा मेधावी व्यक्ति हुए हैं, सभी को अपनी माताओं से प्रेरणा मिली है।
- पारिवारिक स्तर पर भावनात्मक स्थिरता प्रदान करने वाला, सामाजिक स्तर पर गम्भीर जिम्मेदारी वहन करने वाला मातृ कर्म कमतर क्यों आंका जाय।
- नारी सुकुमारिता, प्रेमासक्ति, भावना और चिन्ता, उत्सुकता की प्रतीक समझी जाती है। वह मूलतः 'माँ' होती है।
- नारीत्व, गृहिणीत्व और मातृत्व का स्थान किसी भी प्रशासकीय या राजनीतिक पद से कमतर या हेय नहीं है।
- नारी अपने सहस्त्र दौर्बल्य के होते हुए भी अकेले मातृत्व के गुण के कारण इतनी तेजस्विनी है कि देवता भी उसे शीश नवाते हैं।
- अगर किसी स्त्री में मातृत्व भावना का अभाव है, तो वह न केवल असफल माँ ही है, बल्कि एक नीरस पत्नी तथा कर्तव्यहीन गृहिणी भी है।
- मातृत्व का गर्व और आनन्द आंखों में संजीवनी सी भर देता है। मत भूलिए मातृत्व भारतीय नारी की तपोज्ज्वल महिमा है और बंध्यापन उसका सबसे विषैला अभिशाप। साथ ही अनचाहा मातृत्व स्त्री के लिए भार होता है।

कविता

माँ देवी नहीं होती,
उसकी पूजा मत करो ।
वह कोई सुदर्शना मूरत नहीं है,
जिसे घर के या
घर के बाहर के
किसी मनचाहे कोने में सजा कर
या दूर गाँव में रमा कर
प्रसन्न हो लो कि
फलां अवसर पर
मैंने रिवाज के अनुसार
गंध- अक्षत भेजा था,
बड़ी सुंदर स्तुति गायी थी ।

माँ देवी नहीं है, वह औरत है,
हाड़- मास का प्राणी है।
उसे भूख लगती है,
वह थकती है,
पाँव दुखते हैं उसके,
उसे रोटी और दवा के साथ
थोड़ा वक्त चाहिए तुम्हारा ।
छोटे कमरे में कैद
उसकी ममता मनुहार के साथ
घरनी का हक चाहती है ।
कभी उसे भी
तुम्हारी स्कुटी के
पीछे बैठ कर यहाँ - वहाँ
जाना है,
बेमतलब गप लड़ानी है
तुम्हारे बीच बैठ कर ।
उसे अभी भी
अपनी पसंद की
कोर - पदर की
चटख रंगों की साड़ी चाहिए,
अपने झाले- झुमकों के साथ
अभी भी गमकना चाहती है ।
कभी बैठना उसके पास
सहलाना उसकी रिक्तियों को
टटोलना उसकी शक्तियों को
तुम्हें देवी नहीं,
जीती- जागती धड़कनों में
उम्मीदों की दुनिया मिलेगी,
कोशिश करना
आबाद रख सको उसे.....

– मिता शुक्ला , इंदौर

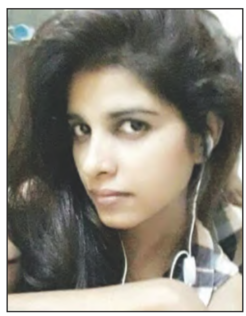

सन्तों की वाणी में योग

लगभग 150 ईसा पूर्व महर्षि पतंजलि के हाथों व्यवस्थित दर्शन रूप पाने से पहले भी सम्भवतः ईसा से तीन हजार वर्ष पहले भारतवर्ष में योग प्रचलित था। मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त अनेक योगसनोपविष्ठ मूर्तियों से योग की प्राचीनता स्वतः सिद्ध हो जाती है। सिंधु सभ्यता के भग्नावशेषों से प्राप्त प्रस्तर मूर्तियों तथा मुहरों आदि पर अंकित त्रिमूर्ति शिव की योगासनबद्ध मुद्राएं इस बात का स्पष्ट संकेत देती हैं। जैन साहित्य एवं बौद्ध ग्रंथों में भी योग की चर्चा मिलती है। कोई भी दर्शन योग से अछूता नहीं है।

सन्तों के कथनानुसार - यदि आत्मा से परमात्मा तक पहुँचाने तथा जगत से पार लगाने वाली कोई प्रणाली विशेष है तो वह योग है।

'जोग तपस्या में बड़ा, पहुँचावे हरि पास।
जनम मरण विष्ट मिटै, रहै न कोई आस।।'

योग के आदि आचार्य हिरण्यगर्भ हैं, महाभारत में इसका उल्लेख प्राप्त है।

'संख्यायस्य वक्ता कपिलः परमर्षि्स उच्यते।
हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्यो पुरातनः ।।'

हिरण्यगर्भ - सूत्रों के आधार पर महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन की रचना की। अष्टांग-योग के सूत्र हैं -

'यमनियमासनप्रणायाम् प्रत्याहार धारणा
ध्यानसमाधयोस्ष्टवांगानि।'

सन्तों ने अष्टांग-योग की चर्चा अपने साहित्य में पर्याप्त रूप से की है। कबीर अष्टांग योगी नहीं थे, फिर भी उनकी वाणियों में अष्टांग सम्बन्धी सभी बातें दृष्टिगोचर होती हैं। सुन्दरदास तथा सन्त मलूकदास ने 10 प्रकार के यमों - अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, क्षमा, धृति, दया, आर्जव, मिताहार एवं ऊच का वर्णन किया है।

यमनियम के सभी अंगों के साथ-साथ, आसन प्राणायाम पर दादू ने विस्तार से प्रकाश डालते हुए प्रत्याहार के महत्व का उल्लेख किया है-

'दादू-प्राण पवन मणि बसै त्रिकुटी केरे सन्धि।
पांचों इन्द्री सो ले चरनौं के बन्धि।।'

ब्रह्मचर्य को सुन्दरदास ने योग-साधना में वरदान माना है। ब्रह्मचर्य हेतु इन्होंने नारी-स्मरण, त्याग, नारी के रुदन, हँसी, गीत इत्यादि श्रवण का त्याग, नारी के साथ एकांतवार्ता का त्याग, हास्य-त्याग, रति-त्याग तथा नारी-स्पर्श-त्याग बतलाया है -

'ब्रह्मचर्य इहि भांति भली विधि पालिये।
गुह्य वार्ता, हास्य, रति, बहुरि स्पर्शय कोई।'

प्रत्याहार के बारे में सुन्दरदास कहते हैं, जैसे कछुआ अपने अंगों को तथा सूर्य चतुर्थ पहर में अपनी किरणों को समेट लेता है, उसी प्रकार साधक को अपनी इंद्रियों को अंतर्मुखी करना चाहिए।

भारतीय धर्म, साधना एवं चेतना के इतिहास में हिंदी- सन्त -काव्य का विशेष स्थान रहा है। सन्तों के कण्ठों से प्रस्फुटित वाणियां मानवता का पाथेय बनीं। उनका लक्ष्य व्यापक था। सन्तों ने मानव में मानसिक शक्ति बढ़ाकर उत्साह भरने की चेष्टा की।

योग सभी सम्प्रदायों और मत-मतान्तरों के पक्षपात और वादविवाद से रहित सार्वभौम धर्म है।❒ **(डॉ. रीटा)**

ब्राह्मणत्व का चमत्कार

''एक बार तपोभूमि मथुरा में भारत सरकार के प्रख्यात मानवतावादी पूर्व गृहमंत्री श्री गुलजारी लाला नन्दा पं0 श्री राम शर्मा आचार्य के दर्शन करने पधारे। बड़ी देर तक दोनों महापुरुषों में विविध विषयों पर चर्चा होती रही। अन्त में नन्दा जी ने बड़े ही संकोचपूर्वक एक जिज्ञासा प्रगट की कि मैं भारत सरकार में उच्च पदों पर रहा हूँ, पर अपने सम्पूर्ण प्रभाव का उपयोग करने पर भी मैं एक छोटा सा मानवतावादी संगठन नहीं खड़ा कर पाया जबकि आपने सब प्रकार से साधनहीन होते हुए भी समर्पित एवं श्रद्धालु कार्यकर्ताओं का एक विशाल संगठन खड़ा कर दिया है। आखिर आपने यह चमत्कार कैसे कर दिखाया? क्या यह आपकी तपस्या का प्रभाव है? परमपूज्य गुरुदेव ने विनोद पूर्वक उत्तर दिया - ''नन्दाजी? मैंने तो अपनी तपस्या का फल तिजोरी में बन्द कर रखा है उसे अभी छुआ तक नहीं। यह सब तो ब्राह्मणत्व का चमत्कार है। मैं जीवन भर सच्चे ब्राह्मण का जीवन जिया हूँ और यह सब उसी का परिणाम है। ❒

वृक्षोत्तमोवटः

- श्रीमती किरण वाजपेयी, लखनऊ

भारतीय संस्कृति में व्रत-पर्वों की लम्बी श्रंखला में जो वैज्ञानिक तत्व छुपे हैं, उनका ऋतु, मौसम, जलवायु तथा पर्यावरणीय आधार है। हमने हर उस वस्तु को देवता माना जो हमारी जीवन-चर्या को सुगम और अनुकूल बनाते हैं। उनकी पूजा-अर्चना के मूल में है - कृतज्ञता ज्ञापन। वट, पीपल, नीम, आंवला, तुलसी आदि की रक्षा, संवर्धन हमारी संस्कृति का हिस्सा रही है। ज्येष्ठ मास की अमावस्या को मनाया जाने वाला वट-सावित्री व्रत उसी की एक कड़ी के रूप में देखा-समझा जाना चाहिए।

'यथा सिंहो वने राजा तथा वृक्षोत्तमोवटः।' अपनी बहुपादप जटाओं के कारण जहां एक ओर वट वृक्ष (बरगद) इतनी दृढ़ता प्राप्त कर लेता है कि बड़े से बड़े झंझावातों में भी इसका अस्तित्व मिटता नहीं, वहीं दूसरी ओर इसका विशालकाय आकार पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं, राहगीरों का आश्रयस्थल बनता है।

वट-वृक्ष में शीतल प्रकृति, अवष्टभंग, कफ-पित्त दोषों को दूर करने वाला, आमातिसार, सोमरोग, प्रदर, शुक्र दुर्बलता सहित अनेक रोगों के उपचार के अचम्भित करने वाले गुण हैं। इसका लाल फल यौवन और कांति को बढ़ाने वाला है।

1. बरगद के पके फल को सुखाकर कूट कपड़छन कर इसके चूर्ण का गुनगुने दूध के साथ दिन में दो बार सेवन करने से शुक्र विकार दूर होकर धातु पुष्ट होती है।
2. बरगद की कोमल पत्तियों को सुखाकर कूट कपड़छन कर इसके चूर्ण को 10 ग्राम बराबर मात्रा में मिश्री और दूध के साथ सेवन स्वप्नदोष, प्रमेह, श्वेतप्रदर, रक्तस्राव में लाभकारी है।
3. वट के पत्ते तोड़ने से निकलने वाले दूध की 10 बूंदे चीनी के बताशे के साथ सेवन करना यौन रोगों में लाभकारी है।
4. सर्दियों में पैर की फटी हुई एड़ियों (बिवाई) में बड़ का दूध तुरन्त आराम पहुँचता है।
5. उल्टी (वमन) की दशा में वट की जटा को पानी में पीसकर छानकर आधा कप पीने से लाभ होगा।
6. बड़ के पत्तों में सरसों का तेल लगा तवे पर गर्म करके घुटनों या जोड़ो में बांधने से वात दर्द में आराम मिलता है।

वट-वृक्ष को ज्ञान, निर्वाण व दीर्घायु का पूरक माना गया है। इसमें ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों का ही वास बताया जाता है। महात्मा बुद्ध को इसी वृक्ष की छाया में बोधि (ज्ञान) प्राप्त हुआ था।

भारत में अनेकों ऐसे वट-वृक्ष है जिनका इतिहास वर्षो और युगों पुराना है। इनकी चर्चा इतिहास और पुराणों में भी मिलती है। मुगल, चीनी व अन्य देशी-विदेशी पुरातत्व ज्ञाताओं ने वट-वृक्षों के इतिहास को छह-सात हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन बताया है।

अक्षय वट

प्रयागराज कुम्भ के समय अक्षय वट एक बार फिर चर्चा में आया था। किन्हीं अज्ञात कारणों से बन्द इस अक्षय वट को शासन और प्रशासन के प्रयास से सामान्य दर्शनार्थियों के लिए सुलभ कराया गया। भगवान राम और विष्णु के समय भी इसके अस्तित्व की बात शास्त्रों-पुराणों में मिलती है। कहते हैं अक्षयवट के दर्शन मात्र से ही अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार वृन्दावन में यमुना किनारे वंशीवट, उज्जैन में शिप्रा के तट पर सिद्धवट, गया (बिहार) में गयावट या बोधिवट तथा नासिक में पंचवट का भी पौराणिक महत्व है। पश्चिमी उत्तरप्रदेश के मुज्जफरपुर का वट भी प्रचलित है, जहां शुकदेवजी ने राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत की कथा सुनाई थी।

वट-सावित्री व्रत

वट वृक्ष के इसी महात्म्य के साथ ही वट-सावित्री की कथा व व्रत अधिकांश हिंदुओं की आस्था से जुड़ा हुआ है। वट-वृक्ष की छाया में ही साल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यभामा के मृत शरीर में प्राण आये थे। सत्यभामा की पत्नी सावित्री, जो भद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या थी, ने यमराज से अपने पति का पुनः जीवन वरदान पाया था।
तभी से लगभग सभी भारतीय विवाहिताएं अपने पति की दीर्घ और स्वस्थ जीवन की मंगलकामना से ज्येष्ठ मास की अमावस्या को वट-सावित्री का व्रत पूरी निष्ठा व आस्था से करती है। पीले सूत के धागे से वृक्ष के तने को चारों ओर से लपेटकर रक्षा का वरदान मांगतीं हैं और परिक्रमा करती है।❑

संगठन का सार्थकता

कान्यकुब्ज ब्राह्मण सदैव गतिशील रहने वाला वर्ग है, अतीत काल से इस ने घृणा और द्वेष को कभी प्रश्रय नहीं दिया। आज जातिवाद जिन संकीर्ण भावनाओं से बदनाम है, उससे परे हो, इसने सदैव समाज की सड़ांध को निकालते हुए, राष्ट्र-हित में अपना योग दिया है। इतिहास साक्षी है, हम अपनी जाति की उन्नति से खुश अवश्य हुए हैं, पर अन्य जातियों के पतन से कभी पुलकित नहीं हुए हैं। जातीय-प्रेम से प्रेरित हो, कोई वर्ग-विशेष यदि अपनी जाति में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का यत्न करता है, जाति के निर्धन और असहाय व्यक्तियों को सहायता देकर आगे बढ़ाने का प्रयत्न करता है, तो वह अराष्ट्रीय कैसे हुआ ?

कान्यकुब्ज ब्राह्मण के उस संगठन को ही मान्यता प्राप्त होगी, जिस में उदारता, सहिष्णुता के तत्व विद्यमान हो, जाति के अन्दर समानता और भाई-चारा का अधिकाधिक विकास हो, हम एक हैं, पर केवल कथनी में ही न हो, बल्कि करनी में भी हो। विच्छृंखल समाज को एक मंच प्रदान करना होगा।

हम अपने गौरव को भूल कर झूठे दम्भ का पल्ला पकड़ रहे हैं ब्राह्मणेत्तर आचारण और व्यवहार के बावजूद सम्मान पाने की चाह रखना अपराध है। गुणहीन संज्ञा अस्तित्वविहीन होती है। खान-पान, रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेषभूषा, वाणी सभी कुछ तो वैश्विक हो चला है। हमारे संगठनों की प्रासंगिकता एवम् सार्थकता का लोप होता जा रहा है। मात्र भीड़ जुटाना संगठन की सार्थकता नहीं हो सकती।

आज ब्राह्मणों की स्थिति कृपापात्र या दयापात्र भी नहीं रही। समाज उसे घृणा की दृष्टि से देख रहा है। संगठन का लक्ष्य पहचान को कायम रखना होना चाहिये। हमारा आचरण, ज्ञान-विज्ञान समाज, मानवता के लिए हो। नैतिक व सामाजिक मूल्यों को जिन्दा रखकर, मर्यादित आचरण एवम् भौतिकता के साथ आध्यात्म के समन्वय द्वारा ही इस अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकेंगे।

समाज के मनीषी, विद्वानों, चिन्तकों, विचारकों से अपेक्षा है कि उनका शोध-कार्य समाज को वस्तु-स्थिति से परिचय प्राप्त करता हुआ वह दिशा प्रदान करे, जिस पर चल कर हमारा समाज, आदर्श समाज ही बना रहे। ❒

संस्कृति के संक्रमण का दौर

– बृजेश कुमार तिवारी, दिल्ली

हमारा दर्शन समूहवादी है। कृषि कार्य हो, धार्मिक, सामाजिक या पारिवारिक उत्सव, सभी में सामूहिकता झलकती थी। मेले और मिलन भी इसी अवधारणा की देन हैं। तमाम आक्रमणों, आपदाओं, औद्योगिक क्रांति, शहरीकरण के बावजूद इसमें कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। 'एकोऽहम् बहुस्यामि' एक से अनेक हो जाना हमारी विशिष्टता है। वर्ण-व्यवस्था, जाति व्यवस्था एक स्वस्थ आदर्श समाज की परिकल्पना ही तो थे। एक सुनियोजित, संचालित, समाजिक प्रबंध कला। चाची-चाची, नाना-नानी, बुआ-फूफा, मामा-मामी, मौसी, साली, सलहज, सास-श्वसुर नाम देकर हमने रिश्तों-संबंधों को सजीवता प्रदान की। मात्र रक्त संबंध ही नहीं, गांव-मोहल्लों को भी आदर सम्मान सहयोग स्नेह, ममता, दुलार की संज्ञा से बनाया-संवारा।

पर आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण के चलते हमारा समाज विखण्डित होने के कगार पर है। संस्कृति के संक्रमण का दौर है। बाजारवाद ने हमारा अपना चेहरा-चरित्र ही छीन लिया है। औद्योगिक, क्रांति, शहरीकरण ने बेशक संयुक्त परिवारों को विकेन्द्रित किया हो, पर स्थान की दूरियां हमारे दिलों, संबंधों को इतना प्रभावित नहीं कर पाई थी, जितना उदारवाद और बाजारवाद ने किया। पहले हम दूर-दूर रहते हुए भी पास-पास थे, अब इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, इंटरनेट, विकसित संचार माध्यमों के साथ पास-पास रहते हुए भी दूर-दूर हैं। रिश्ते-नातों, संबंधों की ऊष्मा ठंडी पड़ती जा रही है, सामाजिक दायित्व बोध तिरोहित हो चला है। परिणामतः भीड़ में भी व्यक्ति अकेला है। धन-अर्थ की लालसा में सारे मानवीय, पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक यहां तक कि राष्ट्रीय मूल्य अर्थहीन हो चुके। उपभोक्ता वस्तुओं की ही नहीं, व्यक्तियों, मित्रों, रक्त संबंधियों को भी मार्केट वैल्यू से जांचा-परखा जा रहा है। क्या हम आप भी बाजार की वस्तु नहीं बनते जा रहे हैं? ❒

– 9910282579

नेहरू और निराला

वरिष्ठ पत्रकार रामचन्द्र गुहा ने अपनी पुस्तक में समाजशास्त्री पं. त्रिलोकीनाथ पाण्डेय को संदर्भित करते हुए लिखा है, - प्रधानमंत्री नेहरू तब अपनी चीन की यात्रा से लौटे ही थे और अपने गृहनगर इलाहाबाद में एक सभा को संबोधित कर रहे थे। निराला सभा में अगली पंक्ति में बैठे हुए थे, खुला हुआ सीना, जिस पर अभी-अभी तेल की मालिश हुई थी। ऐसा लगता था जैसे निराला, जो कुश्ती के दाँव-पेंच में भी महारत रखते थे, सीधे अखाड़े से होकर सभा में चले आए हों। निराला अपनी उस अनूठी मुद्रा में सबके आकर्षण का केंद्र थे।

अपना भाषण शुरू करते हुए नेहरू ने एक किस्सा सुनाया, ''मैं चीन से लौटा हूँ और वहाँ मैंने एक कहानी सुनी। एक महान राजा और उसके दो बेटों की कहानी। एक चतुर और दूसरा मूर्ख। जब ये बेटे बड़े हो गए, तो राजा ने कहा कि मेरा मूर्ख बेटा राजा बनेगा, क्योंकि वह सिर्फ़ शासक बनने लायक ही है। पर मेरा चतुर और विद्वान बेटा कवि बनेगा क्योंकि वह महान कार्य करने के लिए बना हुआ है''। यह कहकर नेहरू ने अपने गले से माला उतारी और श्रद्धाभाव से निराला के पैरों की तरफ उछाल दिया।

नेहरू निराला के प्रशंसक तो थे ही, उन्हें निराला से गहरा स्नेह भी था। डी.एस. राव द्वारा लिखे गए साहित्य अकादेमी के इतिहास, ''फ़ाइव डिकेड्स'' के परिशिष्ट में। साहित्य अकादेमी का औपचारिक उद्घाटन संसद के केंद्रीय हाल में 12 मार्च, 1954 को हुआ था। अगले ही दिन यानी 13 मार्च को प्रधानमंत्री नेहरू ने साहित्य अकादेमी के नवनियुक्त सचिव कृष्ण कृपलानी को निराला के बारे में लिखा कि ''निराला पहले भी काफी सृजनात्मक लेखन कर चुके हैं और आज भी जब अपने रौ में लिखते हैं तो कुछ बेहतर लिखते हैं''। निराला की किताबें तब लोकप्रिय थीं और पाठ्य-पुस्तकों के रूप में भी उन्हें पढ़ा जाने लगा था। पर नेहरू के शब्दों में, ''निराला ने अपनी किताबों को महज़ 25, 30 या 50 रूपये पाकर प्रकाशकों को दे दिया, लगभग सारी किताबों के कॉपीराइट वे (निराला) प्रकाशकों को दे चुके थे''। नतीजा यह कि ''प्रकाशक तो निराला की किताबों को

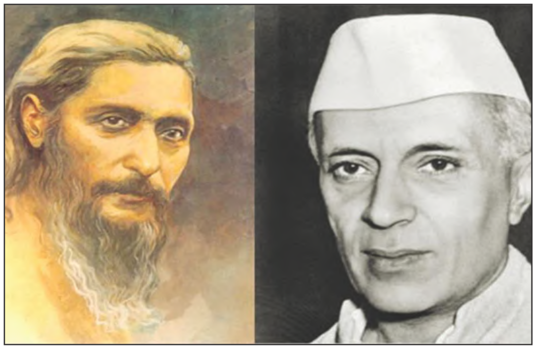

बेचकर अच्छा-ख़ासा धन कमा रहे थे, पर निराला मुफ़लिसी में जी रहे हैं''।

नेहरू द्वारा अकादेमी को सुझाव

नेहरू ने अकादमी को सुझाव दिया कि ''निराला का उदाहरण प्रकाशकों द्वारा एक लेखक के शोषण का ज्वलंत उदाहरण हैं''। नेहरू ने अकादेमी से आग्रह किया कि वह कॉपीराइट कानून में कुछ ऐसे बदलाव करे, जिससे भविष्य में भारतीय लेखकों का कोई शोषण न हो। आगे नेहरू ने लिखाः ''इस दौरान निराला को कुछ आर्थिक मदद जरूर दी जानी चाहिए। यह आर्थिक मदद सीधे तौर पर निराला के हाथ में नहीं दी जानी चाहिए, क्योंकि वे तुरंत ही इसे किसी दूसरे जरूरतमंद को दे देंगे। असल में, वे अपने कपड़े और सारी चीजें ऐसे ही लोगों को दे दिया करते हैं''।

उस समय महादेवी वर्मा और इलाहाबाद के एक साहित्यिक संगठन से जुड़े सदस्य निराला की जरूरतों का खयाल रखते थे और उनकी आर्थिक मदद भी किया करते थे। नेहरू ने अकादेमी को सुझाव दिया कि निराला को सौ रुपए की मासिक वृत्ति दी जाय, और यह रकम निराला के एवज में महादेवी वर्मा को दी जाय।

आज के भारत में यह सोचना भी असंभव है कि एक कवि की तंगहाली से चिंतित होकर, कोई प्रधानमंत्री उसे आर्थिक मदद देने की बात सुझाते हुए ख़त लिखेगा और यह भी बताएगा कि यह किसके हाथों में या किसके जरिए दी जाय। पर यह उस हिंदुस्तान में बिलकुल संभव था जो नेहरू और आज़ाद का हिंदुस्तान था। ❐

जाता जोगी किनहुँ न जाना

-आचार्य निशांतकेतु, गुरुग्राम

गोरखनाथ ने लिखा है-

'आवै संगी जाई अकेला, ताथै गोरखराम रमेला।'

वह साथ-साथ आता तो है, पर जाता है अकेला ही। इसीलिए गोरखनाथ केवल उस राम में रमण करते हैं। यहां यह रहस्य बना ही रह गया, कौन किसके साथ आता है? कौन किसे छोड़ एकाकी चला जाता है? यह राम क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर में गोरखनाथ लिखते हैं-

'काया हंस संग ह्वै आवा, जाता जोगी किनहुँ न जाना।'

हंस यानी आत्मा। यह हंस शरीर के रथ पर सवार हो गर्भ द्वार से निकलकर उपस्थित होता है। काया के साथ आत्मा चिपकी होती है। फिर अंत आने पर वह आत्मा इस काया को छोड़कर अकेली चली जाती है। इस निष्क्रांति को कोई देख नहीं पाता। यही योग है। योग अर्थात मिलन। आत्मा का परमात्मा से मिलन।

इस पद में काया हंस और जोगी (योगी) शब्द पारिभाषिक है। काया विशेष शब्द है। चि धातु में घञ्ज प्रत्यय लगने से काय- और काया शब्द बनते हैं। चि धातु से चिनोति क्रिया बनती है। भाव है चुनना। पृथ्वी, पानी, पवन, तेज और आकाश इन पञ्च तत्वों का चयन कर जो प्राकृतिक पंचीकरण होता है, वही काया है। निष्प्राण होने पर यह पंचतत्व अपने अपने तत्वों में जा मिलते हैं। रथी के नहीं होने पर रथ व्यर्थ हो जाता है। जोड़- - का काम निरंतर चलता रहता है। पंचीकरण- निष्पंचीकरण प्रकृति के नियम है। यही काया और निष्काम होने की नियत प्रक्रिया है। नाश किसी का नहीं होता।रूपांतर होता रहता है। नाश एक अदर्शन प्रक्रिया है, 'नश अदर्शने'।

हंस सत्वगुणी पक्षी है। नीर-क्षीर विवेकी है। निष्कलंक है। उस में दाग नहीं लगता। वह एक नीड छोड़ दूसरे नीड में उड़ जाता। हंस आत्मा है। अतति (गच्छति) शरीरात शरीरम् इति आत्मा।

योगी बनना ही जीवन का लक्ष्य है। योग विद्या भारत की देन है। योग मिलन है, एक वांछित मिलन। सर्वोत्तम मिलन बस एक ही है, आत्मा का परमात्मा से मिलन। घट के भीतर जो आकाश है - घटावरण फूटने पर वह महाकाश में मिल जाता है। बाहर चेतना की धारा बहती है उसी में हमारे भीतर का चेतन मिलकर एक हो जाता है।

-9811096352

आज विश्व की हर संस्कृति और सभ्यता 'अर्थ-प्रधान' जीवन दर्शन की पक्षधर है। भौतिकवाद का जैसा प्रबल समर्थन विश्व में चारों ओर हो रहा है वह किसी से छिपा नहीं है। इस भौतिकवाद ने एक ऐसी उपभोक्ता-प्रधान संस्कृति को जन्म दिया है, जिसमें मानव एक यंत्र मात्र बन कर रह गया है।

त्रिवेदी एण्ड कम्पनी

पोस्ट बॉक्स नं. 1411, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

फोन-23965712, 23973045

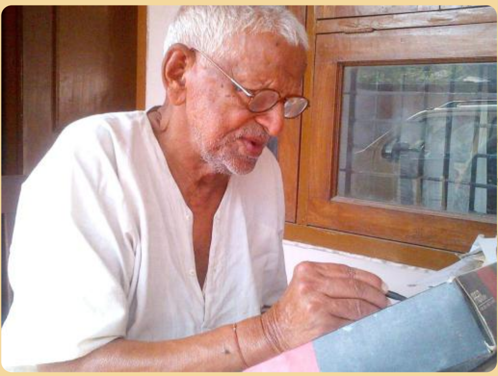

अपनी बात

हम इस पत्र के माध्यम से बहुमुखी राष्ट्रीय प्रगति, मानव-कल्याण, भावना के प्रचार तथा देश के सांस्कृतिक और नैतिक काया-कल्प में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का प्रयास करेंगे। इस सुकार्य में आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। देश में आश्चर्यजनक उन्नति के होते हुए भी इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि नैतिक पतन ने राष्ट्र-समाज का सारा भविष्य अंधकारमय बना कर रख दिया है। समाज व्यक्तियों के समूह के सिवाय और कुछ नहीं है। अतः जब व्यक्ति का दृष्टिकोण बदलेगा तो समाज में भी सही बदलाव आएगा।

'कान्यकुब्ज मंच' समाज में प्रेम, सहयोग, सदाचार, भाईचारा, मानवता, सच्चरित्रता, सादगी, संयम आदि सद्गुणों को उभारने तथा कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, मूढ़-मान्यताओं तथा कथित विकास पर चोट करने का प्रयास करेगा। समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित लेख दिए जाने में हम आपका सहयोग चाहेंगे।

देश के विभिन्न स्थानों की ब्राह्मण संस्थाओं से अनुरोध है कि वह अपने यहां सम्पन्न एवं आयोजित कार्यक्रमों से हमें सूचित करते रहें ताकि इस पत्र के माध्यम से अपने समाज की प्रगति का दिग्दर्शन हो सके। प्रकाशन कार्य अबाध गति से चलता रहे इसके लिए आप अपना संरक्षण प्रदान करें और जातीय यज्ञ को सफल बनावें।

पथ में कांटे हैं, मंजिल लम्बी है, पर्वत से टकराने के प्रयास है किन्तु यदि हम सच्ची सेवा के व्रत को लेकर निकले होंगे तो मंजिल दूर नहीं, ऐसा विश्वास है। हम गुरुजनों का आशीर्वाद चाहते हैं। युवा और बहन-बेटियों का सक्रिय सहयोग -

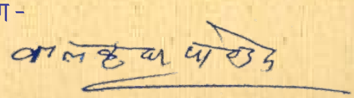

'मंच' के प्रथम अंक (जून 1987) से उद्धत

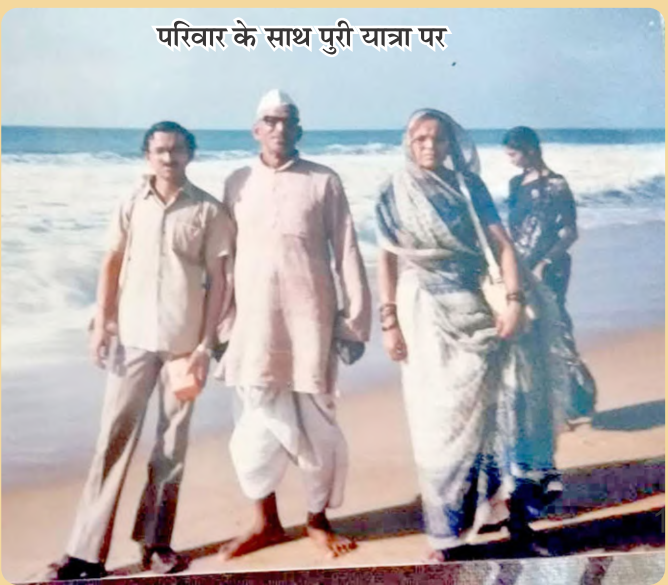

परिवार के साथ पुरी यात्रा पर

उ.प्र. के पूर्व गृहमंत्री गोपीनाथ दीक्षित के साथ

हिंदुस्तान 25.01.2019

साहित्य की धरोहर हैं 'बाल मित्र' की पाती

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

कान्यकुब्ज मंच के संस्थापक बालकृष्ण पांडेय के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया याद।

वरिष्ठ साहित्यकार, समाजसेवी व कान्यकुब्ज मंच के संस्थापक सम्पादक बालकृष्ण पाण्डेय की याद में श्रद्धांजलि सभा हुई। वक्ताओं ने कहा कि बच्चों के 'बाल मित्र' हमेशा याद रखे जाएंगे। बाल मित्र के नाम से बच्चों के नाम लिखी उनकी पाती साहित्य की धरोहर हैं।

श्रद्धांजलि सभा में कन्नौज से पधारे कवि साहित्यकार डॉ. जीवन शुक्ल ने कहा कि बाल कृष्ण पाण्डेय कर्मयोगी साधक थे। वरिष्ठ न्यूरो सर्जन डॉ. आईएन वाजपेयी ने उनके कृतित्व पर चर्चा की। जयतु हिन्दू विश्व के सम्पादक विजय प्रकाश त्रिपाठी ने उन्हें निराला व प्रेमचंद ... बताया। आचार्य कृष्ण विनायक फड़के, गिल्लूमल बजाज, लोकेश्वरनाथ सक्सेना के साथ बाल आंदोलन की दिशा में उनके प्रयासों का स्मरण किया। प्रमोद नारायण मिश्र ने आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय को एक प्रेरणादायक पुरुष बताया। विश्वबन्धु वाजपेयी ने उन्हें बच्चों का काका बताया। देवेंद्र मिश्र, डॉ प्रेमकुमारी मिश्रा, सुनील वाजपेयी, कृष्णकुमार सिंह, रोली अवस्थी, अर्चित, ऋचा, डॉ आई एन वाजपेयी, विजयप्रकाश त्रिपाठी, प्रमोद मिश्र, अजित शक्ल भी मौजूद रहे।

...कल्पवान कर्मयोगी ...धक थे बालकृष्ण पांडेय

आचार्य बालकृष्ण को किया याद

अमरउजाला 26.01.2019

कानपुर। वरिष्ठ साहित्यकार, समाजसेवी और कान्यकुब्ज मंच के संस्थापक संपादक आचार्य बालकृष्ण पांडेय की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा की गई। कन्नौज के कवि एवं साहित्यकार डॉ. जीवन शुक्ल ने उनके व्यक्तित्व पर रोशनी डाली। जयतु हिंदू विश्व के संपादक विजयप्रकाश त्रिपाठी ने बालकृष्ण पांडेय को सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और प्रेमचंद की श्रेणी का रचनाकार बताया। कहा कि गंभीर विषयों पर उनके द्वारा सहज भाषा में लिखी गई कहानियां ... हिंदी साहित्य की धरोहर है। ... प्रेमचंद और बच्चों ...

वरिष्ठ साहित्यकार, संपादक व समाजसेवी बालकृष्ण पांडेय की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा

...कल्पवान कर्मयोगी साधक थे बालकृष्ण पांडेय

- श्रद्धांजलि सभा में व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा की

...ण संवाददाता, कानपुर : वरिष्ठ ...त्यकार और समाजसेवी बालकृष्ण ... की स्मृति में बुधवार को श्रद्धांजलि ...का आयोजन किया गया। वक्ताओं ...के व्यक्तित्व, कृतित्व की चर्चा की। ... संघर्षों के दिन से सफलता के ... को याद किया।

...नौज से आए कवि साहित्यकार ...ीवन शुक्ल ने उन्हें संकल्पवान ...र्मयोगी साधक बताया। डॉ शुक्ल ... कि 32 वर्ष पहले जब पांडेय ...ंच पत्रिका के प्रकाशन की बात ...मैंने उन्हें निरुत्साहित किया। 62 ... अवस्था में उन्होंने सामाजिक, ...क पत्रिका के संपादन-प्रकाशन ...ा उठाया और वह सफल भी ...रो सर्जन डॉ. आईएन वाजपेयी ...भारतीय संस्कृति का सुभाषित युगपुरुष बताया। जयतु हिन्दू विश्व के संपादक विजय प्रकाश त्रिपाठी ने पांडेय जी को निराला और प्रेमचंद की श्रेणी का रचनाकार कहा।

आचार्य कृष्णविनायक फड़के, गिल्लूमल बजाज, लोकेश्वरनाथ सक्सेना के साथ बाल आंदोलन की दिशा में उनके प्रयासों का स्मरण किया। प्रमोद नारायण मिश्र ने आचार्य बालकृष्ण पांडेय को एक प्रेरणापुरुष बताया। उन्होंने हिंदी साहित्य को कई लेखक, संपादक दिए। देवेंद्र मिश्र, डॉ प्रेमकुमारी मिश्रा, विश्वबंधु वाजपेयी, सुनील वाजपेयी, कृष्णकुमार सिंह, रोली अवस्थी, अर्चित, ऋचा आदि ने भी अपने संस्मरण साझा किए।

...साहित्यकार ...ष का निधन

...डेय की फाइल फोटो।

...ष्ठ साहित्यकार कीर्तिशेष ...ण्डेय का गुरुवार को निधन ...ह 1987 से नियमित ...न्यकुब्ज मंच पत्रिका के ...पादक रहे। इसके अलावा ... पर त्रिपथगा, कादम्बिनी ...-पत्रिकाओं में सामाजिक ...ी, रेखाचित्र प्रकाशित होते

साहित्यकार बालकृष्ण पांडेय का निधन

...उजाला ब्यूरो

...र। वरिष्ठ एवं बाल ...कार बाल कृष्ण ...का बृहस्पतिवार को ...ो गया, वे 97 वर्ष के ...नका दाह संस्कार ... को भैरो घाट पर ...एगा।

...ना रोड स्थित ज्ञान ...एस इंटर कॉलेज ... तक शिक्षक रहने के अलावा ... साल तक सीवीएस स्कूल में ...कार्य किया। लेखन में उनका ...ान था। 1987 से नियमित

बाल कृष्ण पांडेय (फाइल फोटो)

संस्थापक संपादक थे। बाल पत्रिक... नंदन, पराग के अलावा त्रिपथग... कादम्बिनी जैसे राष्ट्रीय पत्र... पत्रिकाओं में सामाजिक... लेख, कहानी, रेखाचित्र... नियमित प्रकाशित होते रहे... हैं। वे बालसेवक बिरादरी, बाल संघ, बाल निकेतन आदि के माध्यम से बाल आंदोलनों में सक्रिय रहे। 1969 के माध्यमिक शिक्षक संघ के आंदोलन में उन्होंने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। इस दौरान उन्हें जेल भी जाना पड़ा, 28 दिन जेल में ...

कान्यकुब्ज मंच स्व. पाण्डेय का सच्चा स्मारक है

– डॉ0 वरूण कुमार तिवारी, गाजियाबाद

पं0 बालकृष्ण पाण्डेय का पार्थिव शरीर अब नहीं है। परन्तु उनकी कीर्ति सदा-सर्वथा अमर रखेगी। शास्त्रों में कहा गया है कि कीर्ति ही मनुष्य को अमरता प्रदान करती है। 'कान्यकुब्ज मंच' के मार्च 2016 अंक में उन्होंने मंच से जुड़े सभी महानुभावों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए लिखा था, ''विक्रमीय संवत् की निर्वाध यात्रा भारतीय राष्ट्र की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक विकास, प्रगति और साधना की पूर्णता एवं अमरता की द्योतक है। 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों का हम हार्दिक अभिनंदन एवं सविनय कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।''

यह है उनकी सदाशयता। वे शीलवान प्रज्ञा पुरूष थे। भतृहरि नीतिशतक में कहा गया है-

ऐशवर्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमों
ज्ञानस्योः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजत।
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम्

अर्थात् ऐश्वर्य का भूषण सुजनता, शौर्य का भूषण वाक्यसंयम, ज्ञान का शान्ति, तप का अक्रोध, प्रभुता का क्षमा, धर्म का भूषण निश्छलता और इन सब गुणों का कारण स्वरूप शील सभी का भूषण है।

कोई तीस वर्ष पहले की बात है। कानपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का वार्षिक कार्यक्रम चल रहा था। उसमें भाग लेने मैं कानपुर पहुँचा था। उक्त कार्यक्रम में पहली बार अपार जनसमूह के बीच गणेश उद्यान में खुले मंच पर कुल आठ कवियों के साथ मेरा भी कविता पाठ हुआ था। शिवाला मन्दिर के आदरणीय बद्रीनारायण तिवारी जी ने साहित्यकारों/साहित्यप्रेमियों के ठहरने की व्यवस्था बिरहाना रोड़ स्थित राजस्थान भवन में की थी। वहाँ पर डॉ0 विद्या निवास मिश्र, डॉ0 हरदेव बाहरी (हिन्दी शब्दकोश निर्माता), अमृत रॉय, डॉ0 रामकुमार वर्मा, गीतकार नीरज, डॉ0 जगदीश गुप्ता इत्यादि हिन्दी क्षेत्र के प्रतिष्ठित साहित्यकारों का अद्भुत संगम था। 'रामायण' सीरियल निर्माता रामानंद सागर और लोक गीतकार बालेश्वर भी पहुँचे थे। आदरणीय बालकृष्ण पाण्डेय जी मुझे ढूँढ़ते हुए मेरे कमरे में आए। तदन्तर दो दिनों तक समय-समय पर मुझसे मिलते रहे और प्राचीन परंपरा में ब्राह्मण-संस्कृति और वर्तमान समय में आए उस परंपरा में ह्रास की हम लोग चर्चा करते रहे। 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका के उद्देश्य प्रचार/प्रसार एवं ब्राह्मणों में सामाजिक एकता लाने और कुरीतियों को दूर करने में 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका की भूमिका पर भी चर्चाएँ हुई। मैं उनकी कर्तव्यपरायणता, परोपकारिता एवं प्रेरक व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ और पत्रिका को निरंतर सहयोग देने की बात कहकर उन्हें आश्वस्त किया। बाद के वर्षों में मैं अपने बच्चों के पास गाज़ियाबाद स्थित वैशाली में स्थायी रूप से रहने लगा। स्व. पाण्डेय जी अब भी कानपुर से नोएड़ा स्थित अपने छोटे पुत्र अतुल पाण्डेय के निवास पर आते तो मुझसे मिलने की जिज्ञासा करते और मैं उनका दर्शन-लाभ उठाता था। 'कान्यकुब्ज मंच' के सम्पादक चि0 आशुतोष बाबू भी वहीं आ जाते थे। पत्रिका के कुछ और सहयोगी, जिनमें पत्रकार श्रीकांत त्रिपाठी, डॉ. शिवाशंकर पाण्डेय, प्रो. सोमदत्त दीक्षित आ जाते, फिर एक गोष्ठी का स्वरूप बन जाता और हम लोग पत्रिका के संबंध में अपने अपने विचार रखते।

निस्संशय आज वे भैतिक शरीर से हमारे बीच उपस्थित नहीं हैं लेकिन उनके द्वारा स्थापित 'कान्यकुब्ज मंच' का पौध छतनार वृक्ष बनकर ब्राह्मणों के बीच शीतल छाया प्रदान कर रही है। 'कान्यकुब्ज मंच' स्व. पाण्डेय का सच्चा स्मारक है जो उनको अमर बनाए रखेगा। सिद्ध संपादक आशुतोष पाण्डेय जी, प्रबंध संपादक विष्णु पाण्डेय, वरिष्ठ साहित्यकार सर्व श्री जीवन शुक्ल जी, वात्स्यायन जी, आचार्य निशांतकेतु, प्रकाश शुक्ल, तिवारी ब्रदर्श के व्यवस्थापक इत्यादि अनेक महानुभाव 'कान्यकुब्ज मंच' को पल्लवित-पुष्पित करने में अपनी महनीय भूमिका निभा रहे हैं जो सर्वथा प्रशंसनीय है। ❐

– 8860478066

(संस्मरण)

सम्पादक-प्रवर से भेंट

–डॉ0 रमेश मंगल वाजपेयी, सीतापुर

लेखन, लेखक की साधना है और उस लेखन को परिणाम तक पहुँचाना समर्थ सम्पादक का धर्म। यह सम्पादन धर्म महनीय प्रयोजन से सम्पृक्त होता है। साहित्यकार की सच्ची साधना प्रणम्य है। समर्थ सम्पादक, उस प्रणम्य-साधना को सम्यक परिणाम तक ले जाने के कारण वरद कोटि में प्रतिष्ठित हैं। यह सम्पादक ही होते हैं, जो रचनाओं को यथावत प्रकाश में लेकर रचनाओं को यशस्वी शिखर प्रदान कराते हैं। वे उन्ही रचनाओं को प्रोत्साहित प्रकाशित करने मे तत्पर होते हैं, जो समाजोपयोगी या विशेष दृष्टि-संवाहक होती हैं। सत्य से साक्षात्कार कराती रचनाओं का प्रकाशन, व्यर्थ की रचनाओं का बहिष्कार और पत्रिका प्रयोजन के अनुकूल रचनाओं का चयन-प्रायः सम्पादन कार्य मान लिया जाता है। किन्तु यह इतना सरल नहीं है। आर्थिक-विवशतायें पत्रिका के सतत सम्पादन प्रकाशन में एक बड़ा अवरोध है और यदि आर्थिक सामर्थ्य भी येन केन प्रकारेण प्राप्त कर ली जाय, तो बिना चटपटे मसालें के पत्रिका की आयु संदिग्ध हो जाती है। तात्पर्य यह है कि विपरीत स्थितियों में सत्य का प्रकाशन करते जाना कोई कर मोदक नहीं है, जिसे जब चाहे, जैसे चाहे पारण कर ले। इस दुर्गम पथ पर अपना मार्ग प्रशस्त करने वाले कुछ विरले ही समर्थ होते हैं और ऐसे ही सामर्थ्य वान सम्पादकों में एक थे- 'सम्पादक-प्रवर', श्रद्धेय बालकृष्ण पाण्डेय जी।

सुनिश्चित सम्प्रयोजन(विप्र धर्म का उत्थान और तत्सम्बन्धी भ्रान्तियों का उन्मूलन लेकर, समर्पण-भाव और समाज सेवा व्रत के साथ विप्रधर्म को सर्वहितकारी प्रस्तुत करने में प्राणपण से तत्पर कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय जी, 'बालकृष्ण' नहीं, योगेश्वर कृष्ण की भाँति थे, जो ब्राह्मण-धर्म का संरक्षण करने हेतु 'कान्यकुब्ज मंच'(त्रैमासिक पत्रिका) का सम्यक् सम्पादन कर रहे थे। यह एक ऐसी मुहिम थी, कि जिससे जुड़े हजारों पाठक सरलता से विप्र-धर्म का यथार्थ परिचय प्राप्त कर रहे थे। इस प्रकार श्रद्धेय पाण्डेय जी ने

''विप्रधर्म-उत्थान की, सरल बनाई राह।
सम्पादन कर मंच का, की सबकी परवाह।।''

वे 'कान्यकुब्ज मंच त्रैमासिक(पत्रिका) के संस्थापक सम्पादक थे। उन्होंने वर्ष 1987 ई0 में कानपुर से उक्त पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया और पत्रिका को लोक हितैषी बनाने और उसे जन जन तक जोड़ने में अथक परिश्रम करते रहे। मुझे प्रथम बार, सन् 1995 ई0 में उक्त तन्वगी,

सारगर्भित के दर्शन हुए थे। उलट पलट कर देखा तो मुझे 'विप्र गीता' जैसी लगी। थोड़ा गहराई से देखा, तो ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई फक्कड़ सम्पादक पत्रिका माध्यम से आधुनिक(घोर नास्तिक व साम्यवादी) वातावरण में, विप्र-धर्म का अलख जगा रहा हों इस अदम्य साहस के समक्ष मैं सादर श्रद्धावनत् था। सोचा यदि इस पर सम्पादक जी को अपनी प्रतिक्रिया न प्रेषित की, जो वह पाठक धर्म का उल्लंघन होगाा। मन में बैसवारीपन घुमड़ने लगा। दो घनाक्षरियों ने जन्म लिया- एक पत्रिका के प्रति और दूसरी घनाक्षरी बैसवारी संस्कृति के प्रति। नया अखाड़िया था, चित हो जाने के अवसर अधिक थे। किन्तु बैसवारी-ठसक मुझे बैठने नहीं दे रही थी। अन्ततः, घनाक्षरी द्वय को पत्रिका कार्यालय में प्रेषित ही कर दिया। यथा-

''असि मसि कौसल, कुलीनता-कथा बखानि,
छबि बैसवारे की दिखायी अपरंच है।
नूतन-पुरातन बिचार बुद्धिमानन के,
'गागर में सागर' प्रयास रंच-रंच है।
ज्योतिष सुधर्म तर्क दर्शन बसाए उर
छलछंद हीन, छाँड़ि सगरे प्रपंच है।
गाथा लिखि गौरव कुलीन कान्यकुब्ज कै,
दर्पण सी पत्रिका 'कान्यकुब्ज मंच' है।।

''भंग की तरंग, मौज, हास परिहास पान,
चुटकी तमाखू काव्य, चाट चटखारे की।
बेद को बखान कहूँ गीता मानस पुरान,
ज्ञान की धरा पवित्र गंगा के किनारे की।
असि महावीर, मसि प्रेम की धरा प्रसिद्ध,

षट्कुल रीति-नीति धर्म-धुजा धारे की।
भारतीय-संस्कृति का उर में बसाए बिम्ब,
भारत का आइना है 'भूमि बैसवारे' की।।''

कदाचित, शीर्षक'-सम्बन्धी घनाक्षरियाँ होने के कारण उन्हें पत्रिका में स्थान मिल गया था। सम्पादक जी ने दोनो घनाक्षरियों को 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका के -ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय-अंक, वर्ष 9, मार्च 1996 अंक में स्थान देकर कृतार्थ किया था। ये मेरी पहली प्रकाशित रचना (घनाक्षरियाँ)थी। यद्यपि इसके पूर्व दोहा चौपाई शैली की दो कृतियाँ(गीता शतक और श्री शिवचरित मानस) प्रकाशित हो चुकी थीं और बाद में भी मेरी अनेक रचनायें शिखरस्थ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही, किन्तु वे कान्यकुब्ज मंच में प्रकाशित उक्त रचनाओं की प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति न दे सकी। धीरे धीरे मैंने कान्यकुब्ज मंच परिवार के एक प्रशंसक-सदस्य का स्थान ग्रहण कर लिया।अनन्तर श्रद्धेय चाचा श्री (पं0 बालकृष्ण पाण्डेय जी) की सदृढ़ स्नेह रज्जु से ऐसा आबद्ध हुआ कि पत्रिका के नियमित लेखक से कहीं अधिक उनका भ्रातृज (परिजन) बन गया। वे पत्रिका के हित में अथवा पत्रिका के सुनिश्चित विशेषांको पर मुझसे चर्चा करने लगे थे। मुझे संकोच होता। तात्पर्य यह है कि वे पत्रिका के हित में छोटे से छोटे व्यक्ति से भी निःसंकोच वार्ता कर लेते थे और सभी को साथ लेकर पत्रिका माध्यम से विप्र-धर्म की सकारात्मक बातों को विस्तार दे रहे थे। पत्रिका उनकी वाणी और आयुध थी। वे न केवल समाजोपयोगी द्विज संस्कारों को प्रोत्साहित करते थे, बल्कि वैदिक रीति से चूड़ाकर्म, उपनयन या विवाहादिक संस्कारों को सम्पन्न कराने में सक्रिय सहायता करते थे। मेरी आत्मजा के विवाह सम्बन्ध को स्थिर कराने में उनकी निर्णायक भूमिका रही। उनकी इस सर्वोच्च औदार्य-भावना, असीम स्नेह और परहित चिन्तन की जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है।

श्रद्धेय पाण्डेय जी में संगठनात्मक शक्ति प्रबल थी। जिसके चलते उन्होंने पत्रिका से अनेक मूर्धन्य विद्वानों को जोड़ा। उन सभी की पाण्डित्य पूर्ण रचनाओं का सहयोग पत्रिका को मिलता रहा। इनमें से कुछ यशस्वी नाम हैं- डॉ0 राम प्रसाद मिश्र, आचार्य सेवक वात्स्यायन, डॉ. बद्री नारायण तिवारी, डॉ0 संकटा प्रसाद पाण्डेय, कविवर धर्मपाल अवस्थी, डॉ0 जीवन शुक्ल, डॉ0 वरूण तिवारी, श्री प्रकाश शुक्ल, श्री ज्योति वाजपेयी, श्री प्रमोद नारायण मिश्र आदि प्रायः शताधिक विद्वान, मनीषी साहित्यकार हैं। राष्ट्रवादी विचारधारा के श्रद्धेय पाण्डेय जी का व्यक्तित्व सौम्य सादगीपूर्ण और स्नेह परिपूरित था। वे सत्य के पक्षधर थे और असंगतियों का विनम्रतापूर्वक सुदृढ़ विरोध करते थे। सत्य के सम्पादन में वे सदैव सजग रहे। विप्र बन्धुओ से उनका सदैव यही आग्रह रहा कि वे समाजोपयोगी संस्कार रीतियों को अपनाने में आगे आयें। विवाह के 'दिवा लगन की प्रासंगिकता, 'पशु पद्धतीय भोज '(बुफे सिस्टम) के दुष्परिणाम अथवा 'अन्तर्वर्णीय (अन्तर्जातीय) विवाह जैसे विषयों पर उनकी स्पष्ट धारणा थी। वे हिन्दुओ को विवाह का दिवा लग्न अपनाने पर जोर देते थे। इसका सीधा प्रयोजन अपव्यय रोकने व मद्य निषेध से था। मांगलिक अवसरों पर दिये जाने वाले पशु पद्धतीय भोजों का वे विनम्रता से विरोध करते थे और अकारण अन्तर्वर्णीय विवाहों को अस्वीकृत कर दिये जाने के पक्ष में भी न थे। इस क्रम उन्होंने उक्त विषयों पर क्रमशः 1997 ई0(सित.-दिसम्बर-संयुक्तांक), मार्च 1998 ई0 तथा 2001 ई0(दिस.'मार्च) के अंकों में विभिन्न लेखकों के विचार भी प्रकाशित किये थे। निश्चय ही उन अंको में सामाजिक महत्व के विषय थे, जिनके कारण वे अंक संग्रहणीय बन गये थे।

कीर्तिशेष पाण्डेय जी आचार्य गरिमा की प्रतिभूति थे। उनकी यह प्राकृत छवि, उनके सम्पादन में भी प्रगट है। उनके द्वारा सम्पादित वात्स्यायनोवाच स्तम्भ पत्रिका स्थायी श्लाघनीय कोण हैं। मानव जीवन के सन्दर्भ में कही गयी ये नीति सूक्तियां, विदुर और चाणक्य नीतियों के समकक्ष है। निष्पक्षता, न्यायप्रियता और अधिकाधिक विचारों का प्रकाशन, उनके द्वारा सम्पादित कान्यकुब्त मंच पत्रिका के प्रत्येक अंक में उपस्थित हैं। पत्रिका के माध्यम से समाज को सचेष्ट करना उनका एकमेव लक्ष्य था। अपने इस सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने प्रायः ढ़ाई दशकों तक अथक श्रम किया। सैकड़ों कान्यकुब्ज परिवारों को पत्रिका से जोड़ा और विप्रधर्म के माध्यम से गर्व हितैषी चिन्तन की आवश्यकता प्रतिपादित की। कान्यकुब्ज प्रतिभाओं का सम्मान अलंकरण करना उनके गौरवशाली परिचय का प्रकाशन करना अथवा सामूहिक संस्कार सम्पन्नता में अपना विशेष योगदान देना-पाण्डेय जी के नियमित और रूचिकर विषय थे। उनका विश्वास था कि वैदिक मान्ताओं से ब्राह्मण धर्म का प्रादुर्भाव हुआ है। यह धर्म शाश्वत, सर्वथा वैज्ञानिक और सर्वहितकारी है। इसकी सदोष व्याख्याएँ-अथवा विप्र कदाचार इस धर्म को खोखला करने में लगें हैं, किन्तु सत्य यही है कि समाज के

लिये मूल ब्राह्मण-धर्म आज भी प्रासंगिक है। पत्रिका को दीर्घ जीवी बनाने का उपक्रम अपने जीवन काल में ही कर लिया था। पत्रिका के रजत जयन्ती वर्ष(2012 ई0) के पश्चात् उन्होंने अपना उत्तराधिकार अपने सुयोग्य पुत्रों को सौंप दिया। प्रसन्नता का विषय है उनके कर्मठ पुत्र क्रमशः श्री विष्णु पाण्डेय और श्री आशुतोष पाण्डेय अपना उत्तरदायित्व बखूबी निभा रहे हैं और कान्यकुब्ज मंच पत्रिका अपने नए तेवरों के साथ सद्य प्रकाशित हो रही है।❐

– 9451645277

वे कहते थे :-

सम्पादक के गुण

- एक अच्छे सम्पादक को अपने व्यक्तित्व और विचारों को पत्रिका पर लाद्ना नहीं चाहिए।

- एक अच्छे सम्पादक का आदर्श मेरे ख्याल से एक 'अच्छा भिखारी' होना चाहिए। जो विनम्र होकर मांगना नहीं जानता, वह अच्छा सम्पादक नहीं हो सकता।

- सीमित साधनों में पत्रिका प्रकाशित करना आसान नहीं। परिश्रम, इच्छाशक्ति, अध्ययनशीलता, श्रव्यता लक्ष्य को आसान कर सकती है।

- जीवन की ऊर्जा, कर्मठता और चिंतन की व्यापकता प्रभावित करती है।

- पूर्वाग्रही, परम्परावादी, दूसरे के विचारों को आत्मसात न करने वाला, वाद-विवाद में पड़ने वाला सफल सम्पादक कैसे हो सकता है ?

- प्रशंसा निश्चित रूप से मुझे बल देती है, मेरा आत्मविश्वास बढ़ाती है।

- प्रकाशन कार्य पूरी तरह व्यवसाय है। उसकी अपनी बाध्यताएँ हैं, किसी लेखक का उससे समरस हो पाना सरल नहीं।

- जीवन केवल जिया ही नहीं जाता, उसे जाना भी जाता है। जीवन को जानने की सतत प्रक्रिया जीवन को अर्थ देती है। अर्थ की खोज में ही जीवन की परिभाषा निहित है।

- नए लेखकों को यह समझना चाहिए कि लेखन कार्य कोई कैजुएल वर्क नहीं है। वह पूर्ण समर्पण चाहता है। यह सौ मील लम्बी दौड़ है।

- प्रतिभा को तलाशना एकांतिक रूप से सम्पादक का काम है। आचार्य द्विवेदी ने यदि प्रतिभाओं को न पहचाना होता तो हमारे पास पुरोधा लेखक नहीं होते और यह काम लघुपत्रिकाएँ, जो देश के कोने कोने से निकल रही हैं, बखूबी कर रही हैं।

- हिन्दी की 90 फीसदी लघुपत्रिकाएँ सम्पादकों-लेखकों के अपने दम् पर निकल रही हैं। ऐसा अब तक और किसी भाषा में नहीं हुआ।

- आजकल के नवजवानों को पता नहीं कितनी जल्दी रहती है। हर काम बस दो मिनट में कर लेना चाहते हैं। दूसरों की सुविधा - असुविधा का इन्हें जरा भी ख्याल नहीं रहता।

- लेखक व पाठक केबीच से संपादक की निजता नहीं रहनी चाहिये।

- राजनीति को अपना काम करने दीजिये। संस्कृति तथा संवेदना के धरातल पर हमें अपना काम करना चाहिये।

- तन,मन, लगन और निष्ठा से किया जाने वाला कार्य सदैव सफल ही होता है।

- पढ़ने का नशा हो। एक डायरी-कलम आपके साथ हमेशा रहे। आवश्यक उद्धरणों तथा मन-मस्तिष्क में आए विचार तुरन्त नोट करें।

- कम से कम दो पेज नियमित लिखने की आदत डालें। सोने से पहले डायरी लिखना अच्छे सम्पादक का विशेष गुण है।

- पत्रकारिता में पूजी और तकनीक से ज्यादा महत्व काम करने वालों का है। पत्रकारिता में बदलाव की गति तेज है। चुनौतियों को अवसर में तब्दील करना, स्वयं को इस तरह से अपडेट रखना, ज्ञानेन्द्रियों को हमेशा सक्रिय रखना जरूरी है।

- पत्रकारिता में प्रामाणिकता के लिए परिश्रम की आवश्यकता है। जिज्ञासा के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान की दोनों की समझ आवश्यक है।

- पत्रकारिता को, जब तक हम मिशन के रूप में नहीं लेंगे, इसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठता रहेगा।

यादों में व्यक्तित्व

– प्रमोद नारायण मिश्र, कानपुर

10 जनवरी 2019 प्रातः काल फोन आया, 'पिता जी आज सुबह नहीं रहे' 'समाचार सुनते ही मन सन्न रह गया। मुंह से निकला क्या? कब? ''सुबह सात बजे''। थोड़ी देर के लिये दिल व दिमाग अचेत हो गया। हमारे जीवन का अचम्भा यही है, जो ध्रुव सत्य है, निश्चित है, उसे सुनकर ही हम अचम्भित हो जाते हैं। अपने आप पर विश्वास नहीं हो पाता। और यही हमारे साथ भी हुआ। थोड़ी देर के लिए हम असहज हो गये थे। यह जानते व समझते हुए भी कि जो जन्मा है, उसी की मृत्यु है। यह जीवन चक्र है। न कभी रूका था, न रूका है, न रूकेगा। प्राणी के जन्म लेते ही उसकी मृत्यु भी जन्म ले लेती है। तथा सदैव उसके साथ रहती है। मृत्यु कब, कहां, कैसे आयेगी-कोई नहीं जान सका।

पं0 बालकृष्ण पाण्डेय जी ने 95 वर्ष की आयु प्राप्त कर महाप्रयाण किया। उनके शरीर को तो मुक्ति मिल गई परन्तु विप्र समाज के लिये अपूर्णनीय क्षति हुई है। वे ब्राह्मण समाज के शुभ चिन्तक थे, सच्चे ब्रह्म हितैषी थे, विप्र समाज सुधारक एवं निस्वार्थ समाज सेवी थे। व्यक्तिगत रूप से सभी के अपने थे। यही कारण है कि उनके शरीरान्त से हम सभी को दुःख पहुँचा है। उनकी छबि एवं उनका नाम आज भी हम सभी के हृदय में, उनके लिए श्रद्धा एवं आदर का भाव उत्पन्न करता है।

पाण्डेय जी से मेरा परिचय, गोलोकवासी हेमशंकर शुक्ल जी के माध्यम से 1997 में हुआ। उसी के साथ हम कान्यकुब्ज मंच'' पत्रिका से सम्बद्ध हो गये। कुछ ही समय में पाण्डेय जी से हमारा जुड़ाव अंतरंग हो गया। मैं उन्हें बड़े भाई (दादा जी) कह कर सम्बोधित करने लगा। साथ ही मैने दादा जी को बहुत ही नजदीक से देखा व समझा। दादा जी का सरल स्वभाव, सादगी भरा जीवन, समाज के प्रति समर्पण, नैतिक मूल्यों के प्रति दृढ़ता, अनवरत, पत्रकारिता वास्तव में अनुकरणीय व्यक्तित्व था। इसीलिये जो मिला जुड़ता चला गया। मेरे लिये तो वह प्रेरणा पुरूष बन गये।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के यर्थाथ का चित्रण उसके व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन तथा उसके नैतिक मूल्यों से होता है।

दादा जी व्यक्तिगत रूप से कर्मठ थे। अनुशासनात्मक जीवन जीते थे। खान-पान, पूजा-पाठ, लेखन-अध्ययन सब कुछ समय बद्ध तथा सही तरीके से इन सब में सबसे विशेष बात प्रातःकाल लगभग (11 व 12) बजे तक मौन व्रत का पालन करते थे। अत्यंत सादगी से रहना उनकी विशिष्टता थी।

एक खद्दर की धोती, बण्ड़ी, कुरता और साधारण चप्पल। बगल में दबाय एक थैला भरा साहित्य कान्कुब्ज मंच के लिये। पैदल चलना उनका स्वभाव था। अति सरल सच्चे एवं ईमानदार पुरूष थे।

दादा जी पारिवारिक जीवन में एक कुशल गृहस्थ थे। तथा गृहस्थ जीवन में रहते हुए विरक्त थे। परिवार को उत्तम संस्कार दियें। फ्लस्वरूप लड़के संस्कारवान एवं सदाचारी हैं। डॉ0 जीवन शुक्ल ने कई मंचों पर इस बात की पुष्टि की है।

दादा जी धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के धनी थे। उन्होंने अपने अन्दर की प्रतिभा को पहचानकर उसे उजागर किया तथा 'कान्यकुब्ज मंच के माध्यम से समाज के लिए समर्पित थे। सामाजिक परम्पराओं को महत्व देते हुए कुरीतियों के खिलाफ दृढ़ता से आवाज उठाई। सामाजिक गोष्ठियों का आयोजन कर आपसी विचार-विमर्श को अधिक महत्व देते थे। परन्तु स्वयं बोलने के बजाय दूसरों को सुनना अधिक पसन्द करते थे। दादा जी तमाम विशेषताओं से अलग उनकी एक अदृश्य विशेषता थी जो उन्हे साधारण मनुष्य से अलग करती है। वह है- कठोरतम आलोचना व्यक्तिगत रूप से देखा व सुना है। जीवन के तमाम उतार-चढ़ाव में नितांत संयमित रहे। और इसी शक्ति के साथ अग्रज की भूमिका में रहे।

दादा जी दूसरों के सम्मान को वरीयता देते, परन्तु स्वयं मंच और माला से परहेज करते थे। 'कान्यकुब्ज मंच के तत्वाधान में अनेक यशस्वी साहित्यकारों, लेखकों, कवियों समाज सेवियों तथा विद्वानों को सम्मानित किया। इन्हीं विभूतियों के साथ लेखक का छोटा सा नाम भी जुड़ चुका है। और मुझे वह बात वह क्षण स्मरण हो आया है जिसे सुनकर

सभी भावुक हो जायेंगे। बात 2014 की है। एक दिन मैं दादा जी से मिलने गया था। कमरे के बाहर बरामदे में बैठे दादा जी कुछ पुराने पन्ने पलट रहे थे। मैने चरण स्पर्श किये और बैठते ही बातों का सिलसिला चल पड़ा। इसी दौरान दादा जी ने मेरे हाथों को अपने हाथ में लेकर बड़ी ही गम्भीरता से मेरी तरफ देखते हुए कहा, ''प्रमोद जी, मेरे मरने से पहले क्या आप मेरी एक इच्छा पूरी नहीं कर सकते''। उनकी तरफ देखते हुए, उनकी बात सुनते ही मेरी आँखें ड़बड़बा आई और मैने सर झुका कर उनकी बात के लिये हाँ कर दी। उस दिन ये बात दादा जी ने इसलिए कही थी, क्योंकि मै अपने सम्मान के लिये उनके अनुरोध को मना कर देता था। मै कान्यकुब्ज मंच का ह्रदय से हितैषी हूँ परन्तु एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में अंततः मै उनका आर्शीवाद ही चाहता था।

दादा जी की अस्वस्थता के कारण, वह काफी कमजोर हो गये थे। अतः बाहर का आना जाना बन्द था। इसे देखते हुए मेरे सम्मान का कार्यक्रम घर पर ही आयोजित हुआ। कार्यक्रम में कई विशिष्ठ लोगों के साथ-साथ दादा जी ने मेरे पुत्रों एवं बहुओं को तथा मेरे समधी जी को भी आमंत्रित किया। दादा जी के कर कमलों द्वारा प्रदान की खद्दर की धोती मेरे जीवन में सबसे मूल्यवान है।

दादा जी आज आप हमारे बीच नहीं हैं। परन्तु आप का अपनत्व, आप का कृतित्व और आपका व्यक्तित्व हमारे लिये प्रेरणा है तथा हमारा मार्ग दर्शन करता रहेगा। आप की यादों को हम भुलाने से भी नहीं भूल पायेंगे। और अन्त मे ह्रदय से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कवितांजलि प्रणाम करता हूँ।

बालकृष्ण- बालकृष्ण- बालकृष्ण के लिए।
कान्यकुब्ज मंच है, समाज विप्र के लिये।।
एकता समाज की, शक्ति है समाज की।
समाज साथ एक हो, तो शक्ति ब्रह्म विप्र की।।
समाज के लिये जुड़े, समाज के लिये खड़े।
समाज शक्ति जोड़ने, बालकृष्ण थे अड़े।।
समाज को समाज से, समाज जोड़ते रहे।
कान्यकुब्ज मंच पर, खड़े दहाड़ते रहे।।
समाज की दशा बदल, समाज को दिशा दिये।
समाज के विकास को ही, मुख्य मानते रहें।।
नमन करूं मै आप को, मेरी यह श्रद्धांजलि।
कोटि प्रणाम करूं अर्पित, छोटी सी कवितांजलि।।

–6393765967

फड़के जी ने बनाया लेखक

वर्ष 1944-45, कानपुर के सेवा सदन स्कूल में अध्यापन करता था। बाल आंदोलन के प्रणेता शिक्षाविद आचार्य कृष्णविनायक फड़के मारवाड़ी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य थे। मार्च, 1945 की बात है प्रधानाचार्य जागेश्वर वाजपेयी से मिलने सेवा सदन आये। उन्हें किसी ऐसे युवा की तलाश थी, जो पढ़ने में रुचि रखता हो। वाजपेयी जी ने मेरी भेंट कराई। फड़के जी ने पूछा, 'स्कूल के बाद क्या करते हो?' 'ट्यूशन', मैंने कहा। स्कूल समय के बाद मैं 10-10 रुपये के दो ट्यूशन करता था। 20 रुपये मिलते थे। फड़के जी ने 30 रुपये दिए। मैं रोज शाम को सिविल लाइंस उनके निवास पर जाता। कहानी पढ़कर सुनाते, कहानी और लेखों की समरी बनाते। फाइल में रिकार्ड करते। कुछ महीने बाद ही कचहरी के सामने बाल भवन का सेक्रेटरी बना दिया। लोकेश्वर नाथ सक्सेना, लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, नारायण प्रसाद अरोड़ा, मानवती आर्या, पातीराम भट्ट, गंगाप्रसाद शास्त्री, पुरुषोत्तम पंडितजी आदि से सम्पर्क रहता। अखिल भारतीय बाल विद्यापीठ का परीक्षायोजक, रजिस्ट्रार बना। बाल संघ में बैठकें होतीं। बैठकों की मिनिट्स तैयार करना, प्रेस नोट बनाना, पत्राचार आदि का उत्तरदायित्व मिला। मन लगाकर काम करने लगा। भूख लगती तो मंगली हलवाई की दुकान पर दो आने की चार पूड़ी - सब्जी (देशी घी की) खा लेता। पढ़ने का शौक पहले से ही था। फड़के जी की प्रेरणा से लिखना भी शुरू कर दिया।

राष्ट्रीय मोर्चा समाचार पत्र में बालकृष्ण पाण्डेय, विशारद के नाम से हर हफ्ते लेख छपते। 'बाल जगत' पृष्ठ मेरे सुपुर्द था। क्रांतिकारी सुरेन्द्र नाथ भट्टाचार्या 'प्रताप' के सम्पादक थे। 'बाल मित्र की चिट्ठी' नियमित छपती। 'बाल-मित्र' की पदवी मिली। बाल शिक्षा, बाल प्रवेश, बाल हित विशारद, बाल साहित्य विशारद की परीक्षाएं पास कीं। मानवती आर्या बालसाहित्य विशारद में सहपाठी थीं। बाल साहित्य में रुचि जागृत हो गयी। बाल साहित्यकार के रूप में पहचान मिली। बाद में 'बाल निकेतन' संस्था की स्थापना की। 1960 ई. किदवई नगर के नव निर्मित मकान में 'नन्हे-मुन्नों का स्कूल' चलाया। जिन्होंने आज प्ले स्कूल के नाम से व्यवसायिक रूप ले लिया है। गोपीनाथ दीक्षित, गुरुप्रसाद अवस्थी, गंगाशंकर मिश्र, शिवाकान्त वाजपेयी, मेहराजी आदि का सहयोग मिला। किरण, आभा, मुनन को शिशु शिक्षा वहीं मिली। 1964 में नन्हें मुन्नों का स्कूल बंद करना पड़ा।

सच्चे ब्राह्मणत्व से ही होगा समाज का कल्याण

-डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी, कानपुर

आचार्य पं0 बालकृष्ण पाण्डेय जी नहीं रहे। अपनी मधुर स्मृतियां हम लोगों के पास छोड़ गए। उनमे ब्राह्मणत्व, सामाजिक जैसे विषयों पर प्रायः गहन चर्चा होती रहती थी। ब्राह्मण के पास, शुचिता-पवित्रता, बुद्धि-कौशल, विद्या, सदाचरण, विवेक, त्याग और तपस्या का अपार आगार है। क्या आज ब्राह्मण में यह गुण हैं ? यह विचार आज महत्वपूर्ण है। श्रद्धेय पाण्डेय जी इन प्रश्नों के सापेक्ष व तुलनात्मक दृष्टिकोंण से बेबाक उत्तर देने में सक्षम थे।

पाण्डेय जी कहते थे ब्राह्मण की मुख्यता तो उसके बुद्धि-विकास में ही है। बुद्धि और ज्ञान की श्रेष्ठता के बल पर ही वह अन्य जीवों पर नेतृत्व करता आया है। इस मानव जगत में पेट-पूजा-प्रजनन तक ही सीमित रहने वाले अनेकानेक लोग हैं। यह पशु-योानि की कोटि से ऊपर नहीं उठ पाए हैं। बुद्धि का समुचित विकास न होने के कारण समाज में छोटा-मोटा कार्य कर पाते हैं। यह लोग मुख्य रूप से कठिन शारीरिक श्रम करते हैं। परिश्रम द्वारा शारीरिक तप ही इनकी विशेषता है।

समाज में दूसरा वर्ग ऐसे सज्जनों का है, जो श्रम तो करते हैं, पर बुद्धि-बल का भी उपयोग करते हैं। उनका लक्ष्य मात्र अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के निहित रहता है। कुछ आवश्यकता की पूर्ति के साधन एकत्रित करते हैं तो कुछ व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन तक सीमित रहते हैं।

इसी क्रम में एक तीसरा वर्ग भी है जो पहले की अपेक्षा बुद्धि और बल दोनों से सर्वाधिक कार्य लेते हैं। यह समाज-रक्षा का उपाय सोचते और शारीरिक बल से स्वयं रक्षा करते हैं। समाज में प्रत्येक की कुटिलताओं की समुचित जानकारी रखना, समय पर सचेत रहना, शरीर बल से राष्ट्र और समाज की रक्षा करना, अस्त्र-शस्त्र का भी प्रयोग करना उचित समझते हैं।

समाज में इन तीन वर्गों के अलावा एक चौथा वर्ग भी है, जिसमें दो तत्वों की प्रबल-प्रधानता है- 1. ज्ञान व बुद्धि का चरम उत्कर्ष, 2. दूसरों के परोपकार व भलाई के लिए ज्ञान का उपयोग। यही ब्राह्मण वर्ग है, जिसमें मानवता का चरम विकास परिलक्षित होता है।

आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय इसी ब्राह्मणत्व के संदर्भ में कहते थे- ब्राह्मण को न आयु, प्राण, पशु, प्रजा और न धन-कीर्ति की आकांक्षा है। उसका मुख्य लक्ष्य विद्या की प्राप्ति है। समष्टि दृष्टि से जो बुद्धितत्व 'द्यी' के रूप में सर्वत्र समाहित है, सूर्य देव का जो तेज व्याप्त है, उसको पहचान लेना और उसके साथ अपने बुद्धितत्व को मिला देना अर्थात् योग को प्राप्त कर लेना ही उसके ध्यान का चरम बिन्दु है। वस्तुतः यह स्थिति चिन्तन और मनन से भी ऊपर की है।

ब्राह्मण तेजधारी विचारशील तो होता ही है, इसके भी ऊपर वह प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। वह ब्रह्मतेज से युक्त होकर अपनी गतिशील स्थिति द्वारा सर्वत्र परिस्थिति को प्रभावित करता है। ब्राह्मण के सम्पर्क में आने वाले बन्धुजन उसके प्रकाश का अनुभव करते हैं और इधर-उधर चलने के लिए उन्मुख होते हैं। दिव्यता का प्रादुर्भाव और उसका प्रभाव ऐसा ही होता है। भारतीय संस्कृति में इसे ब्राह्मी वृत्ति का सम्पादन कहा गया है। मनु महाराज ने इसकी प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, व्रत-उपवास, होम, त्रयी, इज्या, सुत, महायज्ञ, रूप साधनों का वर्णन किया है। दैनिक अग्निहोत्र करना, इन्द्रिय संयम, ज्ञान-कर्म-उपासना में रत रहना, व्रत-उपवास करना, गृहस्थ-धर्म का पालन, संतति का प्रसव, पंच महायज्ञ करना और सम्पूर्ण जीवन को यज्ञमय ही बना देना ब्राह्मणत्व प्राप्ति के साधन बताए गए हैं।

- सम्पादक, 'जयतु हिन्दु विश्व' (9235511083)

कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय का सामाजिक तौर पर आचार्य कृष्णविनायक फड़के, लाला भगवती प्रसाद गुप्त आदि के साथ बाल संघ, बालसेवक बिरादरी, बाल निकेतन, बाल दर्शन बाल आंदोलन में बच्चों के अधिकारों तथा साहित्य के द्वारा बाल लोरी, बाल कहानियों, पहेलियों, बूझो तो जाने, प्रेरक लेखों, बाल समस्याओं, बाल श्रमिकों, शिशुपालन, किशोरावस्था की समस्याओं पर शोधपूर्ण रचनाएं लिखीं। 'नन्हे - मुन्नों का स्कूल' चलाया।

समाज की प्रतिनिधि पत्रिका

सांकृत श्रीराम शुक्ल, पण्डित बृज बिहारी अवस्थी, पण्डित रामेश्वर दयाल मिश्र आदि के सानिध्य में 'कान्यकुब्ज मंच' की नियमित गोष्ठियां होतीं। बैठक की पूरी कार्यवाही रजिस्टर में नोट की जाती। वर्ष 1987 में त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन के लिए भारत के समाचार पत्र पंजीयक कार्यालय, नई दिल्ली को पांच शीर्षकों के साथ घोषणापत्र कानपुर कचहरी के मार्फ़त भेजा। कचहरी में अधिकारी श्री मिश्र का सहयोग मिला। 'कान्यकुब्ज मंच' शीर्षक स्वीकृत हुआ। 'गांठ में नहीं आने- अम्मा चली भुनाने।' लोगों की विभिन्न प्रतिक्रियाएं। हतोत्साहित ज्यादा किया गया। प्रकाशन कार्य पूरी तरह व्यवसाय है। उसकी अपनी बाध्यताएँ हैं। किसी लेखक का उससे समरस हो पाना सरल नहीं। जेब में पैसा न होने के बावजूद सिर्फ इच्छाशक्ति से कार्य कैसे सम्पन्न किया जा सकता है? अर्थ के नाम पर नियमित पेंशन व व्यक्तिगत व्ययों का नियोजन सम्बल बना। प्रकाशन के पीछे एक विशिष्ट दृष्टि रही। वृहत्तर दायित्व के निर्वहन को संकल्पित व समर्पित।

पहले अंक का विमोचन कार्यक्रम डॉ सोमनाथ शुक्ल, पं बृज बिहारी अवस्थी, पं गोरेलाल त्रिपाठी आदि की समुपस्थिति में 30 मई, 1987 कार्यालय 20- बी ब्लॉक किदवई नगर की छत में ही सम्पन्न हुआ।

संकलनीय, संग्रहणीय विशेषांकों की श्रंखला

- साहित्यकार अंकः डॉ बद्री नारायण तिवारी, शिवाला, कानपुर
- खजुहा अंकः डॉक्टर जीवन शुक्ल, कन्नौज
- बैसवारा अंकः डॉ उमाशंकर शुक्ल 'उमेश', फूलपुर,
- बिहार राज्य अंकः स्मृतिशेष प.शशांक शेखर मिश्र (आईपीएस),भागलपुर।
- रूढ़ि परंपरा पुनर्विचार अंकः पं. बालकृष्ण राव, जयपुर
- विवाह अंक, वधू प्रतिष्ठा अंक, परिवार अंक, संस्कार अंक, लोक संस्कृति विशेषांक, महिला, वृद्धावस्था, मृत्यु विशेषांक, कोलकाता विशेष, कानपुर विशेष आदि।

रचनात्मक एवं सर्जनात्मक पत्रकारिता सम्मान

- डॉक्टर बद्री नारायण तिवारी (कानपुर)
- डॉक्टर रमेश मंगल वाजपेई (सीतापुर)
- डॉक्टर जीवन शुक्ल (कन्नौज)
- डॉक्टर उमाशंकर शुक्ल 'उमेश' (फूलपुर)
- पंडित बालकृष्ण राव (जयपुर)
- स्मृतिशेष हेमशंकर शुक्ल (कानपुर)
- स्मृतिशेष राम कृष्ण तैलंग (कानपुर) ❒

शिक्षकों का जेल भरो आन्दोलन

1967-68 में उप्र माध्यमिक शिक्षक संघ के आंदोलन में ज्ञान भारती एम एस इंटर कॉलेज, कानपुर के 9 अध्यापक दिसम्बर 1968 में एक महीने लखनऊ आदर्श कारागार के बी क्लास में बन्द रहे। चित्र में बायें से -श्री रघुनन्दन सिंह, डॉ रघुनाथ प्रसाद गुप्त, श्री बालकृष्ण पाण्डेय, डॉ सोमनारायण शुक्ल, श्री राजेन्द्र नारायण दीक्षित, श्री गोरेलाल त्रिपाठी, श्री हरिकिशन श्रीवास्तव, श्री रामलाल गुप्त व श्री रामचन्द्र शर्मा।

माँ वासन्ती पाण्डेय स्मृति महिला-सम्मान

- 02-01-2005 : उद्यमी महिला श्रीमती सरिता द्विवेदी, अध्यक्षता : श्रीमती सरोजनी त्रिपाठी, मुख्यआतिथि : श्री रमेश नारायण त्रिवेदी, आई ए एस, स्थान : अन्नपूर्णा गेस्ट हाउस, गोविंद नगर, कानपुर।
- 26-01-2006: लोककला पोषिका 'चिकितुषि' की संचालिका डॉ पूर्णिमा तिवारी, अध्यक्षता : डॉ प्रेम मिश्रा, मुख्य अतिथिः रिटायर्ड एयर चीफमार्शल रमेश चन्द्र वाजपेयी, स्थान : सिटी क्लब, जी टी रोड, कानपुर।
- 20-05-2006: अन्तर्राष्ट्रीय लोकगायिका मालिनी अवस्थी, अध्यक्षताः प्रो. सरला शुक्ला, मुख्य अतिथिः पूर्व मुख्य आयकर आयुक्त प. धरनीधर त्रिवेदी, स्थानः बी एम शाह प्रेक्षागृह, गोमती नगर, लखनऊ।
- 13-01-2008: डॉ प्रेमा मिश्रा, डी. लिट्.(चित्रकला), अधयक्षता = प. अमरनाथ मिश्र (लखनऊ), मुख्य अतिथिः डॉ इंदुनारायन वाजपेयी, स्थानः तिवारी स्वीट्स, बिरहाना रोड, कानपुर।
- 19-07-2009: भरतनाट्यम कलाकार पल्लवी त्रिवेदी, अध्यक्षताः पुलिस महानिदेशक महेश चंद्र द्विवेदी, मुख्य अतिथिः न्यायमूर्ति श्री डी के त्रिवेदी, स्थानः उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ।
- 09-05-2010: समाजसेविका प्रभा पाण्डेय, अध्यक्षता = प. रामबालक मिश्र (एडवोकेट), मुख्य अतिथि = श्रीमती पद्मा शुक्ला, विशिष्ट : डॉ गीता मिश्रा स्थानः वी एन एस डी शिक्षा निकेतन, कानपुर।
- 28.08.2011 लोकगीत गायिका श्रीमती सीतारानी वाजपेयी, अध्यक्षताः पं. लक्ष्मीकांत तिवारी, मुख्य अतिथि पूर्व पुलिस महानिदेशक पं. रामकृष्ण त्रिवेदी, स्थानः कान्यकुब्ज सभागार, कोलकाता।
- 20.05.2014 कवि, चित्रकार डॉ प्रेमकुमारी मिश्रा, अध्यक्षताः डॉ विजय लक्ष्मी त्रिवेदी, मुख्य अतिथिः डॉ अवध दुबे, स्थानः श्री ओंकारेश्वर कॉलेज, कानपुर।

माँ कस्तूरा स्मृति वृद्धा सम्मान

- 16-09-1993 : श्रीमती मनोरमा अवस्थी (पत्नी - कीर्तिशेष प. शिवगोपाल अवस्थी)
- 21-10-1994 : खजुहा फतेहपुर जाकर डॉ जीवन शुक्ल के निवास पर ब्रह्मलीन सांकृत श्री राम सुकुल के सानिध्य में 104 वर्षीया माता रामेश्वरी शुक्ला (धर्मपत्नी : स्मृतिशेष प. उमादत्त शुक्ल)
- 08-09-1996 : 80 वर्षीया श्रीमती सरला मिश्रा (पत्नी ब्रह्मलीन प. हरिशंकर मिश्र)
- 21-06-1998 : श्रीमती मनोरमा शुक्ला (धर्मपत्नी :
- स्मृतिशेष प. उमादत्त शुक्ल)
- 19-03-2000 माता भाग्यवती शुक्ला (धर्मपत्नी खजुहागौरव सांकृत श्री राम सुकुल)
- 18-02-2001 : श्रीमती कमला मिश्रा, भगवंतनगर,

SHANKAR LAL RISHI KUMAR
85, Moti Bazar, Chandni Chowk, Delhi-6
Phone : 011-23287415

R.D. Tiwari
Mob. : 9871413500

Shawl Merchants
RAJ EMPORIUM
81/7, Moti Bazar, Chandni Chowk, Delhi-6
All kinds of Showl, Kashumiri Dushala & Dhussas
are available here at reasonable price

परिजनों की स्मृति में

हमारे बुज़ुर्ग

हमारे बुज़ुर्ग गुज़रते हैं तो किताब
बन जाते हैं
किसी कोर्स की किताब नहीं !
पैसा कमाने की, भौतिकी की,
चटपटे किस्सों की भी नहीं.
किताब के कई पन्ने
पीले हैं, फटे हैं
नैरेटिव इधर फीका है,
वर्तनी उधर गलत है
बल्कि क्लाइमेक्स तो उफ़ ! इतना बोरिंग
पुरानी किताब गुज़रती हैं तो चैप्टर बिखर जाते हैं
जिल्द चढ़े- संशोधित- थ्रिल से लबरेज़ चैप्टर
किताब बनने की कवायद में-
पैसा कमाने की, भौतिकी की, चटपटे किस्सों की !

ख़ैर, किताब को तहखाने में मत रखना,
या संदूक, या ऊँची किसी अलमारी में भी नहीं
पास में पड़ा रहने देना, और ज़रा उलट-पलट लेना-
कभी शाम की चाय पर, या फ़्लाइट की क़तार में,
या जब कभी थक जाओ पढ़ते और किताबों को-
पैसा कमाने की, भौतिकी की, चटपटे किस्सों की ! ❑

– अंकुर पाण्डेय, मुम्बई (पौत्र)

अनगिनत यादें

तो आप चले गए, छोड़ गए एक दास्तान। आज आप का संदूक खुला था। बाहर कुनकुनी धूप में बैठकर उन पन्नों को दोबारा खोला गया था। जाने कितने अरमानों से आपने हर किताब पर गिलाफ चढ़ाए थे। हर किताब के अंदर लाइन - अंडरलाइन की हुई अनेकों बातें हैं जो खुद में ही अपनी दास्तां बयां करती हैं। आज फिर उन किताबों का ढेर निकाला, उनको दोबारा जमाया। 1940 से 2019 तक के लेख आज सारे इकट्ठा किए। कहां से शुरू करो और कहां खत्म, समझ नहीं आ रहा? उन भूरे पीले पन्नों को देख कर आज मेरी आंखें यूं ही नम हो गईं। एक शब्दकोश भी मिला है। 1935 में लिखा गया होगा। ज्ञान का संसार अमर है। कहते थे आप मेरे जाने के बाद मेरी किताबों को संभाल कर रखना। उन्हें मेरी तरह गंगासागर में मत बहाना। चार पुत्र, चार पुत्र वधू, आठ पोते, चार पोता बहु, दो पुत्रियां उनका परिवार सब को बस एक भेंट देकर गया आपका ज्ञान रत्न। ज्ञान का संसार संभालेंगे...। चिंता ना करिएगा। उन पीले पन्नों पर जो स्याही लिखी है उन्हें अपनी जान में तो हम ना मिटने देंगे। बहुत अच्छे से, करीने से, कायदे से हर किताब को खोल के बंद करके संभाल के ऊपर वाली अलमारी पर बढ़ा दिया है कि जो भी कानपुर आए एक बार ही सही उन किताबों को पढ़ आपके त्याग समर्पण और ज्ञान के भंडार पर नजर दौड़ाए। पता है आपको? आज कुछ पुरानी तस्वीरें भी मिली है जिन्हें देखकर हमारे घर के बड़े जो कि आपके बच्चे हैं, मन से मुस्कुराए, जाने कितनी कहानियों के सागर में गोते लगाए और हमें सुनाने लगे अपनी और आपकी दासता यह वक्त का ही तो फेर है। कल को आज, आज को कल बना देगा। पर सराहनीय है आपने कितनी हिफाजत से रिश्ते-नाते, संस्कार सब को संभाला। उन लेखकों की रचनाओं को संभाल उन लेखकों को अमर किया। ऊपर से तो आपने देखा होगा नहीं। नहीं अभी 13 दिन पूरे नहीं हुए हैं अभी तो आप का वास घर ही में है ना। घर के कोने कोने में अभी तो आप है ना। अच्छा तो लगा ही होगा आपको। कैसे आपके चारों पुत्र मिलकर आपकी धरोहर को संभाल रहे थे। गुस्सा मत होइएगा। मैंने भी दो किताबे ली है। इतनी अच्छी हिंदी तो आती नहीं पर अपनी रुचि अनुसार उन दो किताबों को पढ़कर आपका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। आपने कहा था मुझे, क्या आपको पता है हमारे पास वेद पुराण हैं। आप कहिएगा इनसे। अरे संदीप, जरा इनको वह किताब दिखाइए। बाबा आप ही ने तो सिखाया था कि कोई लेख अगर अच्छा लगे तो उसको काटकर अपनी डायरी में रख लीजिए। आज अनगिनत लेख मिले हैं और आप की अनगिनत यादें...। ❑

– ऋचा-अक्षत पाण्डेय (पौत्रवधू)

परिजनों की स्मृति में

हमारे गुगल थे बाबा

हम कैरियर बनानें की चाह में और दुनिया की होड में 'गुगल' के जाल में ही उलझे रहे, और बुढ़ल बाबा देह त्याग परलोक चले गए...। वहाँ भी धोती के एक कोने को मुँह में चबाते हुए तन्मयता के साथ कलम दवात लिए कोरे सफेद कागजों को रंग रहे होंगे। स्याही तो अधिकतर काली ही होती है, लेकिन घोर आशावादिता, सकारात्मकता का पुट लिए आपकी लेखनी की रोशनी कितने ही व्यक्तित्वों, परिवारों, समाज और राष्ट्र की कालिमा मिटाने को तत्पर रहती। झोले में दो पुस्तकें डाले आपने कितने ही मोहल्ले से लेकर, गांव, शहर, प्रान्त और तीरथ अपने ग्यारह नम्बर की गाड़ी से नापे।

इस लोक में ख्याति प्राप्त कर शताब्दी के नजदीक पहुँच सोने की सीढ़ी चढ़कर ही माने। बेटे, पोते, परपोते सबको अपने स्नेह से सींच, टोपी लगाए मुस्कराते चेहरे के साथ 10 x10 के कमरे से निकल, चौरासी हजार योनियों को पार कर, जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो, परमात्म में लीन देवतुल्य देव बन गए।

ये वो ही थे जिन्हें कोई साहित्य में 'प्रेमचन्द्र', कोई 'विद्यालय में' 'काका पांडे', कोई मुहल्ले में 'विनोवा भावे' कहता। हिन्दी साहित्य में जाने कितनी रचनाएं की उन्होंने। 'माँ कस्तूरा' उनका एक ऐसा रेखाचित्र है, जिसे जब भी पढ़ो, मन को छू ही जाता है। अपनी माँ की कंगनों की दास्तान उनके लब्जों पर मरते दम् तक रही।

एक छोटे से गांव में जन्मे, गरीबी को बहुत करीब से देख, अखाड़े की मिट्टी में लोट, सीवीएस स्कूल में अध्यापन (अटल जी के पिता श्री कृष्णबिहारी वाजपेयी के सानिध्य में) किया। शुरुआत कर कलम की ताकत को किसी ने समझा और आजमाया तो वो किदवई नगर के पाण्डेय जी ही थे। मिट्टी की झोपड़ी से सफर जो शुरू हुआ, उन्हीं के भारत के तीन से ज्यादा राज्यों में मकान हैं। हमारे जीवन में यदि कुछ सकारात्मक है, तो वो बाबा का सिखाया ज्ञान और जीवन का सिद्धांत। बावजूद इसके कैरियर की होड़ में हम बूढ़ल बाबा के कई अनुभवों से अछूते रह गये। ❐

-अक्षत पाण्डेय, इंदौर (पौत्र)

पुस्तक प्रेमी बाबा

क्रिकेट में मुझे बहुत रुचि कभी नहीं रही। जहां अमूमन कई रिटायर्ड बुजुर्ग धूप सेक कर और गप्पेबाजी में अपना समय व्यतीत करते हैं, आप किताबों में बिज़ी रहा करते। एक कर्मठ साहित्यकार होने के नाते आपको इस बात का पूरा संज्ञान था कि एक लेखक को तरह-तरह के दृष्टिकोण से परिचित रहना चाहिए इसलिए टेबल पर कई अख़बार, कई किताबें हमेशा बिखरी रहतीं, जिन्हें आप पढ़ कर, टटोल कर, कुछ सार्थक विचार अपनी मैगज़ीन के ज़रिये साझा करते।

पुस्तक प्रेमी होने के नाते ज़ाहिर सी बात है आपके पास एक अच्छा-ख़ासा पुस्तकालय भी था - जब मैं छोटा था और कभी गर्मी की छुट्टियों पर या वीकेंड पर जब कानपुर जाना होता, तो बजाय क्रिकेट वगैरह के, उन्हीं किताबों और उसी पुस्तकालय में मैं भी दिन भर घुसा रहता।

स्पिरिचुअल (आध्यात्मिक) या धार्मिक लिटरेचर तो थोड़ा कम पल्ले पड़ता इसलिए बाकी जो भी मतलब का मिलता, उसे मैं पढ़ता था। उम्र में अपार अंतर होने के बावजूद आप मेरे प्रश्नों या तर्कों को गंभीरता और धैर्य के साथ सुनते।

मुझे आज भी याद है कि पुस्तकालय में मैंने एक बार कुछ सोवियत पत्रिकाएं पाईं - ये पत्रिकाएं सोवियत नारी सशक्तिकरण और उनके समाज के बारे में थीं - और शायद यहीं से मुझे रूसी भाषा और पूर्वी यूरोप के समाज के बारे में जिज्ञासा जागी। संकीर्ण सोच और छद्म प्रगतिवाद (फेक प्रोग्रेसिव्नेस) - दोनों से आप को घृणा थी, और बजाय रूढ़िवादिता के, दुनिया के बारे में और जानने-समझने को आपने हमेशा बढ़ावा दिया।

जब मैंने उर्दू सीखनी चाही, तो न केवल आपने बढ़ावा दिया और लिखना सिखाया, बल्कि खुद हाथ पकड़ कर अपने 75-80 वर्षीय मित्र से भी भेंट कराई जिन्होंने मुझे उर्दू सीखने में अच्छी-खासी मदद की। आप अध्यापक रहे इसलिए किसी के टैलेंट को या रूचि को आपने न केवल समझा, बल्कि उसे और सींचा और प्रोत्साहित भी किया। बाबा, आज आप भले हमसे दूर हैं लेकिन आपकी सीख, आपकी बातें, आपकी कर्मठता, हमेशा मेरे साथ रहेंगी।❐

-अर्चित पाण्डेय, गुरुग्राम (पौत्र)

परिजनों की स्मृति में

शिक्षक के सच्चे स्वरूप को जिया और साकार किया

जीवन को प्रभु का प्रसाद सा
ग्रहण किया, आभार किया,
शिक्षक के सच्चे स्वरूप को
जिया और साकार किया

कोई वाहन नहीं चलाया
क़दमों से नापे रस्ते,
चार कोस विद्यालय आना
जाना था हँसते हँसते।
धोती, कुर्ता, सदरी, टोपी
में हर मौसम पार किया।
शिक्षक के सच्चे स्वरूप को....

सीधा सादा जीवन यापन
ख़र्च फ़िज़ूल नहीं कोई,
सीख बचत की ऐसी दी
कि पाया भूल नहीं कोई।
रीति रिवाजों से समझौता
किन्तु न एकौ बार किया।।
शिक्षक के सच्चे ....

रामचरित मानस की प्रेमी
पत्नी धर्म परायण थीं,
साल मे लगभग एक बार,
होती अखण्ड रामायण थी।
सदाचरण का सद् उदाहरण
हम सब को सौ बार दिया।
शिक्षक के सच्चे ....

सालगिरह, शादी, जनेऊ
या फिर तिथि हो मुण्डन की,
एक एक की नोट किए थे
अपने सारे परिजन की ।
भूल हुई यदि कभी किसी से,
उसको तुरत सुधार दिया।
शिक्षक के सच्चे ....

हुए रिटायर थके नहीं पर
कर्म योग के हरकारे,
कान्यकुब्जियत बची रहे
ऐसे विचार मन में धारे ।
शुरू किया पत्रिका प्रकाशन
स्वयं प्रचार प्रसार किया।
शिक्षक के सच्चे ....

लेख, आवरण, भाषा, शैली
सोच समझ कर चुनते थे,
किंवदंतियों से पुरखों की
नई कहानी बुनते थे।
आलोचना करे कोई तो
करे, नहीं प्रतिकार किया।
शिक्षक के सच्चे ......

मितव्ययी होकर भी बच्चों
को उत्साहित करते थे,
टाफी कम्पट का लालच
देकर प्रोत्साहित करते थे।
आने शाने आने शाने
बोल बोल दुलार किया।
शिक्षक के सच्चे ....

जीवन के अन्तिम पड़ाव तक
सबका हाल चाल लेते ,
जितना संभव स्वागत करते
अपना कष्ट टाल देते।
भर झोली आशीष अन्त तक
सबको बारम्बार दिया ।
शिक्षक के सच्चे ....

कर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ और
धर्मनिष्ठ थे फूफा जी,
सदाचार का पाठ पढ़ाते
गुरु वशिष्ठ थे फूफा जी,
सादा जीवन संस्कार में
ऐसा उच्च विचार दिया।
शिक्षा के सच्चे स्वरूप को
जिया और साकार किया।
जीवन को प्रभु का प्रसाद सा
ग्रहण किया, आभार किया ।।

– बृजेन्द्र कुमार मिश्र, मुम्बई
(9565444555)

जाऊँगा कहाँ ? रहूँगा यहीं-कहीं....

जाऊँगा कहाँ ? रहूँगा यहीं-कहीं..
किसी पुराने रजिस्टर के
पीले पन्नों के बीच
किसी पेन की स्याही में
रंग देता हुआ सा
किसी किवाड़ पे
हाँथ के निशान बनकर
किसी किताब में
कोई अंडरलाइन की तरह
जाऊँगा कहाँ ? रहूँगा यहीं-कहीं...

वो तख्त पर फैले कागजों में
या अपने झोले की किसी जेब में
मेज पे रखे उन अखबारों में
कभी दुछत्ती में बने उस कमरे में
जहाँ मैं वर्षों पहले
अक्सर जाया करता था
जाऊँगा कहाँ ? रहूँगा यहीं-कहीं..

उन बाल कहानियों में
जो मैं संजोकर रखता था
कि तुम गर्मी की छुट्टियों में आओगे,
तो पढ़ोगे
उस जगह जहाँ
अमरूद का पेड़ हुआ करता था
तुमलोग अमरूद तोड़ने की
प्रतियोगिता करते
और मैं मन ही मन अपने बचपन मे
गोते लगा लिया करता
मेरी उन हजारों बातों में
जो मैं मौन रहकर इशारों-इशारों में
तुमसे किया करता
और सहज ही तुम समझ जाते
जाऊँगा कहाँ ? रहूँगा यहीं-कहीं..

वो हर वर्ष दीवाली में
होने वाली पारिवारिक गोष्ठी में
पूरे साल बड़ी बेसब्री से
मैं उस समय का इंतजार करता हूँ
जब पूरा परिवार
एक कमरे में आ जाता है
और हंसी-ठिठोली के साथ
हर साल की दिवाली यादगार हो जाती
फिर तुम भी तो यही चाहते हो
कि मैं यहीं रहूं
इसीलिए मेरी कुर्सी, जो टूट गयी थी
तुमने फिर से बिनवाई है
उसी पर बैठ जाया करूंगा
कभी-कभी।
जाऊँगा कहाँ ? रहूँगा यहीं-कहीं..

तुम्हारी खुशियों में, उत्सव में,
तुम्हारे अनुशासन में, कर्मठता में,
तुम्हारी एकता में, आपसी प्यार में,
मेल-मिलाप में,
तुम्हारी जीत-हार में, तीज-त्योहार में,
जाऊँगा कहाँ ? रहूँगा यहीं-कहीं..❒

– रोली अवस्थी (पौत्री), गुरुग्राम।

बाबा उत्सवधर्मी थे, खुशी-आनन्द का कोई भी अवसर हाथ से न जाने देते। बड़े-छोटे सभी के जन्मदिन, विवाह सलगिरह, मकान की सलगिरह, व्रत-पर्व, जयंतियाँ उत्सव के रूप में मनाई जाती। सायंकाल सामूहिक कीर्तन का नियम आखिरी श्वांस तक चलता रहा। सलगिरह में कढ़ी-चावल, दही-बड़ा, गुलगुले जरूर बनते। नाश्ते में नुनबरियाँ बनती। हर साल की दीवाली एक नई याद बन जाती। बेटी-बहुयें उनकी भेंट की गई साड़ियाँ पहनकर ही लक्ष्मी-पूजन करती। पूजन के बाद उन्मूक्त वातावरण में पारिवारिक गोष्ठी। आभा बुआ, फूफा, राखी, दीदी, सौरभ भी आ जाते। बाबा के अंगूठे से लगाया रोचना भविष्य में विजय के मार्ग को सुगम बनाता तो हाथ में दी मिठाई जीवन-रस में मधुरता घोल देती। सभी का मंगल चाहने वाले, सभी की कुशल क्षेम पूछते रहते। दादी के अनुशासन और बाबा के प्रबंधन ने 20वी परिवार में सुमति बनाये रखने में कोई-कसर नहीं रखी। 2004 में दादी के न रहने पर एक अपूरणीय रिक्तता तो आई ही थी, अब बाबा भी बैकुण्ठ सिधार गये। आप का आशीष हमारा और हमारे परिवार का संबल बने। ❒

नाना करते प्यार तुम्ही से कर बैठे

आज से सात वर्ष पहले नानाजी की अनुमति के बाद ही मेरा प्रेम-विवाह संभव हो सका। प्रारम्भ में परिवार के अन्य सदस्यों की तरह वे भी सहमत नहीं थे, लेकिन फिर न जाने कैसे प्रभु-कृपा से उन्होंने बड़ी सहजता से हाँ कर दी।

शुरू से ही नानाजी को एक परिश्रमी, अनुशासनप्रिय और बच्चों से अत्यधिक लगाव रखने वाले व्यक्ति के रूप में देखा। हम दर्जन से भी ज्यादा ममेरे-फुफेरे भाई-बहनों में सभी से उन्हें विशेष स्नेह था। बचपन में नानाजी के साथ कहीं सैर पे जाना हो, उनका हमें पाठ्यक्रम से इतर भी किताबें-समाचारपत्रादि देकर पढ़ने के लिए प्रेरित करना हो, या फिर रात में बातें करते हुए उनके पैर दबाना हो - ये सभी ननिहाल में बिताये हमारे बचपन की दिनचर्या के अभिन्न क्रियाकलाप थे। उनके साथ बीते हर क्षण में उनका प्यार और जीवन जीने की अनमोल सीख दोनों मिलती थी।

पेशे से अध्यापक रहे नानाजी को स्वाध्याय और समाज को कुछ सकारात्मक देने की कुछ ऐसी लगन थी कि सेवानिवृत्त होने के पश्चात, जबकि साधारणतः लोग अपना समय विश्राम और सिर्फ परिवार में ही बिताना पसंद करते हैं, उन्होंने स्वयं को और अधिक खपाते हुए 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका का प्रकाशन कार्य आरम्भ कर दिया। आने वाले वर्षों में हम लगभग हर रोज ही दोपहर में नानाजी को जब देखते तो वे कितनी ही किताबों-दस्तावेजों से घिरे रहते और कुछ लिखने-पढ़ने में व्यस्त रहते। हमें भी कभी-कभी सदस्यों की लिस्ट बनाने, कुछ लेख कॉपी करने, लिफाफों पर पते लिखकर डाक टिकट चिपकाने जैसे कार्य दिया करते। ये नानाजी के अथक परिश्रम और समाज के लिए कुछ करते रहते का जूनून ही था कि तमाम उतार-चढ़ावों के बीच भी पत्रिका चौथे दशक में भी अनवरत प्रकाशित हो रही है। अपनेकुल-परिवार, आस-पड़ोस से प्रारम्भ होकर सूबे के और देश-व्यापी ब्राह्मण समाज को दिशा दिखाने और नेतृत्व करने की उनकी अटूट यात्रा जीवन भर जारी रही।

देह त्यागने के विगत कुछ वर्षों तक वे लगातार अपने बढ़ते परिवार और समाज की हाल-खबर पूछते रहे। हर वर्ष दीपावली में जब सारे सदस्य एकत्रित होते, तो सबको एक साथ बैठाकर पारिवारिक विचार गोष्ठी का आयोजन करते। मैं जब भी कानपुर जाता तो उनका आशीर्वाद लिए बिना नहीं लौटता। आज जब मैं और मेरी पत्नी-मधु दो बच्चों के सुखी माता-पिता बन गए हैं, तो अपने इस जीवन का श्रेय उन्ही के चरणों में अर्पित करते हैं।❐

– **सौरभ अवस्थी** (दौहित्र), (7666888712)

बाबा की सीख

स्वामी विवेकानन्द का कहना है, - 'शारीरिक दुर्बलता ही सब अनिष्टों की जड़ है। सदैव दुर्बलता को याद करते रहना ठीक नहीं, उसको बल प्रदान करो। दुर्बलता का उपचार उसका चिन्तन करते रहना नहीं, बल्कि बल का चिन्तन करना है। अपनी शक्ति को याद करना है, उभारना है। दृढ़ विश्वास और दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ना है।' दूसरों के लिए रत्ती भर काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है। दूसरों के लिए रत्ती भर सोचने से धीरे-धीरे हृदय में सिंह सा बल आ जाता है। उद्देश्य और लक्ष्य कार्य में परिणत हों, उसके लिए अनन्त शक्ति, अनन्त उत्साह, अनन्त साहस और अनन्त धैर्य चाहिए। काम में जी जान से लग जाओ। नाम, यश अथवा अन्य तुच्छ विषयों की तरफ मत देखो। स्वार्थ, अहं को त्याग नीतिपरायण और साहसी बनो। कायर लोग ही पापाचरण करते हैं।

सारे पौत्रों में मुझे ही सौभाग्य मिला कि सबसे ज्यादा समय बाबा के साथ गुजारा। उनसे सीखा, ज्ञान लिया और उनकी सेवा की। उनका स्नेह मेरे प्रति छोटे नाम से निकलता, लगभग पिछले 15 वर्ष में उन्हें किसी से भी कुछ काम लगता तो वो पहले छोटे ही पुकारते हमेशा, पहले छोटा कह मुझे बुलाते फिर मेरे माध्यम से उन लोगों को या जो भी काम होता बताते।

हमारा रिश्ता अनोखा अनमोल रहा यहां तक की मै मजाक में कहता बाबा बस मुझसे मात्र 70 वर्ष बडे हैं इसी तरह वो मुझे 'गधा' कहते पर फिर समझाते 'गद' माने रोग तथा 'आ' मतलब उसको हरने वाला।

–उपेन्द्र पाण्डेय (पौत्र)

कुलीनता और नम्रता की प्रतिमूर्ति

आदरणीय बालकृष्ण पाण्डेय रिश्ते में हमारे बहनोई थे। अभी तीन महीने पहले ही 9 अक्टूबर, 2018 को उनकी 95 वीं वर्षगांठ पर आयोजित शुभकामना-गोष्ठी में उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया था। उस समय वे बिस्तर पर थे। ऐसे कर्मशील व्यक्ति को शारीरिक रूप से अशक्त देखकर अच्छा नहीं लगा था। पहचानने में भी दिक्कत होने लगी थी। पर स्वार्थवश संतोष था कि उनका आशीर्वाद हम सबको मिलता रहेगा। दो-चार वर्ष और रहते तो अच्छा रहता। पर विधि का विधान।

पाण्डेयजी पहाड़ों में छिपी औषधि और रत्नों की तरह थे। कुलीनता और नम्रता की प्रतिमूर्ति पाण्डेय जी का जीवन सरलता और सादगी का पर्याय था। अपने भीतर किसी भी लघुता का बोध अर्थहीन मानते। वे जब तक जिये अपने जीवन को सार्थक किया। किसी भी कार्य में सम्पूर्णता और शिखर कौशल सदैव ही उनकी प्राथमिकता रही। अकेला आदमी भी लड़ने की हिम्मत जुटाए तो उसके साथ अनेक आ मिलते हैं। कर्मठता तथा सर्जनात्मक व्यक्तित्व के साथ-साथ उनके सार्वजनिक व्यवहार और सदाचार के वैशिष्ट्य ने उन्हें समाज के व्यापक दायरे से जोड़े रखा।

आदरणीय पाण्डेय जी जमीन से जुड़े थे। अपने पिता स्मृतिशेष पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल के साथ उनकी अन्तरंग बातचीत का मैं गवाह रहा हूँ। पारिवारिक दायित्वों को बखूबी से निर्वहन करने वाले ऐसे शख्स बिरले ही होते हैं। जीवन के उत्तरार्ध में 'कान्यकुब्ज मंच' का प्रकाशन उनका भगीरथ प्रयास था। जिसमें वे पूरी तरह सफल रहे। झूठी मर्यादाओं और हवाई महत्वाकांक्षाओं को अपने इरादों के रास्ते में नहीं आने दिया। स्वाध्याय और ज्ञानार्जन को संकल्पित उनका जीवन एक प्रेरणापुरुष के रूप में स्मरणीय रहेगा। विनम्र श्रद्धांजलि।❐

– सांकृत अजीत शुक्ल, एडवोकेट

-9415474584

आवत ही हरषै नहीं नैनन नहीं सनेह

चाचा जी के व्यक्तित्व का मुग्ध करनेवाला पक्ष था कि वे सम्बन्धों की ऊष्मा को बनाये रखने में विश्वास रखते थे। हमारी बहन के श्वसुर पण्डित बालकृष्ण पाण्डेय सबके सगे थे। मेरी बारात सरायमीरा (कन्नौज) में उनकी गरिमामय उपस्थिति की याद ताजा है। आज के समय में, जब कि नजदीक के रिश्ते-नातों, यहां तक कि रक्त-सम्बन्धों में भी लाभ-हानि का गणित घर बनाने लग गया हो, दूर-दूर के रिश्तों को भी जोड़ना और उनको जीवित रखने की भावना थी। वे कहते - सम्बन्धों को भी सींचना पड़ता है। ''आवत ही हरषै नहीं नैनन नहीं सनेह''। चाचाजी कहा करते थे- अपने घर आये हुए रिश्ते- नातेदारों, आगन्तुकों के साथ आपका आचरण आत्मीयता से भरा होना चाहिए। आत्मीयता और स्निग्धता से लबरेज़ चाचा जी के पास बैठने, बातचीत करने में उम्र आड़े नहीं आती थी। बोलते कम, सुनते ज्यादा थे। शिशु, बाल, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्ध सभी वय के लोग उनका सानिध्य प्राप्तकर तृप्त होते। किशोर, युवाओं को प्रोत्साहन देकर और उनकी पीठ थपथपाकर, उन्हें सदैव सक्रिय बनाये रखने की अद्भुत कला थी।

हमारे पिता (चच्चा) स्मृतिशेष पं. रमाशंकर मिश्र और चाचा जी लगभग समवयस्क थे। प्रतिष्ठित, सत्यनिष्ठ, करुणाशील, धर्मनिष्ठ और भक्ति-परायण चाचा जी में ''समुद्रमिव गाम्भीर्य धैर्येण हिमवानमिव'' समुद्र जैसी गम्भीरता और पर्वत जैसी धैर्यता थी। उनको जाना था, चले गए। लेकिन अपने परिवार को कभी पूरी न हो सकने वाली रिक्तता देकर। संतोष इस बात का है कि उनकी मुखियागिरी उनके परिवार को एक सूत्र में बंधे रहने का मूलमंत्र दे कर गयी है। ❐

– शशि चन्द्र मिश्र, भगवन्तनगर, मल्लावा

(9369265810)

सिरदर्द व दिमागी कमज़ोरी में लाभकारी

भूत मार्का चार तेल

भूत निवास, गांधी नगर, कानपुर

श्रृद्धा उद्गार

न दैन्यं न च पलायनम्

अपने आदर्शों और विश्वासों के लिए काम करते-करते मृत्यु का वरण करना सदैव ही स्पृहणीय है। चाचा (पं. बालकृष्ण पाण्डेय) जीवन के 95 वर्ष पूरे कर चल बसे। मेरा घर पाण्डेय चाचा के घर के ठीक सामने है। पचास दशकों से ज्यादा समय से इस परिवार की लगभग हर क्रिया से मैं वाकिफ रहा हूँ। चाचा को हमने घर की बाउन्ड्री, जहाँ उस समय तक फ़र्श नहीं बनी थी, गोबर से लिपाई करते देखा है, किदवई नगर से बिरहाना रोड पैदल स्कूल जाते देखा है, कॉलेज से घर वापिस आते समय झोला उठाये और कभी कभी तो धोती के एक किनारे सब्जी-समान लाते देखा है, सर्दी की धूप में छत पर चटाई में या बरामदे में पुस्तकों से घिरे हुए देखा है, सामाजिक कार्यों में मीटिंग की सूचना देते, मीटिंग्स की कार्यवाही नोट करते देखा है, अपने चार पुत्रों व दो पुत्रियों का लालन-पालन करते उनका विवाह करते देखा है, बाह्य आवरण में शायद ही ऐसी कोई गतिविधि हो, जो मेरी नजरों से अलग हो। व्यक्ति का बाह्य आवरण, बात-व्यवहार, आचरण व्यक्ति के स्वभाव, अन्तर्मन का प्रतिबिंब होते हैं।

आस-पास मोहल्ले में वे सबसे वरिष्ठ थे। जीवन के उत्तरार्द्ध में वे अकेले रह गए थे। चाची 14 साल पहले ही साथ छोड़ गई थीं। दोपहर या शाम जब कभी उनके समीप बैठ जाया करता। खुलकर बात करते थे। अपनी वसीयत की बात उन्होंने हमें भी बता रखी थी।

चाचा जी एक साधारण व्यक्ति होते हुए भी असाधारण थे। घर, परिवार, नाते-रिश्ते, मोहल्ला-पड़ोस, समाज, राष्ट्र सभी के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का बखूबी निर्वाह किया। उनका जीवन-दर्शन, प्रबंधन अद्वितीय था।
जितना हमने देखा-समझा, चाचा ने अभावों से लड़ते हुए, जीवन से संघर्ष करते हुए स्वयं को स्थापित किया, सन्तानों को शिक्षित कर सुयोग्य बनाया, संस्थाओं के माध्यम से समाज की सेवा की, अध्ययन, चिंतन, मनन एवं साहित्य सृजन में जीवन के अंतिम क्षणों तक निरत रहे। उनका कहना था कि 'विषमता एवं चुनौतियाँ हमे सुदृढ़, मजबूत और फौलाद बनाने आती हैं। विषमता वरदान हैं। कठिनाइयां समर्थ बनाती हैं। चुनौतियाँ लक्ष्य के प्रति सजग और सचेष्ट रखती हैं। गीता का संदेश है - न दैन्यं न पलायनम् (कोई दीनता नहीं चाहिए , चुनौतियों से भागना नहीं , बल्कि जूझना जरूरी है)

चाचा (आदरणीय बालकृष्ण पाण्डेय) आज हमारे बीच नहीं हैं। उनके जाने के साथ ही मानो मोहल्ले-पड़ोस का मुखिया ही चला गया। अश्रुपूरित विनम्र श्रद्धान्जलि।❒

- वीरेन्द्र कुमार वाजपेयी 'बच्चा', किदवई नगर, कानपुर।-8765190812

अध्यापक ही नहीं, हमारे गुरु जी थे काका पाण्डे

एक मामूली इंसान किन्तु इंसानियत से भरपूर, साधारण अध्यापक किन्तु मन, वाणी, आचरण में गुरुत्व, पारम्परिक शिक्षा से कहीं ज्यादा ज्ञान का भण्डार, प्रकाशित लेख, रचनाओं से हजार गुना अधिक डायरियों, पतली-पतली नोटबुकों, निमंत्रणपत्र के लिफाफों, पन्नों आदि में समाया रचना संसार, गजब का पारिवारिक प्रबंधन, मामूली वेतन के बावजूद विवेकपूर्ण अर्थप्रबन्धन, युवाओं जैसा उत्साह, ऊर्जा से भरपूर पाण्डेय जी ने शिक्षक रहते हुए शिक्षा में कई व्यवहारिक प्रयोग किये, सिद्धांत बनाये। ऐसे सिद्धांत जो बालक को तेजस्वी, ऊर्जावान, उत्साहित करने वाले, आनन्द और चेतना से भरपूर हुआ करते थे।

ओमर वैश्य इंटर कॉलेज के छात्र उन्हें काका पाण्डे के नाम से ज्यादा जानते थे। कारण, शायद हिन्दी में उनके हस्ताक्षर। आदरणीय पाण्डेय जी उस पीढ़ी के अध्यापक थे जो शिक्षक से कहीं आगे अपने नैतिक आचरणों से जाने जाते थे।❒

- राजेन्द्र कुमार गुप्ता (पूर्व छात्र)-9935500111

फर्म : लाल रामचन्द्र गुप्ता एन्ड संस्, नयागंज, कानपुर।

श्रृद्धा उद्‌गार

तोड़ गए सब बन्धन।

जिनका कि जग करने आया था वन्दन-अभिनंदन,
छोड़ गए सब दुनियां दारी, तोड़ गए सब बन्धन।
प्रेम, तपस्या, त्याग, समर्पण जीवन की परिभाषा में
रची बसी थी हंसी तुम्हारी बोल चाल की भाषा में।
तुम कबिरा के इकतारे हो तुम तुलसी के चन्दन,
छोड़ गए सब दुनियां दारी, तोड़ गए सब बन्धन।
भौतिकता ने गीत सुहाने, आकर बहुत सुनाए,
लेकिन स्वार्थ, प्रलोभन तेरे निकट नहीं आ पाए।
माटी जैसे लगे तुम्हे थे ये सारे मणि-कंचन,
छोड़ गए सब दुनियां दारी, तोड़ गए सब बन्धन।
जिस घर की चौपालों पर लगते रोज ठहाके,
आज वहीं पर एक उदासी आकर ताके-झांके।
फूल-पत्तियां लगी हुई हैं पर उदास है उपवन,
छोड़ गए सब दुनियां दारी, तोड़ गए सब बन्धन।
है उदास घर का हर कोना, बैठा है मन मारे,
ये देहरी दीवारें सारी, ये आंगन गलियारे।
है उदास ये नगर तुम्हारा और गांव का जन -जन,
छोड़ गए सब दुनियां दारी, तोड़ गए सब बन्धन।
याद रखेगा तुम्हें जमाना कहता है ये जन मन,
परम धाम में आगन का भी होता होगा स्वागत।
सागर जैसा धैर्य तुम्हारा, अम्बर जैसा चिन्तन,
छोड़ गए सब दुनियां दारी, तोड़ गए सब बन्धन। ❐

-अशोक शास्त्री, कानपुर
9935282238

क्रियावान सः पण्डितः

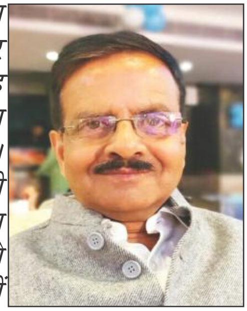

मान्यवर का जीवन जिस संघर्ष, श्रम, प्रयोग और विलक्षणता से भरा हुआ था, वह युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का अक्षय वट सिद्ध हो सकता है। आदरणीय पाण्डेय जी कर्मयोगी थे। कर्म से न कभी थकते, न ऊबते। उनका कर्म केवल अपने और अपने परिवार के लिए नहीं था बल्कि पूरी विरासत और समाज के लिए था। उनके लिए उनका कर्म कर्मण्य था। मुझ अकिंचन को भी 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका के वितरण में सहयोग करने का सौभाग्य प्राप्त था। चौक, नयागंज, बिरहाना रोड, कलक्टरगंज आदि के पाठकों को पत्रिका के अंक पहुँचाने के बहाने मेरा भी सामाजिक दायरा विस्तृत होता गया।

स्मृतिशेष प्राचार्य रामकृष्ण तैलंग, पत्रकार रामाश्रय द्विवेदी (दैनिक विश्वमित्र), डॉ बद्री नारायण तिवारी (मानस संगम) आदि प्रबुद्धजन उनकी सादगी, निश्छलता के कायल थे। ढोंग, आडम्बर से कोषों दूर थे पंडितजी। स्वभाव, आचरण, चिंतन आदि सभी से ब्राह्मणत्व झलकता। यक्ष प्रश्न है -

'' राजन कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन वा।
ब्रह्मण्य केन भवति प्रब्रूह्येतत सुनिशिचितम।''

(राजन, कुल, आचार, स्वाध्याय और शास्त्र श्रवण इनमें से किसके द्वारा ब्रह्मण्य (पाण्डित्य) सिद्ध होता है ?)

युधिष्ठिर ने कहा-

'' पाठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्र चिन्तकाः।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खा यः क्रियावान सः पण्डितः।''

पढ़ने वाले, पढ़ाने वाले तथा अन्य वे लोग, जो शास्त्र का चिंतन करते हैं, सभी व्यसनी और मूर्ख हैं। जो शास्त्रोक्त रीति से क्रियावान (कर्तव्यपरायण और कर्मयोगी) होता है, वही पण्डित है। ❐

- राजेश दीक्षित, एडवोकेट (9453933660)

ब्राह्मण संस्कृति के उन्नयन में वैचारिक क्रांति का उद्‌घोष करती, 1987 से नियमित प्रकाशित

'कान्यकुब्ज मंच' (हिन्दी त्रैमासिक),

समाज, परिवार, संस्कृति से संबंधित आपके संक्षिप्त व सारगर्भित विचारों-लेखों का स्वागत करती है। -संपादक - 9312020932

श्रद्धा उद्‌गार

सादगी और सौम्यता की प्रतिमूर्ति

11 जनवरी, 2019 के समाचार पत्र में पढ़ा कि 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका के सम्पादक 96 वर्षीय पं. बालकृष्ण पाण्डेय कल नहीं रहे। सुनकर दुख हुआ। सादगी और सौम्यता की प्रतिमूर्ति पाण्डेय जी पर 'सादा जीवन-उच्च विचार' की उक्ति अक्षरशः चरितार्थ होती है। सरल, निश्छल, बेफिक्र, बेख़ौफ़, मस्त, प्रसन्नचित्त और आत्मसंतुष्ट व्यक्तित्व। ऋषि-परम्परा की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक। आध्यात्मिक आस्था और साधना के सत्पुरुष। उनकी जीवन-यात्रा सदाचरण पर समाश्रित नीति एवं नैतिकता से धार्मिकता की ओर और फिर धार्मिकता से आध्यात्मिकता की ओर रही।

'कान्यकुब्ज मंच' के माध्यम से आदरणीय पाण्डेयजी परिवार, समाज, राष्ट्र के नैतिक मूल्यों को सहेजने में जीवनपर्यंत निरत रहे। प्राचीनता के प्रति प्रतिबद्ध किन्तु अर्वाचीन की सतत प्रस्फुटित होने वाली नूतनताओं के प्रति जागरूक। समाज को एक सकारात्मक विचार देने के प्रति संकल्पित पाण्डेय जी का रोंपा पौधा सदा पुष्पित-पल्लवित रहे, उनके पुत्रों और हम सभी का दायित्व हो, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।❒

–ओम शंकर मिश्र, पनकी, कानपुर – 9415041131

करीब 35 वर्ष पहले भाई साहब (स्व0बाल कृष्ण जी पांडेय), से मेरी पहली मुलाकात कैलाश मंदिर में, स्व0 जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल, डी0जी0सी0क्रिमिनल के निवास स्थान पर हुई। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जिनसे, यद्यपि कि वह आपकी पहली मुलाकात होती है,बात करने पर आपको यह मालूम ही नहीं होगा कि आप उनसे पहली बार मिल रहे हैं - कुछ ऐसा ही अनुभव मुझे भाई साहब से मिलकर हुआ। कोई भी सामाजिक समस्या हो ,उस पर विचार करते समय समग्र रूप से विचार करने के साथ साथ, उसका कारण और निवारण तथा विभिन्न समाधानों के संभावित दूरगामी परिणामों का विवेचन, इतने सहज ढंग करना मानो वही उनका कार्य छेत्र रहा हो।कुछ ऐसा ही व्यक्तित्व था हमारे भाई साहब का। इसी के साथ वह बच्चों में बच्चे बन जाते थे और बड़ों के साथ बड़ा बन कर धीर गंभीर विषयों पर चर्चा करने में सदैव आगे रहते थे। संक्षेप में एक गांधीवादी, बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी एक संत व्यक्ति को हम खो चुके हैं, समय समय पर पर उनके दिशा निर्देश मार्ग दर्शक बन कर ,हमें प्रेरणा देते रहेंगे ।❒

– डा0 प्रेम नरेश मिश्र, खुर्सेद बाग़, लखनऊ

'नास्ति तेषां यशःकाये जरामरणजं भयमू।'

पिता का जाना,चाहे उनकी अवस्था कितनी भी क्यों न रही हो, एक बेहद पीड़ाप्रद अनुभव होता है। मैं स्वयं भी इस दुर्निवार दुःख से गुज़र चुका हूं, इसलिए आपकी पीड़ा अच्छी तरह से समझ सकता हूं। यह कुछ वैसा ही है जैसे कि आपके जीवन का रोज़ आपकी सहायता करने वाला कोई सन्दर्भ-ग्रन्थ लुप्त हो जाए और आप अवाक् ठगे से खड़ें रह जाएं। फिर आपके पिता तो अप्रतिम थे, न केवल वयोवृद्ध वरन् यशोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध भी। आप ऐसे यशस्वी और श्रेयस्कर जीवन जीने वाले महनीय व्यक्तित्व के पुत्र हैं, इसका बोध मुझे आपके प्रति एक सात्विक ईर्ष्या से भर देता है। मुझे आपका जब सन्देश मिला, मैं प्रयाग में था। मेरी संवेदनाएं आपके साथ हैं। पिताजी को सद्गति मिलेगी ही। शायद ऐसे ही महनीयों के लिए कहा गया है - 'नास्ति तेषां यशस्काये जरामरणजं भयमू।'❒

– डा0 आनन्द वर्धन द्विवेदी, लखनऊ

बाबू जी कान्यकुब्ज मंच के माध्यम से एक ऐतिहासिक धरोहर हम सभी को दे कर गये हैं। पिछले दिनों बाबू जी के जन्मदिन पर आशुतोष भाई साहब की कृपादृष्टि से मुझे भी बाबू जी के दर्शन करने का लाभ प्राप्त हुआ था।

बाबू जी अपने पीछे अद्वितीय परिवार के उत्कृष्ट संस्कार, समाज के लिये कुछ कर गुजरने की शक्ति और संबल देकर गये हैं। ❒

– अमलेश पाण्डेय, छिबरामऊ– 9990204191

संतुलित जीवनचर्या

किदवई नगर, बी ब्लॉक में चाचा (पं बालकृष्ण पाण्डेय) ही सबसे बुजुर्ग थे। 10 जनवरी को वे भी नहीं रहे। पाण्डेय चाचा ने मनुष्य के जीवन के चारों आयामों का सम्यक पालन किया था। रोजगार से अवकाशप्राप्त कर सामान्य व्यक्ति जहां भजन, भोजन और भ्रमण में स्वयं को सीमित कर लेता है, वहीं चाचा ने सन्तानों की शिक्षा, रोजगार, विवाह का उत्तरदायित्व पूरा कर, अध्यापक पद से सेवानिवृत्त हो अपने को समाज और साहित्य की सेवा में लगा दिया। वे सच्चे अर्थों में एक गृहस्थ सन्यासी थे। सादा, सरल जीवन। कोई महत्वाकांक्षा नहीं। बस, एक मिशन की तरह पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पत्रिका 'कान्यकुब्ज मंच' के सम्पादन-प्रकाशन में अपने को एक तरह विलीन कर लिया कि वही उनकी दुनिया बन गयी। मेरे ख्याल से वे दिन के चौबीस घण्टों में 15 - 16 घण्टे सिर्फ पढ़ते-लिखते थे। कहते है जब कोई काम दिल से किया जाय तो उसमें थकान नहीं लगती। बल्कि काम के पूरा होने पर सफलता प्राप्ति का जो आत्मसन्तोष मिलता है, वह अकल्पनीय है। जीवन के उत्तरार्द्ध में भी जब इंद्रियां शिथिल होने लगतीं, शरीर अशक्त हो जाता, उस समय भी उनकी तन्मयता अनुकरणीय थी। काम के प्रति लग्न ऐसी कि आलस्य उनसे दूर भागता। वे कहते **'मनुष्य जियै तो काम करै और काम न करै तो फिर काहे को जियै'**। संयमित जीवनचर्या, संतुलित आहार, पैदल-यात्रा आदि के कारण उन्हें किसी बीमारी या रोग ने नहीं पकड़ा। यद्यपि इधर छह-सात महीने से वे जरूर बिस्तर के सहारे हो गए थे और बिना किसी हलचल के उनका स्थूल सूक्ष्म में विलीन हो गया।

– श्यामजी पाण्डेय (8756138434)

व्यक्तित्व में सम्मोहक अपरिमेयता

आपके पिताजी के निधन के समाचार जान अत्यंत दुख हुआ। पं. बालकृष्ण पाण्डेय का जाना एक रिक्तता कर गया, जो समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है। अर्थयुग में सीमित साधनों के होते हुए एक जातीय पत्रिका का नियमित प्रकाशन दुःसाहस का काम है। लेकिन गजब का आत्मविश्वास और कठोर परिश्रम। आत्मविश्वास के शिखर पर बैठा वह व्यक्ति समाज मे यथोचित यशस्तिलकित नहीं हुआ लेकिन उनको जानने वाले बताते है वे भीतर से कितने बुद्ध और समृद्ध थे। उनको जानने वाले उन्हें खंडों में जानते हैं, किश्तों में जानते हैं।

आदरणीय पाण्डेय जी जब कभी लखनऊ आते, हमारे पिता कीर्तिशेष पं. विजयशंकर शुक्ल से कान्यकुब्जियत, पारिवारिक-सांस्कृतिक मूल्यों, युवाओं के दिग्भ्रम एवम् सामाजिक समरसता पर चर्चा होती। पाण्डेय जी कानपुर में हमारे बाबा स्व. जयशंकर जी से भी परिचित थे। उनके व्यक्तित्व में सम्मोहक अपरिमेयता थी। समाज की नब्ज़ परखने की कला थी। वे सिर्फ सकारात्मक पक्ष के पक्षधर थे। व्यक्ति के गुणों का ही बखान करते। शिष्य की प्रतिभा को पहचानना और उसे प्रोत्साहित व प्रेरित करना ही सच्चे शिक्षक का कार्य है। ऐसा गुण गाहक व्यक्ति ही मानस-हंस होता है। यही कारण रहा इतने लम्बे सार्वजनिक जीवन में उनका कोई शत्रु नहीं रहा। आशावादिता, ईश्वर पर आस्था, सकारात्मक दृष्टिकोण पाण्डेय जी के अस्त्र-शास्त्र थे, तो लगन, परिश्रम और आत्मविश्वास उनकी पूँजी। पांडेयजी आजीवन सम्प्रदान-कारक बने रहे। वे हमारी पीढ़ी के प्रेरणा पुरुष थे। समाज उनके प्रति कृतज्ञ रहेगा।

हम सभी उस पुण्यात्मा को मोक्ष प्रदान करने व शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से कामना करते हैं। ❐

–विमल शुक्ल, मेधदूत ग्रामोद्योग, लखनऊ

धन और प्रभुत्व की होड़ ने मनुष्य को इतना संवेदनहीन और आत्मजीवी बना दिया है कि मनुष्य, मनुष्य के बीच भयानक दूरियां नजर आ रही है।

पं. ओम शंकर मिश्र

आश्रय मेन्शन, 30-21-22, आवास विकास कॉलोनी-3 पनकी, कानपुर

श्रद्धा उद्‌गार

हिमालय जैसा विराट व्यक्तित्व, माँ धरणी की तरह सहजता, विनम्रता एवं वात्सल्य की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। उनका एक ही स्वप्न था कि हमारा कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज संगठित हो एवं कुरीतियों से मुक्त हो। 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका उनकी जीवंत विचारधारा है। इसकी निरन्तरता की उनके हृदय में बड़ी कसक थी।परम् सौभाग्यशाली हूँ मैं कि कुछ वर्ष पूर्व कानपुर उनके निवास पर उनके दर्शन व शुभाशीष प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। ऐसे विराट व्यक्तित्व को कोटिशः नमन एवं अभिनन्दन। 'कान्यकुब्ज मंच' सदैव प्रकाशित होता रहे, पुष्पित, पल्लवित एवं विकसित हो। इस दिशा में हमारा योगदान ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।❒

– प्रो. दिनेश चन्द्र मिश्र, लखनऊ। (9415195244)

'मच' के जनवरी अंक में उन्होंने अपने कृतित्व को 'तेरा तुझको अर्पण' का अंतिम संदेश दिया था। कल 10 जनवरी को उनका जीवतत्व परमतत्व में लीन हो गया। वय में पितातुल्य, रिश्ते में समधी बड़े भाईसाहब पं. बालकृष्ण पाण्डेय पृथ्वी पर विरले ही जन्म लेते है। आज 11 जनवरी को फरीदाबाद में पारिवारिक शोकसभा में भाईसाहब की सादगी, सौम्यता, पारिवारिक सूझ-बुझ, विनम्रता तथा उनकी व्यवहारिक उदात्तता का स्मरण किया।❒

– सुशील शुक्ल, फरीदाबाद (9212042495)

कीर्तिशेष पं. श्रीराम शुक्ल से प्रेरित होकर पं. बालकृष्ण पाण्डेय जी ने कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के उत्थान, प्रगति एवं संस्कारों को सतत उजागर रखने की जो अमूल्य प्रेरणा प्रवाहित की वह मन्दाकिनी की तरह ब्रह्म समाज को सदा उजागर करती रहेगी। आपके प्रयासों के फलस्वरूप अनेकों कान्यकुब्ज युवक-युवतियाँ प्रणय बंधन में बंधकर सुखी दाम्पत्य जीवन यापन कर रहे हैं। आपकी तरह ही समय की सीढ़ियों में अपने पदचिन्हों की छाप छोड़ने वाले प्रातःस्मरणीय महापुरुष स्मृतिशेष पं. नारायणजी मिश्र की याद भी सदैव आती रहेगी जो ब्रह्म समाज को याद दिलाती रहेगी 'मोहब्बत करने वाले कम न होंगे, तेरी महफ़िल में लेकिन हम न होंगे।' आज्ञाकारी सन्तान, परमसन्तोषी पत्नी, हितैषी मित्र, ईश्वर के समान पिता, जिनके हम जीवनपर्यन्त ऋणी रहते हैं, वह मां जिसे मिले, वह धन्य है। महापुरुषों से मिले स्नेह व आशीर्वाद ही हमारी प्रेरणा है। जिंदगी के सफ़र में निकल जाते हैं जो मुकाम वो फिर नहीं आते।❒

– रजनीकांत पाण्डेय, श्रीमती प्रभा पाण्डेय

किसी भी सामाजिक पत्रिका का उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन उसके सम्पादक की सफलता है। बड़े भाई प्रमोद मिश्र जी के सत्प्रयास से मैं भी 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका से जुड़ा। 'होनहार बिरवान के' डॉ रमेश मंगल वाजपेयी द्वारा लिखा मेरा व्यक्तिगत परिचय भी इसमें छपा। सीमित साधनों के बावजूद पत्रिका का अनवरत प्रकाशन पाण्डेय जी की दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचायक है। पैसे वाले तो पैसे के बल पर बहुत-कुछ कर लेते हैं, परन्तु पाण्डेय जी का असाधारण व्यक्तित्व ही था कि उनसे मिलने वाले स्वेक्षा से जुड़ते रहे। पत्रिका सुसज्जित हो गतिमान रही और पाठकों के आकर्षण का केंद्र बनी रही। पाण्डेय जी पत्रिका के पहले अंक से जीवन के अंतिम क्षण तक तन-मन-धन से समर्पित रहे। ऐसे जुझारू, जीवट समाजसेवी के श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धांजलि।❒

– राजनारायण तिवारी, सी ए, कानपुर।

With best compliments from

TEDCO Exports Private Limited

A global trade development company engaged in exports and imports of commodities, equipments and technology

M-72, Connaught Circus, New Delh 110001, Phone 23-416001/ 41517367 (EPABX)
Telefax: 011-23416002, E-mail: tedcogroup_del@airtelbroadband.in

पत्रों के आईने में...

– श्रीमती आरती मिश्रा, कानपुर।

कान्यकुब्ज मंच पत्रिका प्रारंभिक प्रकाशन से वर्तमान तक विभिन्न लेखकों, पाठकों तथा सुधी जनों के पत्र निश्चय ही पत्रिका की 32 वर्षों की विकास यात्रा को सुव्यवस्थित करने का आधार ही नहीं बनें, बल्कि यथार्थ में प्रकाशन के सामाजिक महत्व एवं स्वीकार्यता के साथ-साथ संस्थापक सम्पादक पं. बालकृष्ण पाण्डेय के व्यक्तित्व का दर्पण भी हैं। चुनिंदा पत्रों के चुनिंदा अंशों को प्रस्तुत करने का मेरा प्रयास है

1. कान्यकुब्ज मंच, जो अभी अपनी शिक्षुता के दो वर्ष पूर्ण कर तृतीय वर्ष में प्रवेश कर रहा है। शनैः शनैः प्रकाशमान व कीर्तिमान हो सकता है। यदि इसका वितरण, अर्थसंग्रह एवं सुलेख सुव्यवस्थित रहे। - सांकृत श्रीराम सुकुल, कानपुर। (जून, 1989)
2. साहित्यकार अंक पठनीय व संग्रहणीय है। - कुलदीपनारायण झड़प, बलिया। (जून, 1989)
3. कान्यकुब्ज होने के नाते एक अरसे से ऐसी पत्रिका की तलाश में था तथा ऐसी संस्था से जुड़ना चाहता था। - चंद्रभूषण द्विवेदी, कानपुर। (जून, 1989)
4. वर्तमान में आपकी पत्रिका समाज की प्रगति, स्वस्थ मनोरंजन एवं उचित मार्गदर्शन में सहयोग पहुँचा रही है। - गोवर्धनलाल अवस्थी, औरंगाबाद। (सितम्बर, 1989)
5. परिवार अंक में जितने भी लेख हैं, प्रायः सबका स्तर उपदेशात्मक है। - रामदत्त शुक्ल, प्रयाग। (दिसम्बर, 1989)
6. आपका प्रयास उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। इससे विभिन्न प्रान्तों में बिखरे कान्यकुब्ज परिवारों को संगठित होने तथा सम्पर्क में आने का अवसर मिलेगा। - शशांक शेखर मिश्र, भागलपुर। (मार्च, 1990)
7. कान्यकुब्ज मंच अपने हृदय में विभिन्न वुभयों को समेटे हुए सुन्दर से सुन्दरतम होता जा रहा है। - जयशंकर नाथ सरोज, उदयपुर। (मार्च, 1990)
8. आप कान्यकुब्ज मंच द्वारा समाज को उद्बोधित करने का बड़ा उत्तम प्रयास कर रहे हैं। इसका प्रत्येक अंक उत्तरोत्तर अधिक परिष्कृत हो रहा है। यही गति रही तो कान्यकुब्ज मंच देश का उच्चकोटि का एकमात्र प्रकाशन बन जायेगा, इसमें संदेह नहीं। - रमादत्त शुक्ल, प्रयाग। (दिसम्बर, 1988)

9. अपने समाज ने अनेक विभूतियों को जन्म दिया है और वर्तमान में भी अनेक प्रतिभाएं अपनी प्रतिभा का परिचय दे रहीं हैं। अनेक रत्न दृष्टि से ओझल भी हैं। आशा है आपके प्रकाश से वे प्रत्यक्ष होंगे। - जयशंकर नाथ मिश्र, उदयपुर। (दिसम्बर, 1988)
10. संसार सागर, संसार शिखर, संसार भूतल तथा संसार जल से रत्नों की खोजकर, पत्रिका के द्वारा जनता जनार्दन के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया। उदाहरणस्वरूप- शाण्डिल्य आनन्दस्वरूप मिश्र, सांकृत डॉ जीवन शुक्ल, भरद्वाज रमादत्त शुक्ल, उपमन्यु बृज बिहारी अवस्थी आदि। - सांकृत श्रीराम शुक्ल, कानपुर। (दिसम्बर, 1990)
11. मंच के माध्यम से कान्यकुब्ज समाज के बारे में जो सामग्री प्रदान की है वह आपके परिश्रम और योग्यता का प्रमाण है। आश्चर्य है इतनी सामग्री आप कहाँ से जुटा लेते हैं। हिमालय से कन्याकुमारी तक के संगठनों के बारे में उनकी सक्रियता का भी बराबर उल्लेख करते रहते हैं। आपके मंच से हम ही नहीं, सम्पूर्ण विप्र समाज प्रभावित है। - ऋषि शंकर दीक्षित, पीतमपुरा, दिल्ली। (सितम्बर, 1990)
12. कान्यकुब्ज मंच 1987 से निर्बाध रूप से आपके कुशल सम्पादकत्व में प्रकाशित हो रही है। आप जैसे निश्पृह समाजसेवी के हाथ में न केवल कान्यकुब्ज मंच अपितु सारा कान्यकुब्ज समाज सुरक्षित है। - वैद्य बृज बिहारी मिश्र, लखनऊ। (सितम्बर, 1990)
13. जहां अन्य ब्राह्मण पत्रिकाएं निरन्तर दुर्घटना, वाद-विवाद की शिकार होती जा रही हैं वहीं निर्विवाद से आप कान्यकुब्ज मंच का लगातार प्रकाशन करके ब्राह्मण गौरव को बढ़ा रहे हैं। दशाब्दि अंक की समस्त सामग्री विशिष्ट जानकारी देने वाली है। सूत्र वाक्य तो प्राणतत्व है। - डॉ अंजनी कुमार दुबे, असम। (जून, 1997)
14. ब्राह्मण समाज के लिए जो सेवाएं इस पत्रिका के माध्यम

से प्रदान की गई हैं वह प्रशंसनीय है। सामाजिक आलेख, सम्पादकीय तथा अन्य सामग्री पठनीय है। - रामनारायण तिवारी, इंदौर। (जून, 1997)

15. वर्तमान में विप्र वृन्द की सम्यक भूमिका पर प्रायः मेरा चिंतन है कान्यकुब्ज मंच आदर्श विप्राचरण का सतत दर्पण सिद्ध होगा, ऐसा विश्वास है। अध्यात्म, सदाचरण का जनक है, पत्रिका में उससे सम्बंधित कथानक, परम्पराएं, आदर्श एवं वर्तमान में श्रेष्ठ भूमिका का नियमित प्रतिपादन आज की आवश्यकता है। - डॉ रमेशमंगल वाजपेयी, सीतापुर। (मार्च, 1997)

16. कान्यकुब्ज मंच अपने जीवन के दस वर्ष पूर्ण कर एकादश में प्रवेश कर रहा है, उसकी बधाई। आपने जाति की जागृति में एक उल्लेखनीय योगदान दिया है। - डॉ जीवन शुक्ल, कन्नौज। (मार्च, 1997)

17. एक सामान्य पाठक के रूप में मेरा सुझाव है, प्राचीन वैदिक मूल्यों के साथ ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम जानकारी पर आधारित रचनाएं युवावर्ग को जोड़ेंगी। पत्रिका को एक अलग पहचान मिले तथा हर अंक एक विशेषांक हो। - कौशल पाण्डेय, कानपुर। (मार्च, 1997)

18. बहुआयामी पत्रिका के नए तेवर जहां ऐतिहासिक, नीतिगत एवं आध्यात्मिक प्रसंगों को छू रहे हैं, वहीं प्रमुख समस्याओं को भी उजागर करते हैं। पर्यावरण, स्वास्थ, व्यवहार या अर्थदंड, विखंडित परिवार, वैवाहिक लग्नकाल तथा विधवा अशुभ कैसे? लेख वर्तमान के प्रमुख बिंदु हैं। पत्रिका 'सत्यं- शिवं-सुन्दरं' की सतत त्रिवेणी का संगम है। - डॉ रमेशमंगल वाजपेयी, सीतापुर। (सितम्बर, 1997)

19. अर्थयुग में भी आप समर्थ अंक निकालकर समाज की जो सेवा कर रहे हैं उसके लिए में साधुवाद के अतिरिक्त दे ही क्या सकता हूँ? समाज को इस ऋषितुल्य कार्य के लिए सम्मानित करने चाहिए। - डॉ जीवन शुक्ल, कन्नौज। (मार्च, 1998)

20. बहुत सूझ-बूझ के आपने पत्रिका के पन्ने-पन्ने का कलेवर सजाया है। प्रत्येक जानकारी बुद्धिवर्धक एवं पठनीय है। - डॉ सुरुचि मिश्र, राजनांदगांव। (मार्च, 1998)

21. मुझे अपने कान्यकुब्ज मंच पर बहुत गर्व है। आप समाज को विशेष जानकारी द्वारा जागृत करते जा रहे हैं। - नाथ प्रसाद बी दीक्षित, औरंगाबाद। (जून, 1998)

श्रीहरिः

कान्यकुब्ज मंच पत्रिका का अवलोकन कर जगद्गुरू शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका पीठाधीश्वर स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज को हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस घोर कलिकाल में ब्राह्मणों का संगठन अत्यन्त आवश्यक है। संगठन से समाज की शक्ति बढ़ जाती है। प्रारंभकाल से ब्राह्मण समाज और राष्ट्र का नेतृत्व करते रहे हैं। आज ब्राह्मणों को मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इसके लिए कान्यकुब्ज पत्रिका का प्रकाशन अत्यन्त आवश्यक है। हमारी जो प्राचीन परम्पराएं हैं, उन्हें किसी भी मूल्य पर नहीं छोड़ना चाहिए। प्राचीन परम्पराएं तथा पूर्वजों का इतिहास ही हमें दिशानिर्देश देता है। जिससे हमारा समाज नैतिकता एवं चारित्रिक पतन से बचता है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु पूज्यपाद जगदगुरुजी अपना मंगल शुभाशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

- ब्रह्मचारी सुबुद्धानन्द, निजी सचिव, पूज्यपाद शंकराचार्यजी (दिसम्बर, 2006 अंक)

22. पत्रिका के माध्यम से जो सेवा आप कर रहे हैं वह स्तुत्य है। पत्रिका का सतत प्रकाशन, आपकी निष्ठा, परिश्रम एवं जागरूकता का प्रमाण है, जो शलाघनीय है। - पी एन दीक्षित, ग्वालियर। (सितम्बर, 1998)

23. पत्रिका द्वारा ब्राह्मणों की एकता का प्रयत्न अति सराहनीय है। ब्राह्मणों के उत्थान से देश उन्नति करेगा। - दिवाकर वाजपेयी, प्रयागराज। (सितम्बर, 1998)

24. 'वात्स्यायनोवाच' उत्कृष्टतम भावबोध के गुरु गम्भीर शब्दों से अभिमंत्रित आत्मपरख ज्ञान की वह वाणी है जिससे हृदयहीनता का उपचार सम्भव होगा। शब्द शक्ति और शब्द सामर्थ्य की अर्थमयी अभिव्यक्ति इसमें समाहित है। - डॉ सूर्यप्रसाद शुक्ल, कानपुर। (दिसम्बर, 1998)

25. सपरिवार सम्मान सभी को, ज्योतिपर्व अभिनन्दन।
वैभव स्वास्थ बढ़े निशिवासर, सुयश बढ़े ज्यों चंदन।
- डॉ रमेशमंगल वाजपेयी, सीतापुर। (दिसम्बर, 1998)

26. मन में आस थी, कर्म में विश्वास था, सामूहिक यह प्रयास

था कि स्वसमाज वृक्ष की जो शाखा मुंगेली की उर्वर धरा पर विकसित है उसकी नवनवीन कोंपलों को सुगठित करे तथा समाज वृक्ष पर उसकी नवल पहचान हो। आज आस फलीभूत हुई, कर्म का फल मिला, प्रयास ने साकार रूप धरा। आपका आशीष वचन, साथ मार्गदर्शन मेरा सम्बल बना। - सुशील शुक्ल, विलासपुर। (दिसम्बर, 1998)

27. मैं आपका साधुवाद करता हूँ कि आप अपने सामने अपने सुयोग्य सुपुत्र को कार्यभार सौप रहे हैं। वह इस उत्तरदायित्व को भलीभांति निभायेंगे। आपके अनुभव व मार्गदर्शन का लाभ भी इन्हें मिलेगा। - धरनीधर त्रिवेदी, गाजियाबाद। (जून, 1999)

28. आपके अथक व निस्वार्थ प्रयास को कान्यकुब्ज समाज कभी नहीं भूल पायेगा। - राजनारायण अवस्थी, चंडीगढ। (जून, 1999)

29. नूतन सम्पादक के सम्पादकत्व में प्रकाशित प्रथम संस्करण ही अत्यंत श्रेष्ठ विषय सामग्री के साथ प्रकाशित हुआ। मैं नए सम्पादक आशुतोष पाण्डेय की प्रशंसा करते हुए आशा करता हूँ कि Well begun half down उक्ति अनुसार पत्रिका का हर अंक उच्चकोटि का होगा। - हेमशंकर शुक्ल, कानपुर। (जून, 1999)

30. नए रूप में प्रकाशित कान्यकुब्ज मंच की प्रति देखकर हर्ष हुआ। यह एक अच्छा कदम है। - अनुपम पाण्डेय, खागा, फतेहपुर। (मार्च, 2000)

31. आपके लगन के कारण ही कान्यकुब्जों की पहचान खत्म होने से बच रही है। हम बिहारवासी कान्यकुब्ज मंच के माध्यम से ही अपने अतीत को जान पाते हैं। अपने पूर्वजों की जन्मस्थली की याद ताजा करके गौरव का अनुभव करते हैं। - अरविन्द कुमार मिश्र, भागलपुर। (जून, 2000)

32. पत्रिका सम्पूर्ण ब्रह्म समाज मे सांस्कृतिक चेतना की लहर बन गयी है। - रमेश तिवारी 'विराम', कन्नौज। (मार्च, 2001)

33. पत्रिका प्रगति कर रही है और प्रकाशन पिछले अंकों की अपेक्षा अधिक आकर्षक है। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के संक्षिप्त परिचय से पत्रिका की उपयोगिता बढ़ गयी है। - डॉ शीतलाचरण द्विवेदी, रायबरेली। (जून, 2001)

34. महिला विशेषांक देखकर जितना सुन्दर आवरण लगा, उससे अधिक आंतरिक पाठ्य सामग्री। आशुतोष के सम्पादन में पत्रिका विकास की यात्रा गति तीव्र हो चली है। - डॉ बद्रीनारायण तिवारी, कानपुर। (सितम्बर, 2001)

35. महिला सशक्तिकरण वर्ष में पत्रिका समाहित नारी विषयक सामग्री का श्रेष्ठ सम्पादन, उक्त अंक का सफल-सार्थक व स्तुत्य कोण है। भारतीय नारी के महिमामण्डित पक्ष का सफल उद्घाटन हुआ है। - डॉ रमेशमंगल वाजपेयी, सीतापुर। (सितम्बर, 2001)

36. कान्यकुब्ज समाज का यह दुर्भाग्य ही है कि समाज में स्वस्थ चेतना करने वाले लेखकों का सर्वथा अभाव हो गया है। जबकि पहले की अपेक्षा आज इसकी अधिक जरूरत है। हमारा खानपान ही नहीं दूषित हुआ बल्कि हमारी भावना भी दूषित हो गयी है। भावना की शुद्धि आवश्यक है। कान्यकुब्ज समाज के लिए आप द्वारा किया गया कार्य सदा स्मरणीय रहेगा। - डॉ वरुणकुमार तिवारी, सुपौल, बिहार। (दिसम्बर, 2002)

37. कान्यकुब्ज मंच का वर्ष 15 अंक 3-4 पढ़कर इस बात पर हर्ष हुआ कि आज भी श्री बालकृष्ण के समान समाजसेवी हैं जो पत्रिका के माध्यम से सामाजिक जागृति के साथ भारतीय संस्कृति और सभ्यता का दिग्दर्शन कर रहे हैं। विभिन्न कार्यक्रमों और गोष्ठियों के समाचार और वर-बधू खोजने समुचित परिवारों का उल्लेख प्रशंसनीय है। - आर के त्रिवेदी, भू पू राज्यपाल, गुजरात। (जून, 2002)

38. बालकृष्ण के ध्यान से मिलता है आल्हाद।
आयुजयी जो ब्राह्मण, उससे दूर प्रमाद।
-डॉ रामप्रसाद मिश्र, दिल्ली। (सितम्बर, 2002)

39. आप द्वारा इस अवस्था में भी अदम्य उत्साह के साथ नियमित, विधिवत पत्रिका प्रकाशन सर्वथा स्तुत्य है। इसके लिए कान्यकुब्ज समाज आपका आभारी और ऋणी रहेगा। - देवेश्वर शुक्ल, महराजगंज (मल्लावां) हरदोई। (जून, 2003)

40. आदमी इस सत्य को यदि मैन ले।
आदमी यदि आत्मा को जान ले।
जन्म से मरणोत्सव होने लगे,
आदमी यदि सत्य को पहचान ले।
- डॉ उमाशंकर शुक्ल, इलाहाबाद। (सितम्बर, 2004)

41. मैं नेपाल राष्ट्र का निवासी हूँ। कान्यकुब्ज मंच वर्ष 5,

अंक 4 मार्च 1992 एक मित्र से प्राप्त हुआ। इस अंक में आपने 'नेपाल का कान्यकुब्ज परिवार' छापा है। पढ़कर आनन्दित हो गया। मैं भी नियमित पाठक बनना चाहता हूं। ब्राह्मण-संस्कृति अंक, व्रत, पर्व, परिवार, एवं विवाह अंक प्राप्त करना चाहता हूँ। - अरुण कुमार तिवारी, सप्तारी, नेपाल। (मार्च, 2006)

42. आप द्वारा संपादित एवं प्रकाशित कान्यकुब्ज मंच ब्राह्मणों के लिए एक अनमोल और अनुपम उपहार है। पत्रिका अपने आप में विशिष्ट ही नहीं, समाज के लिए ज्ञान, मार्गदर्शक एवं सुधारवादी है। प्रत्येक समर्थ व सम्पन्न ब्राह्मण को इसका आजीवन सदस्य बनना ही चाहिए। - दिनेशचंद्र दीक्षित, इटावा। (दिसम्बर, 2006)

43. प्राचीन परम्पराओं तथा पूर्वजों का दिशानिर्देश ही समाज को अनैतिकता एवं चारित्रिक पतन से बचाता है। आज समाज को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता अधिक है जो हमारी परम्पराओं एवं बुजुर्गों के इतिहास से सुलभ सम्भव है। -प्रमोदनारायण मिश्र, कानपुर। (जून, 2007)

44. पत्रिका प्राप्त हुई। गणमान्य लोगों के परिचय के साथ रीतिरिवाज व धार्मिक आस्थाओं की सामग्री उत्तम है। पत्रिका प्रारम्भ में आती रही। अब इसमें काफी परिवर्तन भी हुआ है। अच्छा लगा। - डॉ गिरिजाशंकर त्रिवेदी, सम्पादक-नवनीत, मुम्बई। (दिसम्बर, 2008)

45. कान्यकुब्ज मंच को जब मैंने नवजात शिशु के रूप में देखा था तब इसके भविष्य की मंगलकामना ही कर सकता था। पर आज यह कहने की विवशता है कि यह पत्रिका किसी भी व्यवसायिक पत्रिका की पंक्ति में आत्मविश्वास के साथ खड़ी रह सकती है। - डॉ जीवन शुक्ल, कन्नौज। (जून, 2008)

46. कान्यकुब्ज मंच का अंक मिला। कई लेख पढ़ने लायक हैं। आप अपना कार्य 'एकला चलो र' की तर्ज पर करते रहे। ईश्वर आपको दीर्घायु प्रदान करें। आज लोकगीतों का अभाव हो रहा है। निवेदन है लोकगीतों को संकलित कर पुस्तक का रूप दें। - रामकृष्ण त्रिवेदी, पूर्व राज्यपाल व पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त। अप्रैल, 2009)

47. ब्राह्मणों में 'कान्यकुब्ज' एक श्रेष्ठतम अंश के रूप में जाना जाता है। इस पत्रिका ने एक मंच दिया है। - डॉ राजेन्द्र अवस्थी, सम्पादक-कादम्बिनी। (जून, 2009)

48. अप्रैल 2010 की दो प्रतियां मिली हैं। पत्रिका विषयवस्तु और प्रस्तुति दोनों ही दृष्टियों से उत्तरोत्तर श्रेष्ठतर हो रही है। इस अंक में किसी कारण पाठकों के पत्र नहीं हैं। पाठकीय किसी भी पत्रिका के लिए अधिक जीवनदायी होता है। - आचार्य सेवक वात्स्यायन, कानपुर। (जुलाई, 2010)

49. कान्यकुब्ज मंच पत्रिका में प्रकाशित वर-बधू के माध्यम से अपनी पुत्री आयु. रंगोली का विवाह चि. मयूर अवस्थी के साथ सम्पन्न कराया। मैं और मेरा परिवार कान्यकुब्ज मंच का आभारी रहेगा। - अरुण मिश्र, कानपुर। (जुलाई, 2010)

50. चि. आशुतोष व अन्य पुत्रों द्वारा अपनी पूजनीय माता जी पर प्रकाशित स्मारिका देखी। आत्मिक आनन्द हुआ। आज की इस भोगवादी सभ्यता में माता-पिता का स्थान दिनानुदिन उपेक्षित किंवा गौण होता जा रहा है। इस प्रकार का श्रद्धा प्रकाशन स्तुत्य एवं श्लाघ्य है। - हरिनन्दन सुकुल, भगवंतनगर, मल्लावां। (दिसम्बर, 2010)

51. पत्रिका के लेख तथा वात्स्यायनोवाच स्तम्भ कुछ झकझोरते हैं, विचार देते हैं, आंतरिक टीस को बढ़ाते हैं।वात्स्यायनोवाच में तो आचार्यजी के खारेपन की खुशबू से दिल बाग-बाग हो जाता है। गागर में सागर भरने वाली यह पत्रिका आज समाज की जरूरत बन गयी है। - संतोष मिश्र, कानपुर। (मार्च, 2011)

निवेदन - पत्रिका के 'पत्र मिला' स्तम्भ में प्रकाशित पत्रों को बारीकी से खंगाला, परिणामतः इस बात की पुष्टि तो हो गयी कि पत्रिका सर्व मनभावन है। किसी भी पत्रिका की उपयोगिता एवं महत्व का मापदंड, उसमें छपने वाले लेखों तथा विषयवस्तु के चयन, उनका सूक्ष्म विवेचन, समाज के उन्नयन सम्बन्धी विचारों का अनुधावन आदि पाठकों की प्रतिक्रियाओं से ही किया जा सकता है। इस दृष्टि से कान्यकुब्ज मंच के संस्थापक सम्पादक श्री बालकृष्ण पाण्डेय जी हर पहलू से सर्वश्रेष्ठ रहे तथा पत्रिका की एक ठोस आधारशिला रख दी। वर्तमान सम्पादक आशुतोष पाण्डेय के हाथों में भी पत्रिका का भविष्य सुरक्षित है। मैं अपने पिताश्री डॉ रमेशमंगल वाजपेयी तथा आदरणीय श्वसुर श्री प्रमोदनारायण मिश्र जी का आभार व्यक्त करती हूं, जिनके सुझाव से यह आलेख सम्भव हो सका।❒

श्रृद्धांजलिः कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

कानपुर। 23 जनवरी, 2019। वरिष्ठ साहित्यकार, समाजसेवी व कान्यकुब्ज मंच के संस्थापक सम्पादक बालकृष्ण पाण्डेय की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में कन्नौज से पधारे कवि - साहित्यकार **डॉ जीवन शुक्ल** ने उन्हें एक संकल्पवान व कर्मयोगी साधक बताया। डॉ शुक्ल ने कहा कि 32 वर्ष पहले जब पाण्डेय जी ने मंच पत्रिका के प्रकाशन की बात की तो मैंने उन्हें निरुत्साहित किया। उस समय धर्मयुग का प्रकाशन बन्द हो चुका था। सारिका, दिनमान, साप्ताहिक हिन्दुतान आदि बड़े ग्रुपों की पत्रिकाएं भी बन्द होने के कगार पर थीं। 62 वर्ष की अवस्था में सामाजिक, सांस्कृतिक पत्रिका के सम्पादन-प्रकाशन का बीड़ा उठाना और 32 वर्षों तक अनवरत चलते रहना पांडेयजी के कठिन श्रम व अद्भुत लगन का परिचायक है।

प्रतिष्ठ न्यूरो सर्जन **डॉ आई एन वाजपेयी** ने बालकृष्ण पाण्डेय के कृतित्व की चर्चा करते हुए कहा कि अध्यापन कार्य से अवकाशप्राप्त के बाद अपना श्रम समाज को समर्पित कर दिया था। भारतीय संस्कृति के सुभाषित युगपुरुष ने आने वाली पीढ़ियों को एक रास्ता दिखाया है। जयतु हिन्दू विश्व के सम्पादक **विजयप्रकाश त्रिपाठी** ने पांडेयजी को निराला और प्रेमचंद की श्रेणी का रचनाकार बताते हुए कहा कि गम्भीर विषयों पर सहज भाषा में लिखी गयी कहानियां, लघुकथाएं, लेख हिन्दी साहित्य की धरोहर हैं। संक्षिप्तिकरण की अद्भुत कला थी उनमें। **भोजदेव मुदित** ने बालसाहित्य पर लिखे उनके निबंधों का जिक्र किया। बाल मित्र के नाम से प्रकाशित बच्चों के नाम पाती बाल साहित्य की धरोहर है। आचार्य कृष्णविनायक फड़के, गिल्लूमल बजाज, लोकेश्वरनाथ सक्सेना के साथ बाल आंदोलन की दिशा में उनके प्रयासों का स्मरण किया। **प्रमोद नारायण मिश्र** ने आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय को एक प्रेरणापुरुष बताया। उन्होंने हिंदी साहित्य को कई लेखक, सम्पादक दिए। पाण्डेय जी के रेखाचित्रों में गांव-गवइयों के हर तबके की झांकी देखने को मिलती है। राज्य सरकार की पत्रिका उत्तरप्रदेश, त्रिपथगा, कादम्बिनी, निहारिका में उनकी रचनाएं प्रमुखता से छपतीं। **विश्वबन्धु वाजपेयी** ने उन्हें उपेक्षित वर्ग का प्रेमचंद और बच्चों का काका बताया। विपरीत परिस्थितियों में भी अनुकूलता खेजते रहे और निरन्तर संघर्षशील रहे।

देवेन्द्र मिश्र ने कहा कि कठोर से कठोर आलोचना को निष्पक्ष भाव से लेना, मंच और माला से परहेज तथा दूसरों की अभिव्यक्ति को अवसर देना, समाजसेवा के प्रति आदरणीय फूफाजी की अटूट निष्ठा का स्मरणीय मार्गदर्शक रहेगा। प्राचार्या **डॉ. प्रेम कुमारी मिश्रा** ने कहा स्वर्गीय पाण्डेय जी कभी भी उपलब्धियों को अपने कंधे पर लेकर नहीं चले। सामाजिक दायित्व बोध के साथ साधनानिष्ठ और जीवनमूल्यों में पूर्णतः उदार रचयिता से अभी ढ़ेर सारी अपेक्षायें थी। फरीदाबाद से आए **कृष्ण कुमार सिंह** ने आदरणीय पाण्डेय जी के साथ बिताये क्षणों को याद किया एवम् भावुकता भरे शब्दों में उनके जीवन के अन्तिम दिनों में उनकी पुत्रवधू अर्चना की सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। ❐

श्रद्धांजलि

17 मार्च'19। पूर्व श्रमायुक्त (केंद्रीय) पं. रामकिशोर शुक्ल का निधन। सेवानिवृत्ति के बाद शुक्ल जी ने ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के उत्थान तथा गरीब-उपेक्षित बच्चों के लिए गांव सैवसू (बिल्हौर, कानपुर देहात) में जनकल्याण इंटर कॉलेज के प्रबंधक पद पर रहते हुए अपना जीवन खपा दिया। शुक्लजी के इस जीवट प्रयास को बिल्हौर क्षेत्र की ग्रामीण जनता भुला नहीं पाएगी। उनकी आत्मा की शांति के लिए परमपिता से प्रार्थना है। ॐ शांतिः ❐

कानपुर में सर्वब्राह्मण सम्मेलन

अभा कान्यकुब्ज ब्राह्मण महासभा का दो दिवसीय सर्व ब्राह्मण राष्ट्रीय सम्मेलन कानपुर में सम्पन्न। मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता, हैदराबाद, अहमदाबाद, रायपुर, भोपाल, सतना, बिलासपुर, हरियाणा, कोटा, जयपुर, अकोला, अमरावती आदि स्थानों के अलावा उप्र के विभिन्न अंचलों से उपस्थित ब्राह्मण प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने जता दिया कि अब ब्राह्मण राजनीतिक शोषण को सहन करने वाला नहीं है। सम्मेलन में ब्राह्मणत्व के गुणों को जीवन में उतारने व ब्राह्मण संस्कृति की रक्षा करने का भी प्रस्ताव पास हुआ। डॉ रामचन्द्र तिवारी (हैदराबाद), पं. लक्ष्मीकांत तिवारी (कोलकाता), विधायक श्री महेश दीक्षित, विधायक श्री सत्यदेव पचौरी, डॉ. सतीशचन्द्र शुक्ल (भिंड), एडवोकेट रविन्द्र तिवारी (भोपाल), श्री अशोक शुक्ल (कोलकाता), श्री अजय शुक्ल (मुम्बई) आदि की समुपस्थिति में सम्पन्न हुए द्विदिवसीय कार्यक्रम के संयोजक श्री शिवसहाय मिश्र व श्री महेश मिश्र की टीम बधाई की पात्र है।

श्री अजय शुक्ल (मुम्बई) राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत

पं. लक्ष्मीकांत तिवारी (कोलकता) के साथ श्री अजय शुक्ल (मुम्बई)

श्री अजय अमरनाथ शुक्ला (मुम्बई) को रविवार, 23 दिसम्बर 2018 को कानपुर में सर्व ब्राह्मण सम्मेलन में अखिल भारतीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण महासभा का राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उत्साही, कर्मठ, उदारहृदय श्री अजय शुक्ल ऊर्जावान युवा हैं। अजय जी के नेतृत्व में देश का ब्राह्मण संगठन अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेगा।

आरोग्य के लिए वृक्षारोपण

17 मार्च, 2019। भगवान परशुराम सर्वकल्याण सेवा समिति के महामंत्री श्री शेषनारायण त्रिवेदी 'पप्पू' जी के सत्प्रयास से एवम 'आरोग्य भारती' के सहयोग से परशुराम - वाटिका, कानपुर में औषधियों के 60 पौधों का वृक्षारोपण हुआ। गुड़हल, भृंगराज, अनंतमूल, स्वर्णगन्धा, आंवला, अजवायन, रचना, निर्गुण्डी, हरी चाय, अश्वगंधा, नागोरी,घीक्कार, बेल, अशोक, सुदर्शन, कांचनार,केवड़ा, चमेली, बड़ी इलायची आदि के पौधरोपण में सीमा द्विवेदी, डॉ वी एन आचार्य, श्री राजेश शुक्ल, डॉ जी एन द्विवेदी, डॉ शशि किरण पाण्डेय आदि ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।❒

विधुर-विधवाओं के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन 10-11 अगस्त को रायपुर में

प्रादेशिक कान्यकुब्ज ब्राह्मण सभा, छत्तीसगढ़ के महासचिव आलोक तिवारी ने सूचित किया है कि विधुर, विधवाओं तथा तलाकशुदा अविवाहित लोगों के लिए सर्वब्राह्मण सम्मेलन आगामी 10-11 अगस्त, 2019 को रायपुर के रामस्वरूपदास निरंजनलाल धर्मशाला में आयोजित होगा। देश तथा विदेश में बसे सभी वर्ग के ब्राह्मणों के लिए आयोजित उक्त सम्मेलन अपने आप में एक विशिष्ट पहचान कायम करेगा। अधिकतम जानकारी के लिए संस्था की वेबसाईट www.kanyakubjvivah.com से या 9425205353 (आलोक तिवारी), 9425204324 (सुरेश मिश्र), 9300077897 (राजेश दीक्षित), 9977559991 (हेमन्त तिवारी) से संपर्क किया जा सकता है।

नई दिल्ली में हुआ 'कान्यकुब्ज मंच' के कुम्भ-विशेष का लोकार्पण

13 जनवरी, 2019। ब्राह्मण समाज ऑफ इण्डिया द्वारा फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली में आयोजित खिचड़ी उत्सव में ÷कान्यकुब्ज मंच÷ पत्रिका के 'कुम्भ-विशेष' अंक का लोकार्पण भारत सरकार के वित्त राज्यमंत्री पं. शिवप्रताप शुक्ल, पूर्व मंत्री व सांसद माननीय कलराज मिश्र, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ विश्वपति त्रिवेदी (आईएएस) व अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में हुआ।

पत्रिका का लोकार्पण करते हुए श्री विश्वपति जी ने कहा कि 'कान्यकुब्ज मंच' के संस्थापक सम्पादक का अभी तीन दिन पहले गोलोकवास हो जाना हम सब के लिए दुःख का विषय है। 95 वर्षीय पाण्डेय जी जाने माने साहित्यकार, समाजसेवी, ब्राह्मण कुल भूषण थे। आज के समय मे पत्रिका प्रकाशन एक दुःसाध्य कार्य है, ऐसे में 32 वर्षों से नियमित पत्रिका प्रकाशन पाण्डेय जी की समाज के प्रति निष्ठा को दर्शाता है। माननीय कलराज मिश्र ने बताया कि 'कान्यकुब्ज मंच' यदा कदा हमें भी पढ़ने को मिली है। समाजिक, नैतिक, पारिवारिक तथा ब्राह्मण संस्कृति से जुड़े सारगर्भित लेख पत्रिका की गरिमा को बढ़ाते हैं। वित्त राज्यमंत्री पं. शिवप्रताप शुक्ल का कहना था कि ऐसे महायोगी समाज में बिरले ही होते हैं जो समाज के सभी वर्गों में समन्वय बनाने के लिए अपनी कलम, अपने साहित्य और पत्रकारिता का सदुपयोग करते हैं। समारोह में न्यायमूर्ति शोभा दीक्षित, पूर्व मंत्री सुखदा मिश्रा, पूर्व सांसद लालबिहारी तिवारी, श्री रामेश्वर दयाल दीक्षित, श्री उत्तम तिवारी, श्री महेश चन्द्र तिवारी, सर्वोदय कार्यकर्ता श्री उमाशंकर पाण्डेय सहित बड़ी संख्या में ब्राह्मण बन्धु उपस्थित रहे। तिवारी ब्रदर्स के अधिष्ठाता श्री रविकान्त तिवारी के सौजन्य से सुरुचि खिचड़ी भोज की व्यवस्था रही।❐

–उमाशंकर पाण्डेय, खजुराहो

गुरुग्राम में विश्व ब्राह्मण सम्मेलन

9 फरवरी, 2019। वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन द्वारा आयोजित ब्राह्मण सम्मेलन में फेडरेशन के अध्यक्ष पं. मांगेराम शर्मा, केंद्रीय पर्यटन मंत्री महेश शर्मा, हरियाणा सरकार के शिक्षामंत्री रामविलास शर्मा, सांसद कलराज मिश्र, सांसद रमेश कौशिक, फेडरेशन के उपाध्यक्ष डॉ सुरेश पचौरी, विधायक टेक चन्द्र शर्मा सहित बड़ी संख्या में ब्राह्मण प्रतिनिधियों ने भाग लिया। फेडरेशन ने ब्राह्मण बैंक की स्थापना तथा हर वर्ष 100 मेधावी व आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को उच्च शिक्षा में आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने का प्रस्ताव पास किया।❐

प्रो. त्रिवेदी को वैश्विक सम्मान

लन्दन स्थित कॉमनवेल्थ सचिवालय के वरिष्ठ निदेशक प्रोफेसर प्रजापति त्रिवेदी को लोकप्रशासन में उनके अहम योगदान के लिए वर्ष 2019 का प्रतिष्ठित 'हैरी हैट्रिक डिसिप्लिन्ड परफॉरमेंस मैनेजमेंट प्रैक्टिस अवॉड' प्रदान किया गया है।श्री प्रजापति अंतरराष्ट्रीय स्तर का यह प्रतिष्ठित पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय हैं। लोकप्रशासन से सम्बद्ध अमेरिकी सोसाइटी 'द सेंटर ऑफ एकॉउंटेबिलिटी एंड परफॉर्मेंस' ने वाशिंगटन में आयोजित एक समारोह में श्री त्रिवेदी को यह सम्मान दिया। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी व प्रतिष्ठ अर्थशास्त्री प्रजापति त्रिवेदी उप्र के पूर्व मुख्य आयकर आयुक्त कीर्तिशेष धरनीधर त्रिवेदी के पुत्र तथा ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष अवकाशप्राप्त आईएएस विश्वपति त्रिवेदी के भाई हैं। 'मंच पत्रिका' प्रजापति जी को इस उपलब्धि पर गर्वमिश्रित शुभकामनाएं देती है।

शिवांकुर का गौरवपूर्ण योगदान

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 20 रुपये का एक विशेष प्रकार का सिक्का जारी किया है। विशेषकर दृष्टिबाधितों के लिए बनाये गए 20 मिलीमीटर व्यास का इस सिक्के में 12 कोन होंगे जबकि अन्य सिक्के गोल होते हैं।

8 मार्च को प्रधानंत्री आवास पर जारी एक समारोह में वित्तमंत्री अरुण जेटली व अन्य लोगों के साथ विधिक योगदान देने वाले श्री शिवांकुर शुक्ल (एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट) भी उपस्थित थे। चि. शिवांकुर 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका के विधि सलाहकार सांकृत अजीत शुक्ल के आत्मज हैं। इस गौरवपूर्ण योगदान के लिए 'मंच' शिवांकुर को बधाई और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

प्रधानमंत्री आवास में चि. शिवांकुर शुक्ल चित्र में सबसे बायें

2003 दिल्ली के अशोका होटल में तीनदिवसीय विश्व ब्राह्मण सम्मेलन अविस्मरणीय रहेगा। संगठन का विस्तार करते हुए ब्राह्मण समाज ऑफ नॉर्थ अमेरिका के साथ ओपचारिकरूप से एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करके ब्राह्मण-एकता को वैश्विक स्वरूप देने का संकल्प लिया गया। आज दुनिया के लगभग 50 से अधिक देशों में ब्राह्मण संस्थाएं सक्रिय हैं।

श्री आर डी दीक्षित ने सामाजिक सेवा के इस कार्य को दलगत राजनीति से अलग रखा। इनका मानना है- 'राजनीति अल्पकालिक और आरोपित अस्तित्व है। इसलिए जो कृत्रिम है उनके साथ जीना, जीवन का अपव्यय करना है।' दीक्षित जी का ब्राह्मण संगठन युवाओं के चरित्र-निर्माण, संस्कृति के संरक्षण व ब्राह्मणोंका राष्ट्रीय उन्नयन तथा सामाजिक समरसता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान के लक्ष्य के साथ रहा। दीक्षित जी मानवोचित शालीनता और निराभिमान सुजनता के प्रतीक हैं। सफलता का श्रेय युवाओं और कार्यकर्ताओं को देने के विशेष गुण के चलते लोग इनसे जुड़ते गए। ऐसे समय मे जब समाज का उच्चवर्ग संगठन से जुड़ने में संकोच करता है और उपेक्षित वर्ग को हम जोड़ नहीं पा रहे हैं, दीक्षित जी के व्यक्तित्व के आकर्षण और कार्यशैली ने राजनेताओं, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, उद्योगपतियों, व्यवसायियों, न्यायाधीशों, शिक्षाविदों, साहित्यकारों, पत्रकारों से लेकर सामान्य रोजी कमाने वालों, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों सभी को एक मंच पर लाकर इकट्ठा कर दिया। पूर्वप्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी, पी वी नरसिम्हाराव, नारायणदत्त तिवारी, शीला दीक्षित, राजेंद्रकुमारी वाजपेयी, न जाने कितने व्यक्तित्व हैं, जो अपने व्यस्त कार्यक्रमों से समय निकालकर दीक्षित जी से ब्राह्मण संगठन पर विमर्श करते।

कहना न होगा, ब्राह्मण समाज के नवजागरण का ज्योतिवाह बनने का श्रेय श्री रामेश्वर दयाल दीक्षित को प्राप्त है। ब्राह्मण संगठन के इस सारस्वत कार्य में दीक्षित जी की पत्नी स्मृतिशेष सरोजनी दीक्षित जी के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। अखिल भारतीय संगठन के पूर्व अध्यक्ष स्मृतिशेष आनन्दकुमार मिश्र (राजधानी फिल्म्स) एवं उप्र के पहले मुख्य आयकर आयुक्त धरनीधर त्रिवेदी का निर्देशन व प्रेरणा दीक्षित जी के प्रयास को आगे बढ़ाता रहा।

दीक्षित जी का पत्राचार, समन्वयवादी दृष्टिकोण, प्रशंसा व अलोचनाओं को समभाव से लेने की उदारता, बातचीत में निपुणता, संगठनात्मक क्षमता, असीमित धैर्य इन्हें साधारण से असाधारण बनाता है। जीवन के नोवें दशक में जब शारीरिक सक्रियता क्षीण होने लगती है, संरक्षक, अभिभावक के रूप में हम कार्यकर्ताओं को उनका आशीष, मार्गदर्शन लम्बे समय तक मिलता रहे, इस सद्भावना के साथ दीक्षित जी के स्वस्थ और सक्रिय जीवन की कामना करते हैं।❒

पं. रामेश्वर दयाल दीक्षित को 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवार्ड

17 मार्च'19। ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया की उप्र प्रांतीय इकाई ने अपने राष्ट्रीय चेयरमैन श्री रामेश्वर दयाल दीक्षित को ब्राह्मण संगठन की दिशा में 6 दशकों से अधिक किये गए अथक प्रयासों व निस्पृह सेवाओं के लिए 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवार्ड' (जीवनपर्यन्त सेवा सम्मान) से समादृत किया। कानपुर के मर्चेन्ट चेम्बर सभागार में आयकर आयुक्त श्री अरविन्द त्रिवेदी, पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री आर के चतुर्वेदी, विधायक श्री अरुण पाठक, ब्राह्मण समाज ऑफ नार्थ अमेरिका के चेयरमैन डॉ श्रीकान्त मिश्र, ज्योतिषविज्ञ श्री पदमेशजी, श्री उत्तम तिवारी, श्री दिनेश दुबे तथा देश के विभिन्न अंचलों से पधारे समाज के विशिष्ट महानुभावों की समुपस्थिति में श्री आर डी दीक्षित का पुष्पहार, शॉल, भगवान परशुराम की प्रतिमा के साथ एक आकर्षक शील्ड भेंट कर सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

कानपुर देहात जनपद की घाटमपुर तहसील अंतर्गत ग्राम- बलहापारा के शाण्डिल्य गोत्रीय स्मृतिशेष पं. देवीगुलाम दीक्षित के घर जन्में रामेश्वर दयाल जी ने कानपुर के बी एन एस डी कॉलेज से 12वीं व डी ए वी कॉलेज से वाणिज्य स्नातक कर अपने कैरियर की शुरुआत की। जातीयता की भावना से ओतप्रोत, ब्राह्मणत्व की उदात्तता से अनुरंजित आर डी दीक्षित अपने युवाकाल में ही वर्ष 1955-56 के दशक में कानपुर में होने वाली ब्राह्मण समाज की बैठक-गोष्ठियों में बतौर कार्यकर्ता योगदान करते। वर्ष 1969 में रोजगार के सिलसिले में दिल्ली चले गए और गार्हस्थिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए कान्यकुब्ज समाज एवं ब्राह्मण संगठन को गति देने में प्राणपण से जुट गए।

दिल्ली कान्यकुब्ज समाज (दिकास) के अध्यक्ष पद पर रहते नियमित बैठकों-गोष्ठियों का संचालन, कान्यकुब्ज निर्देशिका का प्रकाशन, पारिवारिक परिचय-सम्मेलनों के जरिये दिल्ली के कान्यकुब्ज परिवारों को आपस में मिलाने का महती कार्य किया। समाजसेवा दीक्षित जी का शौक कम, व्यसन ज्यादा है। देश के अन्य ब्राह्मणों के वर्गों-उपवर्गों को एक मंच में लाने तथा विभिन्न ब्राह्मण-संस्थाओं को एकसूत्र में बांधने का संकल्प ले वर्ष 1980 में आल इण्डिया कान्यकुब्ज बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड के समन्वय समिति की बैठकें विभिन्न प्रान्तों के लगभग हर मुख्य शहरों में दीक्षित जी के नेतृत्व व सत्प्रयास से ब्राह्मण-सम्मेलन आयोजित हुए। जिन जिलों या प्रदेशों में संगठन नहीं थे, वहां संस्थाओं की स्थापना की।

ब्राह्मण संस्कृति के उन्नयन, पोषण, संवर्धन में कुछ उठा न रखने वाले दीक्षित जी नदी का वह प्रवाह बन गए, जहां लहरें स्वयं चलकर आतीं और किनारों से टकराकर तटों-तीर्थों का निर्माण करतीं। विवाहयोग्य बच्चों के लिए यथायोग्य जीवनसाथी चुनने में अभिभावकों की मदद करना दीक्षित जी का टशन है।

भारत सरकार के पूर्व गृहमंत्री व कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल कीर्तिशेष उमाशंकर दीक्षित के जन्मदिवस (12 जनवरी) के आयोजन उनके चाणक्यपुरी निवास पर होता। शीला जी आतिथ्य-सत्कार का उत्तरदायित्व संभालती। रामनवमी कीर्तिशेष धरनीधर त्रिवेदी के गाजियाबाद निवास पर रामायण-पाठ का आयोजन होता। रेलवे बोर्ड के चेयरमैन ए एन शुक्ल, आईएएस राजेश मिश्रा, सुभाष तिवारी, डी के मिश्र, रमाकांत दुबे, संतोष तिवारी, डॉ आर के दीक्षित, प्रवासी भारतीय उद्योगपति अशोक त्रिवेदी आदि का भरपूर सहयोग मिलता।

आलइंडिया कान्यकुब्ज बोर्ड, पं. मांगेराम शर्मा (विश्व ब्राह्मण संघ), कीर्तिशेष आचार्य प्रभाकर मिश्र (ब्राह्मण इंटरनेशनल), डॉ संगम मिश्र (जयपुर) के सत्प्रयास से दिसम्बर,

शेष पृष्ठ 44 पर

ICS
Hospitality Services

I.C.S. FOODS PVT. LTD.

#909-910, Emaar MGF, Palm Square, Golf Course Extension Road,
Sector-66, Gurugram-122102, HARYANA
Phone: 0124-4554956, 57, 58 Visit us: www.Icsfoods.in

SKYLINE SCHOOL

A DAY BOARDING PLAY SCHOOL

A Home away from Home

- Play Group to Nursery Grade
- English Medium
- Door to Door Pick and Drop
- Well Trained Teachers
- Swimming Pool, Play Area, Rides

NS-24, Block-G, Delta 1st Greater Noida
Phone: 0120-2321746, Mobile: 8130557885

वैवाहिक विवरण

युवा वर्ग

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
1	Aadhar	Kashyap		28.11.84	5'6"	B.Tech	Working	Dubai	Rajesh Tiwari	Lucknow	9415577890
2	Abhay	Kashyap	Aadi	11.11.87	5'10"	Graduate	P O Bank	Shahjahanour	O N Tiwari	Kanpur	9450325519
3	Abhijeet	Upmanyu		34 Yrs.	5'9"	M.B.A(IIM)	MNC	Mumbai	Y.K.Bajpai	Kanpur	9616423242
4	Abhijeet	Bhardwaj	Divorcee	14.08.79	5'10"	B.Com, MBA	Working	New Delhi	Vijay Trivedi	Lucknow	9026844909
5	Abhinav	Upmanyu		15.11.85	5'5"	M.Sc.BioTech	Ph.D.	Lucknow	R.P.Shukla	Hardoi	9415562556
6	Abhinav	Bhardwaj		13.08.90	5'6"	B Tech	Business	Gurgaon	R S Shukla	Kanpur	8755558181
7	Abhinav	Kashyap	Aadi	15.08.81	5'9"	B.Com,M.B.A.	Working	Lucknow	J N Mishra	Lucknow	9453005857
8	Abhinav	Katyan	Madhy	13.03.88	6"	B.Tech	TCL	Pune	A.K.Dwivedi	Lucknow	9936452439
9	Abhishek	Kashyap	Aadi	07.04.89	5'5"	MA, Comp	State Govt	Tikamgarh	R R Pateriya	Tikamgarh	7987307518
10	Abhishek	Bhardwaj	Madhy	10.10.86	5'7	BCA MBA	Manager	Ireland	A. K Pandey	Lucknow	9450018055
11	Abhishek	Upmanyu	Madhy	18.11.90	5'8"	B Tech	MNC	Banglore	Girish Bajpai	Kanpur	9313340042
12	Abhishek	Upmanyu	Antya	24.02.83	5'9"	BBA, MBA	Working	Pune	Ruchi Tiwari	Kanpur	7275783984
13	Abhishek	Kantyan		16.06.84	5'10"	B Tech	Bisiness	Indore	S P Mishra	Rewa	9755328216
14	Abhishek	Upmanyu		22.08.89	5'6"	BE, MBA	Accenture	Mumbai	S Pathak	Sagar	8517071128
15	Abhishek	Bhardwaj	Madhya	15.12.80	5'10'	MCA	S/W Engg	Pune	R.S Pandey	Bhopal	9993912776
16	Abhishek	Upmanyu		16.02.93		B Tech MBA	Business		Mr Awasthi	Kolkata	9830082587
17	Abishek	Gautam		17.07.84	5'6"	B.Pharma	Business	Sagar	R.K.Chaubay	Sagar	9302933999
18	Abodh	Kashyap	Antya	16.05.88	5'10"	B.Tech.,	Educomp	Jalandhar	A.K.Dixit	Sitapur	9506110810
19	Adarsh	Katyan	Madhya	18.09.90	5'8"	BSC.ITI	Railways	Bilaspur	R Mishra	Bilaspur	9617822649
20	Aditya	Bhardwaj	Aadi	26.09.86	5'11"	B.Sc, MBA	MNC	Ghaziabad	S.C.Sharma	Kanpur	8896610810
21	Aditya			24.07.93	5'9"	LLB	Advocate	Delhi	A Tiwari	New Delhi	9711158848
22	Aishvarya	Kashyap	Antya	06.11.88	5'5"	MA,BED.	Working	Delhi	Rajesh Tripathi	Kanpur	9415569546
23	Ajay	shadilya	Madhya	01.01.83	5'5"	Diploma	Self Employ	Aurangabad	V Mishra	Aurangabad	8482824522
24	Akanksh	Upmanyu	Antya	29.09.90	5'5"	MBBS,MS(Ortho)	Doctor	Hyderabad	R. Dubey	Hyderabad	9676331222
25	Akash	Upmanyu	Aadi	11.07.90	5'11"	B.Tech	MNC		N Bajpai	Kanpur	7376299046
26	Akhil	Upmanyu	Madhy	28.06.93	5'8"	M.TECH(MNIT)	Cisco	Chennai	M.K Bajpai	Gwalior	9926518418
27	Akhilesh	Bharadwaj	Madhya	20.06.90	5'8"	B.COM	Service	Ludhiana	J SHUKLA	Kanpur	9779977894
28	Akhilesh	Bhardwaj	Manglik	17.12.87	6'	B.TECH	TCS	Kolkata	Pawan Shukla	Kolkata	9836067192
29	Akshat	Kashyap	Madhya	21.06.84	5'10"	B Tech PGDM	SBI Bank		S Tiwari	Mirzapur	9889613890
30	Akshay	Katyan	Aadi	18.11.88	5'8"	BBA, CCNA	MNC	Gurugram	U.N.Mishra	Lucknow	9897452185
31	Aman			24.02.95	6	BBA	TCS		K.P.Tiwari	Indore	7415035802
32	Aman	Bharadwaj	Antya	08.10.91	6"	BE	Manager	Ambicapur	G Trivedi	Kanpur	8085783341
33	Amar	Upmanyu	Antya	25.12.85	5'5"	M.Tech.	MNC	Pune	R.C.Awasthi	Delhi	8527395603
34	Ambuj	Shandilya	Madhy	21.07.88	5'8"	B.Tech.	S.W Engg	Hyderabad	Ashu Shukla	Kanpur	9305423006
35	Ambuj	Upmanyu	Madhya	25.05.90	5'7"	BA	Manager	Sitapur	N Bajpai	Sitapur	9721836631
36	Amit	Upmanyu	Antya	07.09.91	5'9"	BBA,LL.B	Manager	Noida	B.P Dwivedi	Kanpur	8604700313
37	Amit	Kashyap	Madhya	03.02.88	5'7"	B.E	Quality	Udaipur	G Tiwari	Udaipur	9414238854
38	Amit	Katyan	Antya	22.12.81	5'9"	MBA	S.C. Bank	Mumbai	R.N.Mishra	Basti	9451087111
39	Amit	Shandilya		15.08.84	5'8"	MCA,BED.	Teacher	Orai	A.K.Mishra	Orai	9889225623
40	Amit	Bhardwaj	Antya	33 YRS	5'8"	BCom	Sr Mngr		Shukla	Kanpur	9918905541
41	Amit	Kashyap		29.03.84	5'	B.Tech	CCI	H P	Uma Dixit	Lucknow	9455508989
42	Amit	Bhardwaj	Antya	20.10.86	5'5"	B.Com,B.ed	Govt. Teacher	Sitapur	R.K. Shukla	Lucknow	7275253924
43	Anand	Garg		15.05.85	6'2"	B E	Service	Gujrat	Pratibha Shukla	Kanpur	9329955405
44	Anirudh	Kashyap	Antya	30.04.87	5'4"	M.SC	Working	Himanchal	B Tiwari	Himanchal	8800422667
45	Ankan	Shandilya	Antya	16.09.92	6'1"	B.Tech	Infosys	Mysore	R.K. Dixit	Kanpur	7376692193

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV□LOCN.	PARENT□NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
46	Ankesh	Bhardwaj	Madhy	29.07.85	5'8"	B.Tech.,MBA	MNC	Banglore	A.K.Pandey	Bhopal	9425682050
47	Ankit	Shandilya	Antya	22.08.85	6'2"	B.Tech MBA	Bank Manager	Kanpur	A Mishra	Kanpur	9936483912
48	Ankit	Upmanyu	Aadi	01.17.90	6'	MBA	Biz.	Jaipur	A P.Agnihotri	Jaipur	9829068476
49	Ankit	Bhardwaj		11.03.87	6'	B Tech	Service	Banglore	R Trivedi	Kanpur	9450125732
50	Ankit	Bhardwaj		14.05.85	5'7"	M Com, MBA	Working	Noida	K K Pandey	Kanpur	9336998383
51	Ankit	Bharadwaj	Madhya	03.07.90	5'11"	B.Tech	Soft Engg	Mumbai	S Shukla	Kanpur	8449504748
52	Ankur	Kashyap	Madhya	29.06.88	6'1"	B.Tech	Soft Engg	Pune	R S tiwari	Bilaspur	7000649784
53	Ankur	Upmanyu		10.01.85	5'11"	M.Com	Voltas	Gurugram	Vipin Agnihotri	Delhi	9310396585
54	Ankur	Bhardwaj	Divorcee	19.06.83	5'11"	B.Tech.,	Working	Mumbai	B.C.Pandey	Allahbad	9335152604
55	Ankur	Bhardwaj		22.08.85	5'8"	MBBS	Doctor	Lucknow	Vinod Mishra	Lucknow	9005716002
56	Ankur	Upmanyu	Aadi	27.11.88	5'11"	MBA	MNC	Delhi	Rekha Dubey	Lucknow	8115277379
57	Anoop	Bhardwaj	Aadi	01.07.86	5.8'	B.Com,	Self Emplo	Ramaipur	D.C.Shukla	Kanpur	9235511276
58	Anshu	Bhardwaj	Aadi	12.01.85	5'10"	MBA	KPMG	Banglore	U.C Pandey	Jamshedpur	8969673776
59	Antariksh	Katyan	Aadi	23.11.89	5.7'	B-Tech,	MNC	Gurugram	K.K. Mishra	Kanpur	9415431600
60	Anu	Kashyap		13.06.89	5'9"	MBBS	Metro Hospital	Delhi	S.G Dixit	Farukhabad	7974621202
61	Anubhav	Bhardwaj		28.01.89	5'7"	B Sc	MNC	Mumbai	D K Mishra	Kanpur	9807730051
62	Anuchin	Bhardwaj		18.05.87	5'8"	MBA	Manager	Delhi	S.M Pandey	Kanpur	8800112538
63	Anugrah	Bhardwaj	Aadi	03.08.90	5'10"	B.Tec	Soft Engg	Lucknow	J K Dixit	Farukhabad	9415564604
64	Anuj	Upamanyu	Antya	8.15.74	5'5"	BA	Service	Mumbai	AK Dwivedi	Jalaun UP	9322141455
65	Anuj	Bharadwaj	Madhya	28.10.87	5'11"	High school	Business	Mumbai	R Tiwari	Kota	9892264363
66	Anupam	Kashyap	Antya	18.07.88	5'4"	M.Com,MBA	Moodiys	Gurgaon	N.S Tripathi	Lucknow	8172808302
67	Anuraag	Upmanyu		14.11.82	5'5"	B.Tech	Engg.	Maldives	S.N.Dwivedi	Unnao	9450056609
68	Anuraag	Upmanyu	Antya	07.07.87	6'1"	B.Tech, MBA	MNC	Mumbai	R.K.Dubey	Kanpur	8799035942
69	Anuraag	Bhardwaj		27.05.87	5'9"	B.Tech	SAIL	West Bangal	Anil Pandey	Sitapur	9839717959
70	Anuraag	Shandilya	Aadi	05.10.89	5'8"	B. COM, MBA	HR Officer	IOCL	D.D.Dixit	Lucknow	9956623791
71	Apporva	Upmanyu	Antya	18.10.89	5'8"	BA, MBA	Telcom Co.	Mumbai	A.K. Bajpai	Bilaspur	9424163106
72	Arihant	Bhardwaj		01.08.88	6'2"	MBA	MNC	Hyderabad	A Shukla	Hyderabad	9704916421
73	Arpan	Kashyap		01.05.88	5'10"	Diploma	Railways	Ahemdabad	S.C.Tiwari	Kanpur	7499614741
74	Arpit	Upmanyu	Madhya	15.11.87	6ft	B. Tech	Branch Manager	New Delhi	Rawasthi	Rewa	9399628312
75	Arpit	Upmanyu	Aadi	13.08.93	5'8"	B E	Working	Ratlam	M Awasthi	Indore	9806403394
76	Arpit	Katyan		13.09.90	5'11"	B.Tech, MBA	CISCO	Bengaluru	Piyush Mishra	Lucknow	9389912687
77	Arun	Upmanyu		03.08.90	5'9"	B.Tech, MBA	Service	Mumbai	R.C. Bajpai	Bhopal	7694004183
78	Arvind	Upmanya	Antya	25.08.88	5'4"	BA	Self Employ	Lucknow	S.N Dwivedi	Haidergarh	9455871884
79	Ashish	Upmanyu	Aadi	01.06.86	5'8"	BE	TCS	USA	R.S Dubey	Muzaffarpur	9430933254
80	Ashish	Upmanyu		09.09.88	5'9"	B.A.	Biz.	Lucknow	R.N.Trivdi	Lucknow	9454242424
81	Ashish	Katyan		03.12.84	5'9"	MBA	TCS	Banglore	Dinesh Mishra	Kanpur	8604999390
82	Ashish	Upmanyu	Aadi	07.11.81	5'7"	B Tech, MBA	MNC	Lucknow	A K Awasthi	Lucknow	9936400675
83	Ashish	Upmanyu	Antya	03.08.86	5'6"	B.Tech	MNC	Gurugram	R.P. Dwivedi	Jhansi	9452598145
84	Ashish	Bhardwaj	Antya	11.04.88	5'8"	BE, MS(USA)	Working	USA	A.K. Trivedi	Bhopal	9425600600
85	Ashish	Katyan		24.06.88	5'8"	BA. B Ed	Reliance	Kanpur	S K Mishra	Hardoi	9369265810
86	Ashish	Bhardwaj	Madhy	21.11.87	5'7"	B Tech	MNC	Pune	S K Shukla	Kanpur	9450336902
87	Ashish	Katyan	Madhy	27.07.85	5'10"	MBA	IBM	Banglore	A Mishra	Kanpur	9450635424
88	Ashish	Bhardwaj	Antya	25.09.89	5'7"	BE,MTech	Service	Kuwait City	Y.S Shukla	Unnao	8369492792
89	Ashish	Bharadwaj	Aadi	17.11.89	5'9"	B.Tech	Working	Singrauli	U Shukla	Gaya	8544310205
90	Ashish	Bharadwaj	Aadi	06.01.92	5'3"	BE	Service	Vapi	Rajesh Shukla	Mumbai	9265048500
91	Ashok	Upmanyu	Madhya	24.08.78	5'3"	Graduate	LIC	Lucknow	K Awasthi	Lucknow	8318401171
92	Ashu	Sandilya		24.12.88	5'2"	MCA	Working	Patna	S K Dixit	Delhi	9811235591
93	Ashu Pragya	Katyan	Madhy	14.03.87	5'5"	M.Sc	Times of India	Gurgaon	Neeraj Mishra	Kanpur	9628090073
94	Ashutosh	Upmanyu		27.04.86	5'8"	B.Tech.,	MNC	Banglore	R. Awasthi	Jabalpur	9826701133
95	Ashutosh	Upmanyu		14.02.87	5'6"	LLB	Business	Kanpur	R Agnihotri	Kanpur	9307888778

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV□LOCN.	PARENT□NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
96	Ashutosh	Upmanyu	Madhy	01.10.88	5'8"	BSC	Merchant Navy		G N Bajpai	Kanpur	9453815215
97	Ashvinee	Kashyap	Antya	29.08.88	5'11"	MBS	PSU Bank	Kanpur	Mrs R. Tripathi	Kanpur	8574457732
98	Ashwani	Bhardwaj		31.07.83	5'6"	BA	Biz.	Kanpur	S Shukla	Kanpur	9657666327
99	Atman	Katyan		17.12.88	6'3"	B Tech	Biz govt.	Kanpur	R Mishra	Kanpur	9839705003
100	Atul	Shandilya		24.03.82	5'10"	M.Com	Biz.		S.N.Mishra		8960400859
101	ATUL	Katyan	Madhy	11.02.90	5'8"	INTER	Railways	Indore	Mr. Mishra	Indore	9907313168
102	Avinaash	Upmanyu	Aadi	12.08.85	5'7"	MCA	S.W Engg	Malaysiya	Mrs Awasthi	Sitapur	8564872926
103	Bhawtosh	Kashyap	Aadi	20.08.86	5.10'	BCA,	Working	Kanpur	S.K. Tiwari	Kanpur	9839720537
104	Brahmendra	Kashyap	Madhy	19.02.80	5'7"	BCom	Photographer	Jabalpur	B. Tiwari	Jabalpur	9907286364
105	Chandan	Upmanyu		25.12.86	5'9"	B.A	Biz.	Lucknow	J.P.Awasthi	Lucknow	9936530032
106	Chandra Prakash	Kashyap	Antya	31.01.84	5.6'	M.Com	Biz.	Kanpur	B.S. Tripathi	Kanpur	9044512978
107	Chandrak	Upmanyu	Antya	11.04.84	5'8	M Com	PVT JOB	Kanpur	S K Dewedi	Unnao	8880803721
108	Chandrasekhar	Bhardwaj	Madhya	09.01.87	5"6	MAC, BAD	Teacher	Jhabua	Azad Sharma	Jhabua	9714709819
109	Chirag	Gautam	Antya	16.07.79	5'7"	B.com	Working	Mumbai	K.K Trivedi	Kojara	8652898818
110	Deepak	Shandilya		31.10.84	5'7"	Comp Engg	Working	Kanpur	R.N.Tiwari	Kanpur	9651045478
111	Deepak	Bhardwaj		16.09.85	5'11"	IIT M.Tech	Bank Manager	Mumbai	Manju Trivedi	Kanpur	9415727581
112	Deepankar	Upmanyu	Antya	03.06.88	5'8"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	D Dwivedi	Kanpur	9415479269
113	Devesh	Bhardwaj		27.07.81	5'9"	B.Sc, MBA	Officer PSU	Gandhinagar	S.C. Shukla	Gandhinagar	9737877705
114	Divyanshu	Katyan	Madhy	13.12.87	5'9"	MBA	Astt Mngr	Delhi	A.K. Mishra	Lucknow	9838792102
115	Dr Dharmes	Kashyap	Aadi	13.11.83	5'9	B.D.S	Practice	Dubai	Mrs P Tewari	Lucknow	9554477880
116	Dr. Rashi	Bhardwaj	Madhya	09.10.90	5'5"	MBBS			S Pandey	Varanasi	6386088385
117	Durgant	Shandilya	Madhy	12.09.87	5'10"	B.Tech.,MBA	Branch Manager	Lucknow	P.N.Mishra	Lucknow	9532292493
118	Gajendra	Kashyap		31.08.89	5'8"	B.com	Business	Jabalpur	K P Tiwari	Jabalpur	9907286364
119	Ganesh	Upmanyu		33 YRS.	5'8"	IIT,ISB	Service	Gurugram	O.P.Awasthi	Kanpur	9935317848
120	Gaurav	Bhardwaj	Antya	19.12.91	5'8"	BE	Soft.	Banglore	D Shukla	Raipur	9425205383
121	Gaurav	Sankrit		25.11.89	5'6"	B.TECH	TCS	Gurugram	S.K Shukla	Lucknow	7376535369
122	Gaurav	Upmanyu	Madhy	27.04.88	5'10"	B.TECH, MBA	Reg. Mngr.	Lucknow	S.C Bajpai	Lucknow	9452735770
123	Gaurav	Shandilya		24.02.87	5'6"	MA	PNB	Kanpur	R.S Mishra	Kanpur	9918475086
124	Gaurav	Katyan		24.10.90	5'7"	BE	Project Engg	Pune	S.K Mishra	Lucknow	8840284768
125	Gaurav	Bhardwaj	Madhy	23.10.88	6"	B TECH	DELL	Noida	D.K Pandey	Kanpur	7599101722
126	Gaurav	Shandilya	Aadi	02.12.87	5'11"	B Tech(NIT), PGDM	ICICI Bank	NCR	O.S.Mishra	Kanpur	9935616625
127	Gaurav	Shandilya	Aadi	16.01.84	6"	B.Tech	TATA Power	Orissa	S.Mishra	Lucknow	9415794058
128	Gaurav	Kashyap	Antya	12.06.85	5'5"	B.TECH, MBA	Business	Orai	S.R Dwivedi	Jalaun	8382947554
129	Gaurav	Sandilya	Aadi	11.02.91	5'6"	B.Tech	Soft.Engineer	Delhi	S.D Mishra	Hardoi	9811733294
130	Gopal	Bharadwaj	Aadi	04.06.89	5'10"	B.Pharma, MBA	Manager	Hyderabad	S Shukla	Hyderabad	9912820063
131	Gopal	Kashyap	Antya	29.08.93	5'7"	Graduate	Indian Navy	Mumbai	M.N Tripathi	Kanpur	7499687888
132	Hari Mohan	Kashyap	Madhy	12.08.86	5'8"	B.COM, MBA	Service	Hyderabad	P.N Dwivedi	Kanpur	9335432602
133	Hariom	Bhardwaj	Madhya	07.03.88	188cm	B Tech NIT	MNC	Delhi	R Shukla	Bhopal	9849158318
134	Haritabh	Sankrit		30.09.86	5'7"	M B A	Self Employed	Kanpur	Ajay Shukla	Kanpur	9415050280
135	Harsh	Bhardwaj		29.01.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Jayant Shukla	Kanpur	9919333014
136	HarshVardhan	Upmanyu		16.01.88	5'8"	B.Tech.,MS	Working	USA	P.K.Dwivedi	Delhi	9871898222
137	Harshal	Kashyap	Aadi	19.12.88	5'9"	BA MSHW	Biz.	Maharastra	R.S Tiwari	Risod	9921260143
138	Harshit	Bhardwaj	Aadi	10.10.90	5'8"	B Tech	Jindal Power	Nasik	A V Shukla	Kanpur	7376994244
139	Hemant	Bhardwaj	Aadi	30 yrs	5'5"	LLB	Advocate	Lucknow	S N Pandey	Lucknow	9044421708
140	Himanshu	Katyan	Antya	08.11.86	5'8"	B.Tech, MBA	MERCEDEZ	Bengaluru	P.K. Mishra	Varanasi	9451938889
141	Himanshu	Kashyap	Madhy	21.06.88	5'8"	B.Tech	S/W Engg	Noida	S.K. Tripathi	Jhansi	9415266366
142	Himanshu	Shandilya		22.09.88	5'7"	B.Tech	TCS	Pune	A.N. Dixit	Gorakhpur	8588071087
143	Himanshu	Bhardwaj	Aadi	06.02.88	5'5"	BBA,MBA	Axis Bank	Mumbai	S.C.Shukla	Lucknow	9839014905
144	Himanshu	Katyan		05.06.90	5'7"	B.Tech	Civil Engg.	Sultanpur	R.N Mishra	Kanpur	9415727238
145	Ishan	Upmanyu	Antya	16.6.89	5'7"	B.Sc	Army Capt.	J&K	Mahesh Dixit	Bhopal	7587598015

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV□LOCN.	PARENT□NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
146	Jayant	Upmanyu		10.09.87	5'7"	B.Tech.,MBA	MNC	Gurugram	P.K.Agnihotri	Kanpur	9936150917
147	Jayesh	Bhardwaj		01.01.89	6'1"	B.Tech	MNC	Banglore	Rajesh Shukla	Nagpur	9422804272
148	Jaypraksh	shadilya	Madhya	22.08.84	5'7"	com. hard .eng.	Engineer	aurangabad	Vijay Mishra	Aurangabad	8482824522
149	Kanhaiya	Upmanyu	Aadi	19.11.90	5'6"	B. Com,	Working	Andheri	K Dubey	Jhansi	8007256328
150	Kanishk	Upmanyu	Aadi	09.10.82	5'8"	MBA	Business	Pune	Smita Pathak	Pune	9975615610
151	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6"	M Tech	Engineer	Gurgaon	K Awasthi	Gujrat	9824233659
152	Kartikeya	Katyayan	Madhya	25.11.88	6'	B.Com.L.B	Practicing	Noida	Suman Mishra	Delhi	9818678011
153	Krishn Kumaar	Bhardwaj	Aadi	08.05.81	6'	MSc	Bhushan Steels	Orissa	R.Tiwari	Sagar	9993602972
154	Kshitij	Upmanyu	Madhy	05.06.88	5'10"	B.Tech	MNC	Noida	V.K.Agnihotri	Gahziabad	8130743430
155	Kshitij	Kashyap		24.03.91	5'10"	BE (BITS)	Working	Mumbai	P Tripathi	Unnao	9804242502
156	Kunaal	Shandilya	Antya	03.06.85	5'8"	B.Tech.,	S.W Engg	Mumbai	R.K.Mishra	Lucknow	9918383464
157	Kunal	Bhardwaj	Aadi	22.01.84	6'1"	MBA	Working	Lucknow	Kunal Shukla	Lakhimpur	8808089152
158	Kush	Sankrit	Antya	02.09.88	5'9"	B.Tech	Bharti Airtel	Mumbai	S.P. Shukla	Kanpur	9889553612
159	Maanas	Kashyap	Madhy	30.10.84	5'11"	B.Com,MBA	MANAGER	New Delhi	R.N.Trathi	Lucknow	9453437464
160	Mahesh	Sankrit	Antya	14.12.89	5'9"	MBA	Bank	Jagdalpur	R K Pandey	Reewa	9109711683
161	Maj. Ram	Upmanyu		27.03.89	5'8"	B.Tech	Indian Army		R.K. Dubey	Jabalpur	9424357435
162	Malay	Kashyap	Aadi	19.09.90	5'8"	B.TECH	Bajaj	Lakhimpur	P.N Tiwari	Kanpur	9452364432
163	Manish	Kashyap	Madhy	27.09.78	5'6"	M.Com, MBA, LLB	Advocate	Bhopal	G.M.Tripathi	Kanpur	9753416001
164	Manish	Bhardwaj	Aadi	28.09.89	5'6"	BSC- IT,MBA	IBL	Banglore	A.K Pandey	Lucknow	9305338077
165	Manu	Katyan	Aadi	06.07.84	5'8"	MCA MS	Working	Cikago	A.K.Mishra	Bareili	9410431399
166	Manu	Upmanyu	Antya	24.06.87	6'	B.Tech.,	P.O.Bank		R K Awasthi	Lucknow	9936213811
167	Mayank	Bhardwaj	Aadi	22.12.83	5'10"	B.Tech.,	R Jio	Kanpur	P.Shukla	Kanpur	9807147903
168	Mayank	Bhardwaj	Madhy	28.12.88	6"	B.Tech	Working	Bengaluru	P.R. Shukla	Jhansi	7869822090
169	Mayank	Katyan	Aadi	17.10.85	5'8"	B.Des(NIFT)	Lifestyle	Bengaluru	S.K. Mishra	Kanpur	9415438164
170	Mayank	Sankrit		03.09.89	5'8"	MBA	Working	Bhopal	Shashi Shukla	Bhopal	9074573350
171	Mohit	Katyan	Antya	27.08.85	5'9"	M.B.A	MNC	Banglore	K.N.Mishra	Meerut	1212644122
172	Mohit	Bhardwaj		09.10.89	5'6"	B.COM, BED	Business	Kanpur	O.P Shukla	Kanpur	9839104819
173	Mohit	Katyan	Madhya	16.12.86	6'2"	B Tech IT	Enterpreneur	Noida	R Mishra	Noida	9310157413
174	Mohit	Bhardwaj	Aadi	19.08.92	5'9"	B Tech	L & T	Varodra	A Shukla	Agra	9528324823
175	Mridul	Kashyap		15.08.88	5'6"	B.Tech	Ericsson	Delhi	A.K.Tripathi	Jhansi	9453622253
176	Mudit	Kashyap		29.07.83	6"	B.Tech	HCL	Noida	S C Tiwari	Lucknow	9335917368
177	Mukul	Upmanyu	Madhy	08.06.88	5'8"	BSc, MCA	Govt. Job	Lucknow	U.C. Bajpai	Lucknow	9889719019
178	Mukul	Bhardwaj	Antya	02.10.92	5'7"	M.TECH	Asst, professor	Raipur	Ravikant Trivedi	Raipur	9425201545
179	Narendra	Katyan		06.11.78	5'6"	B.A.	OWN Biz.	Kanpur	P.K.Mishra	Kanpur	8896360477
180	Narendra	Shandilya	Madhy	07.12.86	5'11"	B.A., PGDCA	Self Employed	Indore	S.D Dixit	Indore	9424012517
181	Nikhar	Kashyap		22.05.91	5'11"	B SC MBA	Senior Analyst	Gurugram	N Tripathi	Kanpur	8299726705
182	Nikit	Kashyap		10.10.86	5'7"	BDS	Pursuing MDS	Jabalpur	R.K.Dixit	Jabalpur	9424471221
183	Nishit	Katyan	Antya	03.09.88	5'8"	B.Tech.,	TCS	Lucknow	Vinodmishra	Lucknow	9415904841
184	Nitin	Shandilya		23.04.87	5'9"	B.Com, MBA	Service	Amrawati	P Mishra	Amrawati	8600998355
185	Nitin	Shandilya	Madhy	23.01.87	6'2"	MCA	Lecturer	Bhopal	Indresh Dixit	Bhopal	7000201357
186	Nitish	Bhardwaj	Madhya	08.03.90	6'2"	B com MBA	Manager	Pune	VK Shukla	Pune	8806992260
187	Oaj	Upmanyu	Madhy	20.04.90	6'3"	B.Com, MBA	Reliance	Mumbai	Mr Dubey	Indore	9424010082
188	Pavan	Bhardwaj	Aadi	24.07.80	5'6"	MBA	MNC	Haidrabad	A.K.Shukla	Lucknow	9208720671
189	Pawan	Upmanyu		24.04.84	5'7"	B.A.	Service	Jaunpur	O.P. Dewedi	Kannoj	9651587429
190	Pawan	Upmanyu		12.08.86	5'7"	BA LLB	Photographer		R Trivedi	Pune	9825060302
191	Pourush	Upmanyu	Aadi	19.09.88	5'11"	BE, M.Tech	SBI	Durg	Arvind Awasthi	Bhilai	7409175092
192	Prabhaat	Upmanyu		12.08.83	5'8"	M.BA.(ISB)	Working		A.K.Awasthi	Kanpur	9335523168
193	Prakash	Kashyap		30.06.91	5'11"	B.Tech,MS(USA)	Working	USA	R.B.Tiwari	Lucknow	9415753197
194	Prakhar	Bhardwaj	Aadi	14.12.87	5'8"	B.Tech.,	TCS	Banglore	P.K.Pandey	Kanpur	9794556611
195	Prakhar	Shandilya		26.03.91	5'9"	BBA	Self Employed	Kanpur	Meena Dixit	Kanpur	9044098331

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
196	Pranay	Bhardwaj	Madhy	30.11.91	5"10"	Msc	Indian Army		Gita Trivedi	Kanpur	7007452757
197	Pranjal	Kashyap	Antya	25.04.88	5'7"	B.Tech	HP	Bengaluru	Prakash Tiwari	Unnao	9450020858
198	Prareek	Sandilya		03.10.89	5'10"	BBA ITM	Asst. Manager	Gurgaon	P Tiwari	Allahbad	9560018639
199	Prashant	Bhardwaj		27.07.90	5'11"	Graduate		SBI life	Narendra kumar	Kanpur	8450951647
200	Prashant	Kashyap		08.06.89	5'7"	BA	MoD	Kanpur	Rakesh Mishra	Kanpur	9935720457
201	Prashant	Upmanyu	Aadi	11.03.84	5'10"	B.Tech.,MBA	Astt Mngr	Delhi	H.C.Awasthi	Kanpur	9936714491
202	Prashant	Upmanyu	Antya	05.01.88	5'9"	M.Sc.(BITS Pilani	Oracle	Banglore	S.K.Awasthi	Kanpur	8720053266
203	Prashant	Sawarn		22.12.83	5'8"	MCA	IBM	Gurugram	J.N.Tiwari	Kanpur	9415133084
204	Prashant	Upmanyu		27.09.89	5'9"	B Com, MBA	Service	Delhi	A Awasthi	Lucknow	9450652296
205	Prateek	Katyan	Aadi	26.10.89	5'11"	B.TECH, MBA	MNC		Beena Mishra	Kanpur	9347529454
206	Prateek	Upmanyu	Madhy	01.04.87	5'11"	B.COM,MBA(Aus)	Working	Australia	Vishnu Bajpai	Jaipur	7060253719
207	Pratyush	Katyan	Aadi	11.11.86	5'6"	B.Tech.,	Working	Raiberely	L.M.Mishra	Lucknow	9335915813
208	Praveen	Katyan	Madhy	15.01.87	5'4"	B.Tech.,	MNC	Banglore	P.K.Mishra	Kanpur	9415535047
209	Pritesh	Sankrit	Aadi	24.12.90	5'6"	B Tech	Company	Delhi	A Shukla	Kanpur	9454087264
210	Pujari	Sankrit	Madhya	24.09.91	5,4"	MBA	NA	NA	Mamta shukla	Lucknow	9598055128
211	Pushpendr	Shandilya	Antya	13.06.84	5'8"	B.Tech.,(CSE)IT	IT Engg	USA	D.K.Dixit	Kanpur	9569193230
212	Rachit	Bharadwaj	Aadi	08.04.88	5-7”	B Tech, MBA	MNC	Gurgaon	R K Upadhyay	Fatehpur	7982823374
213	Rachit	Bhardwaj	Aadi	04.08.88	5'8"	B.Tech	HCL	Delhi	R K Upadhyaya	Fatehpur U.P	9810607978
214	Raghav	Shandilya	Aadi	08.08.90	5'7"	M Tech	Analytics	Mumbai	S.K.MISHRA	Kanpur	9415590749
215	Rahul	Kashyap	Madhy	16.11.83	5'11"	B. Tech, MBA	E Value Serve	Gurugram	Anand Tripathi	Etawah	9411993442
216	Rahul	Kaushik	Antya	06.01.86	5'11"	B.COM, MBA	Self Employed	Sagar	S.G Dubey	Sagar	8889022999
217	Rahul	katyani	Antya	04.09.89	5"11	MBA	Parvite	Barily	B.K. mishra	bareilly	8126565600
218	Raj Kishore	Katyayan	Aadi	04.05.70	5'9	M,ComL.B	Advocate	Hyderabad	G Mishra	Hyderabad	9848560876
219	Rajan	Bhardwaj	Antya	12.01.90	5'9"	BE	Soft. Engg.	Pune	C Chaturvedi	BHOPAL	9406903868
220	Rajeev	Bhardwaj	Aadi	31.10.89	5'7"	B.Sc	Lab Tech	New Delhi	RAJVEER UPADHAY	Muzaffarpur	7827877512
221	Rajiv	Katyan		19.06.90	5'10"	B Tech	MNC	Gurugram	N K Mishra	Kanpur	9151216132
222	Ram	Sankrit		08.03.77	5'10"	B.Com	INVEST. ADVO.	Kanpur	G.S.Shukla	Kanpur	9889526808
223	RamPrakash	Katyan	Aadi	26.07.88	5'9"	B.Tech, MS(USA)	WOrking	USA	M.P.Mishra	Raibarelly	9793467216
224	Ranaveer	Severn		28.08.85	5'10"	B.Tech.,	Oracle	Banglore	J.N.Tiwari	Kanpur	9415133084
225	Raval Sagar	Bharadwaj	Aadi	10.11.89	5'3"	10th, ITI	Business	Dist. Su.Nagar	Prabhasankar	Gujarat	8200989584
226	Ravi	Bhardwaj		27.11.86	5'6"	B.Tech.,	HCL	Noida	A.K.Pandey	Lucknow	9451002606
227	Ravi	Shandilya	-	13.09.87	6'2"	B.Sc	Manager Bank	Karnal	M.M. Mishra	Kanpur	9695666443
228	Ravi	Kashyap		17.09.91	5'4"	B.Sc	Bank P.O	Raigarh	Santosh Tiwari	Kanpur	9005300831
229	Rishee	Bhardwaj		07.11.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Y.K.Pandey	Jaipur	9929115628
230	Rishi	Kaundanya	Madhy	23.02.88	6'3"	B.E, M.Tech	Govt. Service	Jabalpur	Vinita Bajpai	Jabalpur	9755669043
231	Rishtosh	Katyan		05.12.82	5'7"	M.COM	Fashion Des	Gurugram	R.N Mishra	Kanpur	9415727238
232	Ritam	Bhardwaj	Madhy	07.06.92	5'8"	B Tech	Amazon.com	Seattle	Pranav Shukla	Kanpur	9839212801
233	Robin	Katyan	Madhy	24.08.86	5'9"	B.Tech	Asst. Manager	Mumbai	S.C.Agnihotri	Lucknow	9451063051
234	Rohan			18.04.86	5'10"	LLM MBA	Manager	Mumbai	V Sharma	Amrawati	9370930777
235	Rohit	Shandilya		18.08.88	5'8"	MBA	MNC	Pune	H.K. Mishra	Kanpur	9451522298
236	ROHIT	Upmanyu	Madhy	08.09.86	5'7"	B. Com	Service	Nasik	R.M Bajpai	Nasik	9623962111
237	Rohit	Upmanyu	Antya	01.05.87	5'8"	BE, MS	Working	California	D.M Dubey	Solapur	9370422380
238	Rohit	Upmanyu	Aadi	07.12.86	5'7"	B Com,	PSU Bank	Lucknow	Mrs Dubey	Lucknow	9936573750
239	Rohitash			09.05.85	5'8"	B.Sc,MBA	Working	Ghaziabad	S N Mishra	Barabanki	9451529439
240	Saket	Kashyap		21.03.82	5'6"	BE ,	Govt Service	Maharastra	R K Tiwari	Narsigpur	9522616617
241	Salil	Bhardwaj	Aadi	15.11.88	5'5"	B.TECH	Oracle	Chennai	A.K Dixit	Agra	9758935949
242	Sandeep	Upmanyu	-	26.05.81	5.11'	BA	Own Biz.	Agra	U.C. Agnihotri	Agra	9058273630
243	Sandeep	Bhardwaj	Madhya	26.11.85	5'10"	M.Tech.(IT)	Asst, Professor	Nasik	P.G Shukla	Pansemal	9407492929
244	Sanjay	Kashyap		08.06.71	5'4"	BA	Working	Raiberely	H.S.Tiwari	Raibarelly	5352211555
245	Sapan	Kashyap		23.08.88	5'8"	MBA	MNC		M.K Tiwari	Raipur	8959790805

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV□LOCN.	PARENT□NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
246	Sarvesh	Katyan		24.03.87	5'3"	BSc	Working	Kanpur	J.S. Mishra	Kanpur	9807878501
247	Saurabh	Upmanyu	Aadi	16.09.89	6'	B Sc	Central Govt	New Delhi	A Dwivedi	Jhansi	9236923675
248	Saurabh	Kashyap		20.07.83	5'9"	MA	News paper	Kanpur	P Tiwari	Unnao	9696936547
249	Saurabh	Katyan	Antya	24.04.88	5'6"	MBA	Telenor	Lucknow	Arvind Mishra	Lucknow	9120110396
250	Saurabh	Bhardwaj	Madhy	07.12.82	6'	M.Com .	Govt Service	Kota	R.K.Shukla	Kota	9414938823
251	Saurabh	Bhardwaj	Aadi	01.06.84	5'6"	Diploma	VOLTAS	Kanpur	A.P.Shukla	Kanpur	9335121850
252	Saurabh	Bhardwaj	Antya	19.12.91	5'9"	B com PGDCA	Civil		D Shukla	Raipur	9425205383
253	SAURABH	Gargeya	Antya	16.06.91	5'10"	B.Tech, MBA	Palmolive	Chennai	L.K Pandey	Allahbad	9424120637
254	Saurabh	Upmanyu	Antya	27.08.88	5'7"	B.Tech, MBA	Asst. Manager	Lucknow	T.N Dwivedi	Lucknow	9936101701
255	Saurabh	Bharadwaj	Aadi	03.03.87	5'8"	Mass Com	Media	Pilibhit	G Pandey	Pilibhit	9411283905
256	Shailendra	Shandilya	Madhy	23.07.83	6'	MBBS	Pursuing MD		R.C.Dixit	Unnao	9793261855
257	Sharad	Upmanyu	Manglik	19.08.86	5'3"	MBA	MNC	Lucknow	S.K Awasthi	Lucknow	9696944128
258	Shashank	Bhardwaj		08.09.86	5'9"	B Tech	MNC	Noida	Smt Dubey	M P	9827861767
259	Shashank	Kashyap		28.12.86	5'6"	B.Sc ,MBA	Working	USA	Umesh Tiwary	Delhi	9818707398
260	Shashank	Bhardwaj		12.06.89	5'7"	B.Tech, BTC	Business	Kanpur	S.K Shukla	Kanpur	8793089751
261	Sheel	Kashyap	Antya	28.12.78	5'8"	M.Sc, MBA	Lecturer	Lucknow	G.H.Awasthi	Lucknow	9415794589
262	Shilpesh	Katyan		19.05.90	6'2"	B.Tech,IIM	MNC	Pune	Mr.Mishra	Indore	8319627534
263	Shishir	Bhardwaj	Antya	28 YRS.	5'8"	B Tech	MNC	Bengaluru	A K Trivedi	Shuklaganj	9451548120
264	Shivam	Kashyap		01.02.88	5'9"	MCA	Working	Kanpur	R.K Tripathi	Kanpur	8381824446
265	Shivam	Kashyap		24.12.90	5'8"	M Com,MBA	Head Cashier	Indore	Gaurav Tiwari	Indore	9827088489
266	Shivam	Kashyap	Aadi	10.01.90	5'6"	MCA	Analyst	Mumbai	VK Tripathi	Lucknow	9260969436
267	Shivam	Bharadwaj	Madhya	23.08.92	5'11"	MBA (IIM)	Manufacturing	Business	H Shukla	Gujrat	9824155611
268	Shobhit	Sankrit		04.03.93	5'8"	B.TECH	Auto Engg	Banglore	V.P Mishra	Lucknow	9454835232
269	Shounak	Bharadwaj	Aadi	07.10.89	5'11"	MBA	ICICI Pru	Lko	R N Pandey	Kanpur	9935430724
270	Shreesh	Bhardwaj	Aadi	20.05.86	5'8"	B.Tech	Service	Jaipur	D.C.Pandey	Lucknow	9454455723
271	Shrey	Sankrit	Madhy	23.12.82	5'9"	B Tech	TCS	Lucknow	S N Shukla	Lucknow	7846786559
272	Shreyas	Kasyap	Aadi	31.10.88	5'7"	B Tech NIT	Business		A Trivedi	Maharastra	9820211630
273	Shubham	Vats	Madhy	13.02.88	5'10"	B.Tech	Feam Ind,	Ahmedabad	Anil Tiwari	Etawah	9415409967
274	Shubhendru	Upmanyu		09.11.86	6'	MS, PHD(USA)	Research Astt	Chicago	M.L.Trivedi	Pune	9096257755
275	Shubrat	Kashyap	Aadi	17.06.83	5'8"	M.Com,MBA	Genpact	Gurugram	Ravi Tripathi	Kanpur	7275508227
276	Siddhaarth	Kashyap		01.05.86	5'8"	M.Tech USA	Delloite	USA	Ashok Tripathi	Mumbai	9029020548
277	Siddhaarth	Upmanyu		31.08.90	5'11"	B.Tech	Microsoft	Bengaluru	S.K.Awasthi	Kanpur	8423080830
278	Sidharth	Bhardwaj	Madhy	17.07.88	5'7"	B Tech	Working	Pune	R K Pandey	Kanpur	9415210728
279	Sonu	Bhardwaj	Aditya	11.11.85	5'7"	M Tech	Working	Noida	S K Pandey	Gwalior	9407015945
280	Suchitan	Upmanyu	Madhy	29.11.86	5'11"	MBA	Lecturer	Kanpur	S.N.Trivedi	Kanpur	9839300303
281	Sudip	Katyan	Antya	09.11.88	5'6"	B.Com	SBI	Allahabad	S.K.Mishra	Kanpur	7897335499
282	Sulabh	Sankrit	Antya	28.01.88	5'8"	MA, MBA	Share Broker	Kanpur	Sushil Mishra	Kanpur	9305488849
283	Sunny	Shandilya	Antya	19.09.87	5'11"	B Tech NIT	Tata Motors	Mumbai	G Dixit	Gwalior	9425338155
284	Suraj	Kasyap	Antya	06.03.89	5,7	MBA	Service	Durg	B Tiwari	Durg {C.G.}	9827190303
285	Sushant			26.11.85	6'1"	B.Sc.MBA	Working	Delhi	H.D.Chaubey	Rajgarh	9939484830
286	Suyash	Upmanyu	Antya	20.01.88	5'11"	B.Com.	Marketing Exec.	Rajnandgaon	Sunil Bajpai	Kanpur	9301737555
287	Udayan	Shandilya		22.11.86	5'5"	M.sc MBA	Govt. Ltd	Gwalior	Y D Mishra	Gwalior	9826297917
288	Uma Kant	Upmanyu	Madhy	07.08.93	5'7"	B.Tech.,			B.P.Awasthi	Lakhimpur	9871706111
289	Utkarsh	Shandilya		22.02.88	5'11"	M.Tech.(BITS)	MNC	Banglore	P.K.Mishra	Kanpur	7275743955
290	Utkarsh	Katyan	Antya	05.06.86	5'9"	MBA	Medical Biz	Lakhimpur	D.C.Misra	Lakhimpur	9451687980
291	Vaibhav	Garg	Madhy	16.06.91	6'1"	B.TECH	Bank(PO)	Merath	H.K Chaturvedi	Kanpur	9792877087
292	Vaibhav	Bhardwaj		22.08.87	5'6"	B.Tech.,	Ericsson	Gurugram	K.K.Shukla	Kanpur	9958281964
293	Vaibhav	Shandilya	Antya	04.06.90	5'6"	B.Com, MBA	AXIS Bank	New Delhi	V K Mishra	Pilibhit	9410626492
294	Vaibhav	Upmanyu	Antya	30.07.90	5'9"	B.Tech	Power Plant	M.P	S.K. Bajpai	Merath	9358350093
295	Varun	Katyayan	Madhya	26.08.92	5'11	M.tech	Prism Cement	Noida	Nikita Chaturvedi	Gwalior	9975951479

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
296	Ved Vikas	Shandilya	Antya	05.03.91	5'8"	M.SC. B.ED	Teacher	Ahmedabad	A.K Dixit	Unnao	9913200388
297	Vijay	Kashyap	Madhya	01.01.91	5'4"	BSc (math), ITI	Self Employed	Bhopal	Ajju Tiwari		7000069991
298	Vikaas	Bhardwaj	Antya	26.10.82	5'4"	MCA	S.W Engg	Noida	K.K.Bhardwaj	Kanpur	9793821021
299	Vikash	Kashyap	Antya	11.08.80	5'8"	MBA	Working	Ahmedabad	ROHINI	BHOPAL	9911005470
300	Vimal	Kashyap	Aadi	10.01.88	5'7"	B.Tech.	Service	Pune	K Tiwari	Kanpur	9561478019
301	Vinay	Upmanyu		02.12.76	5'8"	MA. LLB	Govt Service	Burhanpur	Mrs Awasthi	Burhanpur	9165311846
302	Vinay	Upmanyu		08.11.89	5'8"	B Tech	Infosys	Hyderabad	K L Awasthi	Lucknow	9450458064
303	Vinod	-	-	15.02.82	5'9"	-	Biz.	Kanpur	S N Diwedi	Kanpur	7398163285
304	Vipresh	Upmanyu	Madhy	13.12.85	5'10"	B Tech. MBA	Working	Lucknow	Rajesh Dewedi	Kanpur	9450936845
305	Vishaal	Garg		27.12.87	5'10"	BCA MBA	MNC	Delhi	R.K.Shukla	Lucknow	9936977763
306	Vishal	Upmanyu		29.02.92	5'11'	B.SC	Airforce	Hyderabad	G Bajpai	Kanpur	9889315397
307	Vishal	Sandley	Antya	10.11.92	5,9"	M A	R Jio	Lucknow	S Mishra	Lucknow	9935832287
308	Vishesh	Kaushik		30.04.92	6'2"	M.Com	Sr. Consultant	Melbourne	Vipin Dubey	Bhopal	8109838010
309	Vishesh	Upmanyu	Madhy	15.01.90	5'7"	B. E	Hallmark aqua	Raipur	D Dwivedi	Durg	9893462414
310	Vivek	Upmanyu	Aadi	06.02.88	5'8"	B.TECH	Barclays	Pune	J.K Awasthi	Lucknow	9415547363
311	Vivek	Bhardwaj	Aadi	07.11.84	5'10"	B.Tech.,	S.W Engg	Delhi	R.C.Pandey	Kanpur	9450327506
312	Vivek	Kashyap		22.03.76	5'8"	B.Com	Service	Lucknow	S.K.Sharma	Lucknow	9450112576
313	Vivek	Bhardwaj		18.04.83	5'8"	MBBS	Doctor	Lucknow	G.P. Shukla	Lucknow	9422642122
314	Vivek	Kashyap		10.07.73	5'6"	Double MA	Service	Kanpur	H.S.Tiwari	Kanpur	9455753557
315	Vivek	Upmanyu		04.12.90	5'11"	MCA	Sofft. Engg.	Gurgaon	R S Tiwari	Kanpur	9839475032
316	Yash	Bhardwaj		23.03.85	5'8"	B.Tech	Working	Delhi	P.Trivedi	Delhi	9868941052
317	Yash	Shandilya	Madhya	12.01.89	5'8	Graduate	Sales	Delhi	A Mishra	Delhi	9718166678
318	Yogendra	Bhardwaj	Antya	31.10.78	5'4"	B.A, L.L.B.	Lecturer	Kanpur	Y.K.Pandey	Kanpur	9455373843
319	Yogesh	Bhardwaj		30.03.91	5'7"	B.Tech.,	Astt Mngr	Chennai	S.C.Pandey	Kolkata	9903633761
320	Yogesh	Kashyap	Aadi	26.12.89	5'3"	M.com, MA, LLB	Advocate	Philibhit	Mrs Pathak	Bithra	9759718916

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें।

प्रबन्ध संपादक - 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

Mob. : 9911690006 (Vikas)
: 9968662818 (Office)
9911690008 (Vishal)

R.K. & Sons

Suman Textiles

Rakesh Mishra
9810262818

1010, Prem Gali, Subhash Road, Gandhi Nagar, Delhi-31
Phone: 011-22078603

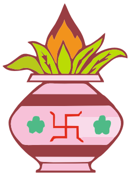

वैवाहिक विवरण

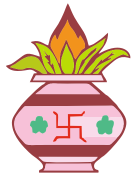

युवती वर्ग

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
1	Aanchal	Upmanyu	Antya	05.07.97	5'4"	B.Arch	Student	Prayag	Alka Bajpai	Prayagraj	9451740652
2	Aanima	Katyan	Aadi	21.07.84	5'5"	B.Com	Analyst	Lucknow	A Mishra	Unnao	9453830651
3	Aarchi	Kashyap		16.03.94	5"	M.COM	PSU Bank	Lucknow	V.S Tiwari	Lucknow	9415471458
4	Aarti	Katyan	Antya	22.10.86	5'2"	B.A	Working	New Delhi	S Mishra	New Delhi	9891444569
5	Aditi	Katyan		10.07.90	5'6"	B E	MNC	Kolkata	Mr. Mishra	Gurugram	9425808631
6	Aditi	Bharadwaj	Antya	17.06.92	5'4"	B.Tech	MNC	Pune	S Pandey	Chandrapur	9822701972
7	Aditi	Shaushravas		19.02.91	5'5"	B Tech IT	Working		T P Chaturvedi	Mandi	9602914290
8	Agrani	Bharadwaj	Antya	05.05.91	5'5"	B.tech MBA	MNC	Benglore	A Mishra	Bihar	9824119055
9	Aishvarya	Shandilya	Aadi	06.10.89	5'6"	BE, MBA	Working	Indore	K C Mishra	M P	9826399568
10	Aishvarya	Kashyap	Manglik	20.01.93	5'1"	B.Tech(CS)	Infosys	Pune	M Tripathi	Kanpur	9839803340
11	Aishwarya	Shandilya	Aadi	10.06.89	5'6"	B E , MBA	MNC	Gurugram	C P Mishra	Indore	9926358889
12	Akanksha	Kashyap	Madhya	29.10.83	5'4"	M. A	Service	Near Delhi	A Tripathi	Sitapur	9919114107
13	Akanksha	Bharadwaj	Antya	09.04.87	5'4"	MBA	Working	New Delhi	R.B Pandey	Dehradun	9412047931
14	Akanksha	Bhardwaj	Antya	06.09.89	5'	M.COM ,B Ed			Rajesh Shukla	Yamuna N.	9729537603
15	Akanksha	Upmanyu		02.11.93	5'4"	Designing	Pursuing	Mumbai	A.P.Agnihotri	Jaipur	9829068476
16	Akanksha	Bhardwaj		12.04.89	5'3"	B.SC.,MBA	Working	Kanpur	R.N.Pandey	Kanpur	9956787066
17	Akanksha	Katyan	Antya	05.08.90	5'4"	MSC	Working	Lucknow	A.K Mishra	Lucknow	9450644434
18	Akanksha	Bhargava	Antya	26.10.92	5'5"	B.E.(IT),	IBM	Pune	Manish Vyas	Nrsinhgarh	9039387942
19	Akanksha	Upmanu	Aadi	08.08.92	5'4"	M Pharma	Manager,	Jaipur	S Agnihotri	Rajasthan	8239811234
20	Akankshi	Bharadwaj	Aadi	09.11.88	5'1"	MA, B.ED			S.C Shukla	Unnao	9415919896
21	Alka	Kashyapa	Aadi	28.04.84	5'3"	Double M A	Not working	N.A	R Tiwari	Madhoganj	8896078157
22	Alpana	Kashyap		15.07.94	5'4"	B.Tech			R.C Tripathi	Kanpur	9450125156
23	Alpika	Bhardwaj	Antya	03.11.82	5'3"	M SC, B Ed			P S Shukla	Lucknow	9451247895
24	Amrita	Upmanyu	Aadi	15.06.86	5'3"	M.SC.B.ED.	Teacher	Hardoi	S.D.Awasthi	Hardoi	9415175655
25	Amrita	Kashyap	Aadi	26.06.86	5'4"	MBA	INT. Designer	Delhi	H.K.Tripathi	Kanpur	9415740855
26	Anamika	Bhardwaj		16.01.89	5'2"	BCA	Pursuing LLB		H.N. Pandey	Delhi	9312000133
27	Anamika	Upmanyu	Madhy	12.09.90	5'4"	MBA	ICICI Bank		V N Bajpai		8931029856
28	Anima	Shandilya	Aadi	01.12.89	5'5"	MCA			Rohit Mishra	Noida	9650060422
29	Anjali	Upmanyu		20.08.89	5'5"	BE, M.Tech	MNC	Indore	Y Dubey	Indore	9926019465
30	Anjali	Upmanyu	Aadi	01.02.78	5'3"	MA, B ED	Teacher	Kanpur	Geeta Bajpai	Kanpur	9450337411
31	Anjusha	Kashyap		26.11.76	5'6"	MA , B Ed	Teacher	Lucknow	G N Awasthi	Lucknow	9415794589
32	Ankita	Katyan	Madhy	18.08.88	5'4"	B.A.(GOLD)	Army Captain	Rajori	K.K.Mishra	Lucknow	9454523684
33	Ankita	Bhardwaj	Madhy	17.05.85	5'2"	M A , NTT			P S Shukla	Lucknow	9451247895
34	Ankita	Upmanyu	Madhy	28.05.90	5'2"	B.Tech	Working	Lucknow	Rakesh Bajpai	Lucknow	9451533833
35	Ankita	Gautam	Antya	20.04.88	5'&8.5"	B.te[illegible] .tec	G I S developer	Hydrabad	S Mishra	Allahabad	9335932948
36	Ankita	Sandilya	Antya	25.03.87	5'4"	M.sc.	Instructor	Korba	A.K Mishra	Banda	9907905612
37	Anshika	Bharadwaj	Madhy	12.07.86	5'4"	M.COM, MBA	Govt. Job		M.K Shukla	Ujjain	9424876330
38	Anshita	Kashyap		23.05.93	5'2"	BE	Teacher		P Joshi		9893570774
39	Anshul	Bharadwaj	Antya	18.07.89	5'7"	B.Com, MBA		Bhopal	Ashish Shukla	Unnao	9713426365
40	Anubhuti	Upmanyu		28.03.90	5'6"	B.TECH, LLB			Mr Agnihotri	Lucknow	9454382089
41	Anupama	Kashyap		26.09.87	5'3"	B.D.S	Working	Faridabad	K.K.Tiwari	Faridabad	9811554485
42	Aparajita	Bhardwaj	Aadi	24.12.88	5'2"	B Tech	S/w Engg	Pune	R K Pandey	Bhopal	9691999321
43	Apoorva	Upmanyu		05.04.92	5'3"	B.TECH	PURSUING MS	USA	S Dwivedi	Lucknow	8879600650
44	Apoorva	Bharadwaj	Aadi	13.12.91	5'5"	B.Tech	No	No	C.K.Shukla	DURG	9827113544
45	Aradhika	Shandilya		05.01.85	5'3"	BA	SBI(P.O)	Shahjahanpur	P.D Dixit	Lucknow	9807477078

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV□LOCN.	PARENT□NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
46	Arpita	Bharadwaj	Aadi	23.09.91	5'4"	BCA,M Tech	Wipro	Banglore	R K Shukla	Kanpur	9450455278
47	Arti	Sabaran	Madhya	11.12.87	5'5"	M Ed PhD	Proff.	Indore	J Pandey	Indore	9303536152
48	Asha	Katyayan	Aadi	26.12.89	5'4"	Msc B.ed	Lecturer		R Mishra	Nanded	8237448841
49	Ashima			04.12.93	5'4"	NEET PG			Mr Trivedi	M P	7415012305
50	Ashmita	Katyan	Manglik	07.03.91	5'5"	B.COM(DU)	Doordharshan	Delhi	Prabha Mishra	Bariely	7417041930
51	Astha	Shandilya	-	13.11.89	5.1'	B.Tech	PSU Bank	-	B.R. Mishra	Lakhimpur	8090688028
52	Avantika	Bharadwaj		26.08.92	5'	PG Nutrition	VLCC	Delhi	S.M Pandey	Lucknow	9711602217
53	Barkha	Kashyap	Antya	17.09.84	5'5"	BA	Working	Delhi	Mohit Tiwari	Delhi	9211232373
54	Bhaavya	Katyan		19.08.91	5'1"	MBA	Working	Bengaluru	B.N.Mishra	Barelly	9837777758
55	Bhavana	Katyayan	Aadi	13.04.88	5'4"	MBA	Service	Pune	P Mishra	Pune	9765602161
56	Bhavna	Katyan		13.04.88	5'4"	BBA,MBA	Working	Pune	P Mishra	Pune	9823281661
57	Chaaru	Upmanyu	Antya	14.11.89	5'5"	BTECH	Working	Noida	A.N.Dixit	Ghaziabad	9968941554
58	Charitra	Katyayan	Aadi	02.08.89	5'2"	MA B.Ed.	Teaching	Hardoi	S Mishra	Hardoi	8896361961
59	Charu	Bhardwaj	Aadya	12.08.86	5'4"	MCA MSC			U Sharma		9837031965
60	Chitra	Katyan		01.02.89	5'1"	LLM, MBA	Ph D		B Mishra	Udaipur	9772966695
61	Deepamala	Upmanyu		16.02.88	5'2"	M.A.BTC TET	Teacher	Lucknow	J.P.Awasthi	Lucknow	9936530032
62	Deepika	Upmanyu		24.10.86	5'3"	M.SC.PHD	Post Doctorate	USA	S.C.Awasthi	Kanpur	9451425376
63	Devahuti	Shandilya		09.05.82	5'3"	B.A.,Journalism			D.D.Mishra	Kanpur	9621488942
64	Dhaarana	Upmanyu	Madhy	20.12.87	5'4"	M.A.BSC.	POST OFFICE	Kanpur	R.K.Vajipai	Kanpur	9889058375
65	Disha	Bharadwaj	Madhy	07.11.91	5'3"	B.COM, Inter CA	Tax Exc	Lucknow	R Shukla	Lucknow	8174097778
66	Divya	Bharadwaj	Aadi	24.02.87	5'3"	B.TECH, MBA	WNS	Gurugram	K.K. Pandey	Kanpur	9453851560
67	Divya	Kashyap	Antya	23.02.86	5'2"	B.TECH.	Working	Canada	R.P.Tiwari	Kanpur	9451287700
68	Divya	Bharadwaj	Aadi	12.02.95	5'2"	B.Sc, ITI	LMRC	Lucknow	Rajesh Tiwari	Jhansi	9451131195
69	Divya	Bharadwaj	Aadi	02.05.95	5"2	B.Sc	Metro	Lucknow	R Tiwari	Jhansi	9451131195
70	Divya	Sandilya		12.01.94	5'3"	BTC , B Ed		Etawah	G Dixit	Etawah	9627549800
71	Dr Jyoti	Bhardwaj	Aadi	21.11.85	5'1"	MScPhD	Research Officer	Patna	P Mishra	Patna	9934296441
72	Garima	Shandilya		10.09.89	5'3"	M.COM, MBA			R.S Mishra	Kanpur	9918475086
73	Garima	Bhardwaj		01.10.83	5'4"	MBA	Working	Lucknow	K.K.Pandey	Kanpur	9336998383
74	Garima	Katyan		15.01.85	5'2"	B E	SAP	Pune	C S Mishra	Khandwa	9425928788
75	Garima	Kashyap		08.11.79	5'3"	MA, Bed			S.K. Tripathi	Bareilly	9897049336
76	Garima	Upmanyu	Mady	30.10.84	5'5"		Service	Kolkata	B.K Dwivedi	Fatehpur	9903463584
77	Garima	Upmanyu	Antya	12.12.88	5'5"	MBA	MNC	Gurugram	A.K Dixit	Lucknow	9451975400
78	Geetanjali	Katyan		15.07.75	5'2"	MA			S.K Mishra	Lucknow	9415003476
79	Hemalata	Katayan	Aadi	23.07.79	5"	M.sc Mba.	Working	Banglore	R Mishra	Unnav	9848759749
80	Hemapriya	Shandilya	Madhy	05.05.87	5'2"	BA,LLM	Central govt.	Mumbai	G.K.Mishra	Lucknow	9412554697
81	Hitakshi	Katyayan		21.11.88	5"	Graduate			N Trivedi	Kanpur	9839550809
82	Indu	Katyan	Madhy	20.04.88	5'3"	PG	ASSTT.MGR.	Lucknow	L.M.Mishra	Lucknow	9335915813
83	Ira	Kashyap	Madhy	25.09.89	5'5"	BTECH, MS	Engineer	USA	Dr. M Tiwari	Kanpur	8130144400
84	Ishita	Vats		23.11.88	5'2"	B Tech HBTI	Govt. job	Delhi	P Dubey	Kanpur	9450939433
85	Itisha	Kashyap	Antya	17.01.83	5'2"	Diploma	Jwel Design		R.N.Tripathi	Lucknow	9453437464
86	Jaahnavee	Katyan		18.03.93	5'	B.SC.			Ai Mishra	Kanpur	9451013644
87	Jaya	Upmanyu	Manglik	17.07.92	5'4"	BBA, CS			Umesh Bajpai	Kolkata	9433387217
88	Jaya	Katyan	Antya	24.07.89	5'3"	M Tech	MNC	Bangalore	A Mishra	Kanpur	9450635424
89	Jhanvi	Bhardwaj	Aadi	15.08.88	5'3"	M.SC, M.PHIL	Pursuing PHD		R.B. Pandey	Sitapur	7376103009
90	Jyotsana	Upmanyu	Aadi	05.05.90	5'3"	B A M S			U Awasthi	Kanpur	9616985194
91	Kanak	Upmanyu	Divorcee	08.06.87		MA	Teaching	Bahraich	A Awasthi	Bahraich	9140487985
92	Kanchan	Bharadwaj		31..06.89	5"	B.COM(DU)	Teacher	Hardoi	R.K Pandey	Hardoi	9717991676
93	Kanchan	Bharadwaj	Antya	29.07.82	5'5"	BA			C.P Shukla	Lucknow	9793027166
94	Kanchan	Upmanyu		28.05.92	5'1"	MA	Teacher	Bahraich	A Awasthi	Bahraich	9140487985
95	Kanchan	Kilawat		14.11.92	5'2"	BCA			V Vaishnav	Bhopal	9425091637

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
96	Kavita	Upmanyu		24.06.87	5'6"	M.C.A			R.K.Awashti	Kanpur	9936213811
97	Keerti	Bhardwaj		18.11.89	5'6"	M.SC.PHD.	FELLOWSHIP	Australia	K.N.Pandey	New Delhi	9971530438
98	Khushbu	Bharadwaj	Antya	22.05.88	5'1"	MA, B.Ed	Working	Lucknow	M.K Shukla	Lucknow	7071329112
99	Kriti	ghalaria	Aadi	15.11.92	5"	MCA	IT MNC	Noida	V Sharma	Mathura	9709550141
100	Kritika	Kashyap		27.07.92	5'6"	M.Tech			Arun Tiwari	Banda	9453283648
101	Krtika	Bhardwaj		28.01.88	5'4"	MA(ENGLISH)	Journalist	New Delhi	K.N.Pandey	New Delhi	9971530438
102	Krtika	Shandilya	Aadi	09.09.87	5'5"	B.SC.MBA	SBI	Kanpur	M Mishra	Kanpur	9695666443
103	Laxmi	Kashyap	Aadi	06.08.83	5'2	B SC, MBA			S K Tripathi	Lucknow	9415584168
104	Madhu	Upmanyu	Madhya	02.09.89	5'2"	BE	Software engineer	Bangalore	R B Pathak	Ballia	9774009524
105	Madhulika	Kashyap		03.08.80	5'1"	MA, B Ed , TET			Mrs Dixit	Lucknow	9455508981
106	Madhuri	Bharadwaj	Madhya	06.12.93	5'3"	MBA	Bajaj Auto Finance	Bhopal	Mohan Shukla	Bhopal	9893362555
107	Mahima	Shandilya	Antya	10.12.84	5'1"	BE	Soft. EngG.	Bangalore	R Mishra	GWALIOR	9425609290
108	Malini	Upmanyu		01.04.77	5'2"	M.SC.,MED,PHD.	Teacher		C.P.Awasthi	Lucknow	9452133470
109	Mamata	Upmanyu		06.08.84	5'4"	MA .BED.	Teacher	Sitapur	G.K.Vajpai	Sitapur	9838303442
110	Mandvi	Katyayan		13.12.95	5'1"	B Com, MBA	Pursuing	Kanpur	G S Mishra	Kanpur	9839206130
111	Mani	Bharadwaj		14.09.89	5'3"	MA, B.ED			R.K Pandey	Allahabad	9415612663
112	Manishee	Kashyap		10.06.80	5'4"	M.B.B.S,M.D.	Practice	Mumbai	R Tiwari	Lucknow	9984459915
113	Manjaree	Upmanyu		30.06.83	5'6"	B.SC.,MBA	Working	Delhi	A.P.Bajpai	Kanpur	9415735367
114	Manshi	Shandilya		27.11.93	5'4"	Graduate	Associate		A Dixit	Ghaziabad	9868469116
115	Mansi	Shandilya	Madhy	30.12.87	4'11"	MBA	HR Manager	Delhi	A.K. Dixit	Lucknow	9451712383
116	Meenoo	Katyan	Antya	14.08.82	5'3"	M.SC.B.ED.			A.K.Mishra	Jhansi	9452919509
117	Megha	Upmanyu		01.07.94	5'3"	MA	Teaching	Kanpur	R Awasthi	Kanpur	9311718232
118	Monika	Shandilya	Madhy	16.12.89	5'6"	B.Com,MBA			B.N.Mishra	Amirpur	9450834983
119	Monika	Bharadwaj	Antya	05.07.87	5"	Ph.D	Scientist	King George	Anita Pandey	Lucknow	8004747360
120	Monika	Kashyap	Madhya	15.08.85	5'3"	B. Tech	Fash. Design	Delhi	G Tiwari	Udaipur	9414238854
121	Naina	Bharadwaj		29.04.90	5'3"	B.TECH, MBA	Yes Bank	Mumbai	R.S Pandey	Lucknow	9044326357
122	Namita	Bhardwaj		16.06.80	5'3"	M.A.(ENGLISH)	INT. Designer		S.P.Shukla	Lucknow	9415424508
123	Namrta	Upmanyu	Aadi	11.01.81	5'6"	M.A.,Music			P Dubey	Kanpur	9839443316
124	Neelam	Bhardwaj	Aadi	09.09.91	5'2"	M.SC.			R.P.Shukla	Kanpur	8954084510
125	Neha	Upmanyu		04.04.88	5'1"	B.Sc	Job Officer	Pilibhit	Anand Bajpai	Sitapur	9927102331
125	Neha	Sankrit	Aadi	06.10.91	5'7"	B.Tech.	TCS	Pune	Rajender Shukla	Ghaziabad	9810219410
126	Nidhi	Upmanyu		15.11.83	5'4"	M.A.(MUSIC)	Teacher		V.D.Awasthi	Lucknow	9415172212
127	Nidhi	Upmanyu	Madhya	09.01.89	5'1"	M.sc.,B.Ed.	Working	Seoni	Mrs. Dubey	Seoni	9425843155
128	Nidhi	Shandilya	Antya	19.02.79	5'2"	MA NIT			A Mishra	Allahabad	8318600210
129	Nidhi	Kashyap	Madhya	21.03.89	5.3	M C A.	H D F C bank	Seoni. M.P.	K Dixit	Nainpur m.p.	9174681688
130	Niharika	Kashyap		06.10.90	5'8"	B.TECH	Govt. Job		Rakesh Tiwari	Bhopal	9424115717
131	Niharika	Upmanyu	Aadi	26.07.95	5'4"	Bcom, MA		Harda	Meena Dubey		9893228150
132	Nikita	Kashyap		21.10.90	5'3"	BBE,MBA	IBM	Gurugram	S.S. Tiwari	Delhi	9899723609
133	Nikita	Shandilya	Aadi	24.04.94	5'5"	B.tech	Saft.Eng.	Bangalore	P Mishra	Lucknow	6394743035
134	Nilakshi	Upmanyu	Aadi	03.03.84	5'5"	BSC.PGDCAB	PROFESSIONAL		H.N.Vajpai	Kanpur	8953864026
135	Nilakshi	Katyan	Antya	16.05.90	5'1"	B.COM,	CS(Pursuing)		N.C.Mishra	Lucknow	9415543919
136	Nimisha	Shandilya		12.03.86	5'2"	Mass Com	Business	GOA	A.K. Mishra	Sitapur	9823173266
137	Nupur	Bhardwaj	Madhy	28.05.91	5'7"	BE,MBA	Biz Analyst	Bangalore	S K Shukla	Orissa	9861145533
138	Palak	Kashyap	Madhya	01.06.82	5"	MBA		Nairobi	Mrs Tiwari	Ahmedabad	7733803200
139	Pallav	Sankrit	Aadi	21.01.87	5"	M tech. PhD	Service	New Delhi	S Shukla	Delhi	9811484078
140	Pallavee	Kashyap		08.03.85	5'3"	BSC, B.ED	Govt. Teacher	Lucknow	Prashant Mishra	Lucknow	9415466226
141	Pallavee	Sankrit		21.01.87	5'	M.TECH.(IIT)PHD.			S Shukla	Delhi	9811483078
142	Pallavi	Shandilya	Antya	29.09.91	5'4"	Post graduate	Design & Tech.	Banglore	H Mishra		
143	Pooja	Bhardwaj	Aadi	28.08.89	5'5"	M.B.A.			P N Trivedi	Unnao	9415987702
144	Poornima	Upmanyu	Antya	12.08.80	5'5"	B.SC.MCA	S.F ENGG.	Bengaluru	S Awashti	Kanpur	9450125877
145	Poorva	Kashyap		22.05.90	5'5"	B Tech MBA	Business		A Dubey	Raipur	9300201654

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
146	Prachi	Bhardwaj	Aadi	17.02.87	5'5"	PGDMC MPA			R.K.Shukla	Lucknow	8081782725
147	Prachi	Shandilya	Aadi	20.05.88	5'3"	MCA			A Mishra	Delhi	9311601401
148	Prachi	Kashyap		01.06.85	5'5"	B.TECH.(IIT)	SBI(P.O)	Lucknow	Deepti Dixit	Lucknow	9838610666
149	Pragati	Upmanyu		07.01.87	5'4"	MBA	MNC	Noida	D.S.Bajpai	Lucknow	9454644228
150	Pragati	Katyan	Aadi	23.05.91	5' 6"	MSc Bed.	Professor	Jaipur	U Mishra	Jaipur	9460152180
151	Pragati	Shandilya	-	24.06.92	5.3'	B-Tech	-	-	Dr. V.P. Dixit	Allahabad	9415283021
152	Pragya	Kashyap		30.07.90	5'6"	BSc, MA, Bed	Teacher	Urai	R.K. Dixit	Urai	9453554259
153	Pragya	Bhardwaj	Aadi	06.04.87	5.2'	B-Tech	MNC	Bengaluru	B.K. Shukla	Kanpur	9450130799
154	Pramita	Katyan		29.06.81	5'1"	M.A,PHD,MPHIL	Working	Delhi	P.N.Mishra	Delhi	9013201099
155	Pratiksha	Katyan	Madhy	17.08.88	5'11	B SC, M C A	Working	Pune	Ashok Mishra	Kanpur	9839248275
156	Pratiti	Upmanyu	Antya	12.10.91	5'4"	B tech	Accenture	Noida	Sunit trivedi	Lucknow	9415546277
157	Preeti	Kashyap	Aadi	22.12.90	5'5"	MBA	Working	Mumbai	Avinash Tripathi	Mumbai	9320981363
158	Prekshee	Bhardwaj	Aadi	26.11.88	5'6"	M.A.B.ED.(DU)	Teacher	Noida	A.R.Shukla	Noida	9818648629
159	Priya	Bhardwaj	Aadi	26.08.91	5'5"	B.Com, S.W			P N Trivedi	Unnao	9415987702
160	Priya	Bharadwaj	Madhya	02.02.89	5' 7"		Assistant veterinar	Gwalior	Rajeev Shukla	Gwalior	9926292469
161	Priyam	Upmanyu		20.07.88	5'3"	MBA	MNC	Pune	A.K.Awasthi	Kanpur	8604956305
162	Priyanka	Bharadwaj	Madhy	17.11.94	5'5"	B.COM,BTC			D.D Shukla	Unnao	9451149985
163	Priyanka	Bhardwaj		16.08.88	5'2"	BDS	Pursuing MBS		A.K.Pandey	Jaipur	9829094797
164	Priyanka	Bhardwaj		27.09.87	5'4"	B.TECH.MBA	TCS	Mumbai	A. Shukla	Kanpur	9935590475
165	Priyanka	Upmanyu	Aadi	15.10.82	5'4"	B.COM.MBA	Working	Noida	J.N.Bajpai	Kanpur	8978480521
166	Priyanka			29.08.84	5'4"	B.SC,MBA			Shri.Pandey		9838959360
167	Priyanka	Kashyap		05.11.81	5'8"	BDS	Working	Kanpur	Rajesh Tiwari	Kanpur	9839163346
168	Priyanka	Upmanyu	Antya	22.03.88	5'4"	MCA	S.W ENGG.	Noida	M Agnihotri	Kanpur	8052408397
169	Priyanka	Vats	Antya	02.01.89	5'5"	BE, MBA	MNC	Mumbai	Ravi Tiwari	Raipur	9425207900
170	Priyanka	Bharadwaj	Madhy	20.11.85	5'8"	MA CSJMU	Teacher	Unnao	Manju Trivedi	Unnao	9807314054
171	Priyuttama	Katyan	Madhy	12.05.88	5'4"	MA.B.ED.PHD.			K Mishra	Lakhimpur	9452040268
172	Pushpanjali	Bharadwaj	Aadi	12.05.92	5'2"	B.Tech, BTC	BTC Training	jhansi	Rajesh Tiwari	Jhansi	9451131195
173	Pushpika	Katyan	Aadi	20.09.90	5'1"	MCA	Wipro	Pune	R P Mishra	Kanpur	7703091096
174	Raashi	Shandilya	Madhy	10.09.77	5'3"	M.SC.(Mass Comm)	Asstt Prof.	Lucknow	G.K.Mishra	Lucknow	9412554697
175	Rachana			15.01.81	5'	MBA	JP CEMENT	Noida	R.S.Mishra	Kanpur	9935349163
176	Rachana	Upmanyu	Madhy	05.01.88	5'2"	MBA	Bank	Lucknow	S.R.Dwivedi	Lucknow	9455905601
177	Ragini	Bhardwaj	Antya	10.02.88	5'4"	BHMS	P.G.	Pune	Girish Shukla	Kanpur	9839105203
178	Ragini	Bharadwaj	Antya	02.10.88	5'4"	BHMS	Private	Pune	G Shukla	Kanpur	8960362415
179	Rajni	Upmanyu	Antya	14.07.92	5"	Mtech	Not working	No	Mrs D Pathak	Farrukhabad	9999667148
180	Rajni	Upmanyu		15.07.92	5'	M Tech	Pursuing	Delhi	A Pathak	Delhi	9811131680
181	Rakhi	Shandilya		02.08.90	5'3"	MA			R.C Dixit	Gwalior	7359716154
182	Rashmi	Vats	Madhy	12.08.87	5'1"	CS, LLB	Practice	Noida	Rajesh Tiwari	Delhi	9910507601
183	Rashmi	Bhardwaj		23.11.92	5'3"	BE	Teacher	Raipur	Alok Pandey	Raipur	9302999000
184	Rashmi	Upmanyu	Antya	12.06.90	5'4"	B.COM, MBA	MNC	Lucknow	R.K.Awashti	Lucknow	9457203523
185	Rashmi	Upmanyu	Madhya	25.09.76	5'2	BSC, PGDCA	nil	nil	T R Pathak	Jabalpur	9754346532
186	Rashmi	Sankrit		30.07.86	5'4"	B Sc MBA	MNC	Noida	Mrs Mishra	Kanpur	7752946783
187	Ratna	Bharadwaj	Madhy	15.01.86	5'6"	MBA	HDFC Bank	Bangalore	R.K Dixit	Durg	7987456198
188	Ratna	Kashyap	Aadi	06.08.87	5.5'	BSC (BIO)	-	-	R K Mishra	Lucknow	9450672302
189	Reema	Upmanyu		30.11.94	5'3"	B.Com	Pursuing MBA		Pushplata Awasthi	Hyderabad	7093757018
190	Reena			01.07.83	5'6"	MA NTT	Teaching	Jhansi	R Bajpai		7275586913
191	Rekha	Upmanyu	Antya	21.06.89	5'4"	MA, PGDCA		Sagar	Jagdish Dubey	Sagar	9340769411
192	Renu	Bhardwaj	Aadi	10.08.81	5'6"	B.A.NTT	Teacher	Jhansi	Aruna Shukla	Jhansi	9450978618
193	Renu	Sankrit	Aadi	05.02.87	5'3"	MA	Working	Delhi	M K Mishra	Delhi	9971356179
194	Richa	Katyan	Antya	24.07.90	5'2"	B.SC	BSNL	Lucknow	M.B Mishra	Lucknow	8957039739
195	Richa	Shandilya	Madhy	30.09.91	5'3"	B.COM,MBA			K.S Mishra	Lucknow	9415469103

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
196	Richa	Upmanyu	Aadi	24.07.82	5'1"	M.A.SOCIO.	Teacher	Lucknow	G.P.Dwivedi	Lucknow	9453691616
197	Richa			17.08.81	5'2"	M.A.	Working		K.K.Agnihotri	Delhi	9716536294
198	Richa	Katyan		15.03.84	5'4"	M.TECH.MBA	ASST.PROF.	Kanpur	Sunil Mishra	Kanpur	9453045754
199	Richa	Bhardwaj	Madhy	20.12.84	5'2"	B Sc, B Ed, TET			Mrs Shukla	Hardoi	9026399895
200	Richa	Bhardwaj		20.03.90	5'2"	M.Com	CS	Kolkata	B.K. Shukla	Kolkata	9433725630
201	Richa	Upmanyu	Madhy	06.04.85	5'7"	B.Com, M.Com, MBA			R.L Dwivedi	Lucknow	9919127170
202	Richa	Kashyap	Madhya	03.07.85	5'3"	M.Sc (BHU)	HSBC	Sydney	S K Tripathi	Unnao	8299676613
203	Rita	Swarna		27.12.86	5'2"	BA(DU)	Working	Delhi	Mr Mishra	Delhi	8527525001
204	Ritika	Bhardwaj		14.01.91	5'5"	B Tech	Soft. Engg.	Noida	V K Chaturvedi	Kanpur	6392091687
205	Rohini	Bhardwaj	Antya	10.02.89	5'	B Com	Working	Lucknow	S K Pandey	Kanpur	9452296683
206	Rtambhara	Bhardwaj	Aadi	28.03.90	5'3"	MBBS	MD	Kanpur	D.S.Shhukla	Kanpur	9358352758
207	Rubi	Upamanyu	Madhy	04.09.89	5'2"	MA	Teacher	Unnao	S.K. Dwivedi	Unnao	9451875789
208	Ruby	Shandilya	Antya	20.03.84	5'5"	B.TECH.	Working	Noida	R.C.Dixit	Kanpur	9369019377
209	Ruhi	Upmanyu	Aadi	01.07.92	5'4"	M.TECH			Rajiv Dubey	Gwalior	7999578530
210	Saakshi	Sandilya		15.02.90	5'5"	B. ED	MNC		R Sharma	Bilaspur	9644229911
211	Sachi	Bhardwaj	Antya	12.02.91	5'4"	B.Com, CA	CA Final Yr.	Lucknow	Naveen Shukla	Bareilly	9415966739
212	Sakshi	Shandilya	Madhy	27.03.89	5'2"	MCA	GOVT.Working	Lucknow	S.N.Dixit	Lucknow	8765677207
213	Sakshi	Bhardwaj	Madhy	19.07.90	5'3"	CA	Service	Lucknow	S K Pandey	Lucknow	9415130527
214	Samvedana	Upmanyu	Aadi	17.03.87	5'8"	B.Tech, MBA	Working	Chicago	R.N Agnihotri	Jaipur	7355619597
215	Sarika		Antya	03.08.82	5'4"	MBBS DGO DNB	DOCTOR		V.B.Pandey	Manpuri	9411936187
216	Saroj	Upmanyu	Madhy	20.10.89	5'9"	MA	Reacher	Ghatkopar	Indira Trivedi	Raebareilly	9167644809
217	Sashi	Katyayan	Madhya	30.12.84	5'3"	B.Sc PGDCA,	Hospital	Nasik	A Mishra	Sitapur	7972186431
218	Saumya	Upmanyu	Antya	09.12.92	5'4"	B. Tech	Asst. Manage	NCR	Vivek Bajpai	Lucknow	9415011433
219	Saumya	Bharadwaj	Aadi	22.05.87	5'3"	MBA	Govt. Bank(PO)	Lucknow	M Shukla	Lucknow	9161099365
220	Saumya	Katyan	Aadi	07.01.91	5'4"	BSC			K.K Mishra	Lucknow	7905134117
221	Savita	Upmanyu	Antya	22.08.86	5'	BSC, ADCA	Teacher	Telibagh	Pankaj Dwivedi	Lucknow	9455871884
222	Seema	Upmanyu	Madhy	30.08.91	5'7"	MA (Hindi)	Working	Lucknow	V K Bajpai	Sitapur	9453632175
223	Seema	Upmanyu	Antya	21.10.83	5'3"	B. ED	Private teacher	Lucknow	Ashok awasthi	Lucknow	8318401171
224	Shailesh	Katyan	Madhy	27.09.80	5'1"	M.SC.PHD.	Asstt Prof.		S.S.Mishra	Kanpur	9450120999
225	Shailja	Upmanyu		29.03.86	5'2"	MA, Bed			R.P. Dubey	Kanpur	9415134056
226	Shalini	Katyan		18.04.85	5'3"	M.A.ENG.			U.C.Mishra	Kannauj	9838336002
227	Shalini	Shandilya		01.09.82	5'4"	PHD.(HISTORY)	Working	Lucknow	Mishra	Lucknow	9415562096
228	Shalini	Upmanyu	Antya	28.02.91	5'4"	MA, Bed	Teacher		S.K Dwivedi	Etawah	9411637376
229	Shatakshi	Shantanu	Aadi	08.05.85	5'4"	MBA	MNC	Gurugram	S.Tiwari	Lucknow	9897672982
230	Shikha	SHRAVAN	Aadi	09.02.93	5'5"	M.SC(IT)	MNC	Ahemdabad	K.C. Pandey	Ahemdabad	9825069461
231	Shikha	Bharadwaj	Madhya	05.02.92	5'8"	Bcom MBA	Working	Pune	R Tiwari	Amravati	9766219316
232	Shipra	Upmanyu		27.07.88	5'5"	BPT	Fortis Hospital	New Delhi	H Awasthi	Kanpur	8896151617
233	Shipra	Bhardwaj		10.06.88	5'5"	B.COM.(DU)	CPA	USA	J.S.Shukla	Lucknow	9838896043
234	Shivangi	Katyayan	Antya	26.01.90	5'2"	B.A. , M.A	Studying	NO	B Mishra	Farukhbad	9452261234
235	Shivani	Bharadwaj		14.12.90	5'2"	B.TECH			S.K Pandey	Lucknow	8687858087
236	Shivani	Bharadwaj	Madhya	26.09.91	5'4"	MBA	Sr HR Executive	Gurgaon	R N Pandey	Lucknow	9452841545
237	Shiwani	Vtsa	Madhya	03.06.89	5'3"	MBA	Manager	Barabanki	K Mishra	Lucknow	9415083311
238	Shraddha	Upmanyu	Aadi	13.05.86	5'5"	B.TECH	MNC	Coimbatore	S Trivedi	Telangana	8121717563
239	Shreyasi	Shandilya	Madhy	26.10.94	5'6"	B.Tech	Engineer	Mumbai	R.K. Dixit	Kanpur	7376692193
240	Shrushti			08.10.85		BA MBA	Asst. Professor	Kanpur	V Bajpai	Kanpur	8187923891
241	Shruti	Shandilya	Madhy	15.09.90	5'3"	MSC, B.ED	Govt. Job	Varanasi	Y.D Mishra	Gwalior	9826297917
242	Shruti	Upmanyu	Aadi	10.06.88	5'7"	B.SC.MBA	Working	Hyderabad	S.K.Trivedi	Hyderabad	8121717563
243	Shruti	Katyan		09.12.78	5'3"	B.COM,CA.	Working	Mumbai	A.K.Mishra	Lucknow	9336506078
244	Shruti	Upmanyu	Aadi	30.06.90	5'4"	B.TECH, M.TECH	Asst. Professor	Delhi	Mukul Awasthi	Delhi	9810323466
245	Shubhee	Kashyap		23.06.86	5'3"	DIP. ELEC.COM.	Working	Delhi	D.K.Dubey	Delhi	9582628003

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

Sr. No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV□LOCN.	PARENT□NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
246	Shubhra	Shandilya	-	04.09.89	5.1'	M.SC ,	B E Pursuing	Kanpur	K K Dixit	Raibareli	9336233987
247	Shveksha	Sankrit		25.01.86	5'4"	BTC	Teacher	Etawa	D.K.Dixit	Etawah	9410487189
248	Shweta	Upmanyu	Antya	30.11.86	5'3"	B.SC.	Web Designer		B.N.Bajpai	Kanpur	9450325085
249	Shweta	Upmanyu	Antya	25.08.84	5'	B H M S	Doctor	Kanpur	A K Awasthi	Kanpur	9532098695
250	Shweta	Bharadwaj		03.04.89	5'3"	MBA	Working	Etah	S Pandey	Mainpuri	7520323248
251	Shweta	Kashyap		12.05.87	5'5"	MS(USA)	Biz Analyst	USA	S Tiwari	Hyderabad	9293765791
252	Shweta	Vashisht		06.04.88	5'3"	B.COM, MBA	Teacher	Kanpur	O.K. Sharma	Kanpur	9889736208
253	Shweta	Katyan	Madhy	28.12.83	5'6"	B Sc	DO, LIC	Kanpur	A K Mishra	Kanpur	9838792102
254	Shweta	Bharadwaj	Madhya	09.05.86	5'1"	B Sc, B Ed			Geeta Dixit	Gwalior	9406581038
255	Smriti	Upmanyu	Antya	30.06.91	5'4"	MBBS	Working	Lucknow	B.D Bajpai	Lucknow	9532276081
256	Sonal	Gautam		10.12.81	5'5"	M.A.MBA.			B.D.Malwiy	Kanpur	9451845631
257	Sonal	Upmanyu		04.05.90	5'3"	B Tech	Accenture	Bangalore	R K Bajpai	Kanpur	9415477656
258	Sonal	Upmanyu	Madhya	04.04.90	5'2"	B Tech			Usha Dubey	Lucknow	9936573750
259	Sonali	Bhardwaj	Aadi	14.02.86	5'5"	B.TECH.	S.W ENGG.	Hyderabad	A.N.Pandey	Kanpur	9415483587
260	Soumya	Katyan		24.06.90	5'3"	M C A	Working	Pune	G D Mishra	Kanpur	9452496423
261	Soumya	Katyan		24.07.90	5'2"	M A			R K Mishra	Lucknow	7905134117
262	Srishti	Upmanyu	Madhya	11.04.92	5'6"	B. Arch	Manager	Mumbai	Vijay Bajpai	Nagpur	9422140541
263	Stuti	Kashyap	Antya	19.11.89	5'	B.Tech	Bank of India	Lucknow	Amal Dixit	Lucknow	7052969469
264	Stuti	Garg	Madhya	15.06.91	5'4"	MBA	Oyo	Gurgaon	A K Chaturvedi	Kanpur	9415478711
265	Subhra	Sanskrit	Aadi	13.07.86	5'2"	B E , MBA	MNC	Pithampur	P Dubey	Manawar	9981452228
266	Suchi	Katyan	Aadi	16.06.92	5'5"	B.TECH	PSU	Gurugram	R.S Mishra	Lucknow	9415752075
267	Suchi	Bhardwaj	Aadi	24.02.82	5'3"	M SC, B ED	GOVT Teacher	Unnao	R N Trivedi	Unnao	9452347648
268	Suchita	Bhardwaj		02.05.91	5'5"	B Tech MBA	MNC	Bangalore	S C Shukla	Kanpur	9868590585
269	Sudha	Sankrat	Madhya	02.01.88	5.3"	MSc , Bed	Teacher	Lucknow	S C Dwivedi	Lucknow	8127797926
270	Suman	Kashyap	Aadi	03.05.91	5'6"	M.COM, BED			Akhilesh Tiwari	Kolkata	6294217393
271	Sunaina	Upmanyu	Aadi	22.11.93	5'1"	M. Sc	Pursuing BEd		A.K Agnihotri	Shahjahanpur	9458323288
272	Surbhi	Kaushik	Madhy	31.07.89	5'2"	Bpharma, MBA	Pharma	Amravati	S Kauskiya	Amravati	8411837994
273	Surbhi	Kashyap	Aadi	29.08.90	5'4"	BDS, MPH	Associate	Puducherry	Sudha Dixit	Ujjain	9826816266
274	Surbhi	Upmanyu	Aadi		5'3"	BA MBA	Manager	Noida	Suresh Pathak	Delhi	9311109777
275	Swapna	Shandilya	Madhy	02.12.89	5'2"	MBA			P.D.Dixit	Indore	9425152103
276	Swarnim	Upmanyu	Madhya	27.07.92	5'6"	B.B.A, MBA	Working	All over India	P Bajpai	KANPUR	9889613890
277	Swati	Bhardwaj		20.06.89	5'6"	MA.M.PHIL	Studying		A.C.Shukla	Kanpur	9415428625
278	Swati	Shandilya	Antya	1.1.86	5'4"	B.SC.MBA	MNC	Bengaluru	B.L.Mishra	Bhopal	9826277688
279	Swati	Kashyap	Aadi	2.1.84	5'2"	B.TECH.MBA.	HUL	Mumbai	S. Sharma	Ahemdabad	9429021380
280	Sweta	Kashyap	-	14.10.83	5'6"	M.SC	Labour Officer	Kanpur	S J Tripathi	Kanpur	9936857835
281	Sweta	Bhardwaj		03.04.89	5'3"	MBA	Working	Etawa	S Pandey	Mainpuri	7520323248
282	Tanushree	Upmanyu	Manglik	22.04.89	5'4"	MA, B.ED	Teacher	Lucknow	U.S Pathak	Lucknow	7379163000
283	Twinkal	Sankrat	Aadi	26.08.93	5'3"	M. E.	Professor	Pune	D Trivedi	Shrirampur	9422222955
284	Urvashi	Upmanyu	Antya	05.10.91	5'4"	M.Com	Govt Serv		D k Dubey	Gwalior	9826258558
285	Utkarsha	Upmanyu	Aadi	22.07.91	5'4"	MSC			B K Dwivedi	Kanpur	9450455278
286	Vaibhavi	Shandilya	Manglik	30.12.90	5'4"	BBA, PGDM			Arun Mishra	Delhi	9873329133
287	Vandana		Aadi	03.11.83	5'3"	MA, Bed	Principal	Ghaziabad	D Mishra	Delhi	9268332289
288	Vartika	Upmanyu	Antya	13.02.90	5'2"	BCA, MBA	Working	Lucknow	S Dubey	Lucknow	9335907020
289	Vidya	Katyan	Antya	04.01.85	5'2"	M.A.B.ED.TET			K.K.Mishra	Kanpur	9792180122
290	Yamini	Upmanyu	Madhya	04.04.85	5'3"	MBA	Company	Pune	Savita bajpai	Lucknow	9369167318
291	Yamini	Bhardwaj	-	01.11.95	5'	MBA	HR Mgr	Kanpur	S K Pandey	Kanpur	9451283887
292	Yashashvi	Kashyap	Divorcee	13.05.81	5'10"	BBA,MBA	MNC	Mumbai	P Shukla	Allahabad	9545599345

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

ब्राह्मण समाज ऑफ नार्थ अमेरिका 24वां वार्षिकोत्सव (26-28 जुलाई 2019)

Venue: Holiday Inn, Ontario California

Contact Information:
Mr. Gopal Chaturvedi, President of BSNA, 1- 951-217-8170, chatur909@aol.com
Dr. Sukrit Mukherjee, Convention Director 1-714-504-3493, Sukrit_mukherjee@yahoo.com
Dr. Sanjay Pandey, Convention Director° 1-760-583-3284,rsvpandey@gmail.com
Dr. Ajay Pandey, General Secretary 1-248-509-4508, ajaykp@yahoo.com
Dr. Lakshmi Shanker Dube, (Canada), 1-514-683-1720, ube_ls@yahoo.com
Mrs. Neeru Birly, Assistant Treasurer, 1-408-259-3749, neeru_birly@yahoo.com
Mr. Satish Dubey, 1-832-816-6388, dubeysatish@hotmail.com
Mr. Abhay Shanker Dube,Youth Committee, abhay.dube@gmail.comMr. R.D. Dixit, Delhi, India; 91-1122547423; rddixit@rediffmail.com
Pt. Mange Ram Sharma, Delhi, India; 91-1242391111; m_r_sharma@hotmail.com
Mr. Subhash Tiwary, Delhi, India; 91-4803195402; subhash_tiwary@hotmail.com
Mr. Uttam Tiwari, Delhi; 91-9910092441; uttamprakashtiwari@yahoo.com
Mr. Shubhesh Sherman, Delhi, India; 91-9811112469; ss_sharman@yahoo.com
Mr. Govind Kulkarni, Mumbai, India; abbmgkulkarni@gmail.com
Mr Girja Misra, Trinidad, 1(868) 689-5895, miscomail@yahoo.com

---

पत्रिका हेतु सहयोग राशि 'संपादक-कान्यकुब्ज मंच' के पक्ष में बैंक ऑफ बड़ोदा की सीबीएस शाखा में IFSC:BARB0KIDKAN में जाकर हमारे खाता संख्या 19640100008067 में जमा कर इसकी सूचना पूरा नाम पता व पिन कोड सहित मोबाइल 09450332385 पर एसएमएस द्वारा या पत्रिका के ईमेल पर दें।

संरक्षक: ₹11000 ● विशिष्ट: ₹5100 ● आजीवन: ₹2100
$200 $100 $40

पत्रिका प्राप्ति स्थान

कानपुर – गुप्ता मैगजीन सेंटर, एलआईसी बिल्डिंग के सामने, फूल बाग चौराहा, कानपुर। मो.-8896229786
- पाण्डेय बुक सेलर, के-ब्लॉक, निकट आरबीआई कॉलोनी, किदवई नगर, कानपुर। मो-9336121757
- कृष्णा फार्म सेंटर, निकट साकेत गेस्ट हाउस, विकास नगर, कानपुर। मो.-9336029994

लखनऊ – शुक्ल मैगजीन सेंटर, हनुमान के निकट, हजरतगंज, लखनऊ। मो.-9473897006
- 1/206, विकास नगर, लखनऊ। मो.-9554096508
- 3/19 सेक्टर-जे, जानकी पुरम, लखनऊ। मो.-9450362385

नोएडा - शुक्ला मैगजीन सैंटर, ब्रह्मपुत्र कॉम्प्लेक्स, सेक्टर 29, नोएडा। मो.-9210135448

दिल्ली – तिवारी ब्रादर्स, 73, एमएम मार्केट, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन-011 23413313-23411764

भोपाल - श्री के.एन. मिश्र, 58, सागर स्टेट कॉलोनी, अयोध्या नगर, भोपाल-462041, मो.-7224882166

इंदौर – श्री दुर्गानारायण तिवारी, 33, बिजासन रोड़, इंदौर-452005, मो.-9827791616

फरीदाबाद - 264, सेक्टर-3, फरीदाबाद 121004, मो. 8800377066

कान्यकुब्ज मंच के आगामी अंक में विवाह योग्य युवक-युवतियों का वैवाहिक विवरण प्रकाशित करने हेतु इंटरनेट ब्राउजर में http//goo.gl/farms/fcoZfkPcU9 टाइप कर रजिस्टर करें।

आयुर्वेद के ज्ञान और सदियों के अनुभवों का निचोड़ उपकरन की शीघ्र गुणकारी औषधियाँ

An
ISO 9001-2000
Company

महिलाओं का स्वास्थ्य रक्षक

मेन्सो फोर्ट

सीरप
मासिक धर्म की हर मुश्किल मिटाये
महिलाओं को स्वस्थ व सबल बनाये

डर्मिना

सीरप/टेबलेट
उत्तम रक्त शोधक, कील, मुहाँसे
दाग-धब्बे, झांई आदि त्वचा रोगों को दूर करें
चेहरे को सुन्दर एवं कांतिवान बनाये

सम्पूर्ण परिवार के स्वास्थ्य का राज

द्राक्षाटोन

सीरप
पाचन शक्ति एवं याददाश्त बढाये।
खून की कमी, शारीरिक एवं
मानसिक थकान से राहत दिलाये।

बातीना

सीरप/टेबलेट/लिनिमेण्ट
सभी प्रकार के जोड़ों व मांसपेशियों
के दर्द के लिये हानिरहित श्रेष्ठ औषधि।

कफहारी

सीरप/टेबलेट
गुणकारी उत्तम जड़ीबूटियों से निर्मित
खांसी और श्वास रोगों में अत्यंत लाभकारी

रोग भगायें, स्वस्थ बनायें : उपकरन की आयुर्वेदिक दवायें

उत्कृष्ट आयुर्वेदिक पेटेन्ट औषधियों के निर्माता :
Upkaran
फार्मास्यूटिकल्स

25, महाराणा प्रताप नगर, जोन-II,
पहली मंजिल, भोपाल-462 011
फोन : 0755-2553501, 2555758
फेक्स : 0755-2555758

अप्रैल-जून 2019

RNI: 46226/87

‘ मेरे दादा जी मेरे सबसे अच्छे दोस्त ’

अब डॉयबिटीज की फिक्र नही.

मधुशून्य

चूर्ण, रस व टेबलेट

आयुर्वेदिक औषधि

मेघदूत मधुशून्य एक रिसर्च आधारित आयुर्वेदिक औषधि है जिसे आयुर्वेद चिकित्सकों की तकनीकी टीम ने कई वर्षों के अनुसंधान के बाद सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है। मेघदूत मधुशून्य तुरंत रक्त शर्करा के स्तर को कम नहीं करता है बल्कि इसको निरंतर उपयोग में लेन से यह मधुमेह से सम्बंधित सभी समस्यों को स्थायी रूप से दूर करने में मदद करता है।

मेघदूत मधुशून्य विभिन्न गुणकारी औषधियों का एक मिश्रण है जो मधुमेह के लक्षणों से स्वाभाविक रूप से सामना करने के लिए आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में बहुत प्रभावी हैं। ये औषधियां न केवल रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करती हैं, बल्कि समग्र स्वास्थ्य को फिर से जीवंत करने, सहनशक्ति लाने और थकान को दूर करने में मदद करती हैं।

मेघदूत मधुशून्य में करेला, विजयसार, गुड़मार, जामुन, शिलाजीत जैसी जड़ी–बूटियाँ शामिल हैं जिनका आयुर्वेद में लंबे समय से मधुमेह और इससे जुड़े लक्षणों के लिए उपयोग किया जाता है।

आयुर्वेद में त्रिदोष (वात, पित्त और कफ) का संतुलन शरीर में रोग मुक्त अवस्था है जबकि उनके असंतुलन से रोग होता है। आयुर्वेद में वात और कफ के असंतुलन को मधुमेह का मूल कारण माना जाता है। मधुशून्य टैबलेट में समाहित औषधियां वात और कफ दोनों को नियंत्रित करती है और इस प्रकार शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने के उत्तम औषधि है।

– सभी प्रमुख मेडिकल स्टोर्स में उपलब्ध

Company Retail Shop : A1/18, Sector-H, Puraniya Chauraha, Aliganj, Lucknow
www.meghdootherbal.com | Call Us : +91-9235623142, 7617003671